शिशु शिक्षा संदर्शिका
[आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए]
प न
र क
य च
शिशु शिक्षा प्रकोष्ठ
म. प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,
मध्यप्रदेश, भोपाल
विद्या ददाति विनयम्

मार्गदर्शन

श्री एच.जी. ओभराय, आई.ए.एस.
संचालक,
म.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
भोपाल

❑ ❑ ❑

समन्वयक

प्रो. (श्रीमती) कै. बहल
शिशु शिक्षा प्रकोष्ठ
म. प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
भोपाल

❑ ❑ ❑

भाषा सम्पादन

श्री आर.जी. जोशी

❑ ❑ ❑
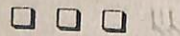
चित्रांकन

श्री आर.के. राय
श्री के. रवीन्द्र

❑ ❑ ❑

शिशु शिक्षा संदर्शिका

(आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए)

शिशु शिक्षा प्रकोष्ठ

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

मध्यप्रदेश भोपाल-10

विषय सूची

आमुख

प्रिय आंगनवाड़ी कार्यकर्ता

गत वर्ष से परिषद भी आपके विशाल परिवार में सम्मिलित हो गई है। 3-6 आयु समूह के शिशुओं में शैक्षणिक संस्कार विकसित करने के जो मनोरंजक तरीके मण्डला प्रयोग में खोजे गए थे वे परिषद् द्वारा आप तक पहुँचाए जा रहे हैं! प्रत्येक जिले में जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान है, जिसकी शिशु शिक्षा टीम प्रतिमाह आपको शिशुओं के विकास के लिये रोचक कविता, गीत व बाल खेलों में प्रशिक्षित कर रही है।

अतः आशा है कि आप अवश्य प्रशिक्षण का पूरा लाभ उठा रही होंगी, क्योंकि आपको अपनी आंगनवाड़ी के 3-6 आयु के शिशुओं की बहुत चिंता है और आप चाहती हैं कि आंगनवाड़ी कार्यक्रम पूर्ण कर जब कोई बालक या बालिका आप के निकट के स्कूल की पहली कक्षा में प्रवेश ले तो अच्छी आदतों व शैक्षणिक संस्कारों के लिए स्कूल व समुदाय दोनों का प्रिय बन जाए। आंगनवाड़ी आपके नाम से जानी जाए और पालक आपका नाम लेकर कहें "हम ..... दीदी की आंगनवाड़ी में अपनी बच्ची को भेजते हैं।"

आप के आंगनवाड़ी दायित्वों को समुचित निर्वाह के लिए आपके साथ निरंतर रहने वाली एक सहेली जैसी शिशु शिक्षा संदर्शिका, आपके लिए विकसित की गई है, जो आपके हाथ में है, इसका पूरा उपयोग करें। उपयोग के दौरान इस सहेली के बारे में यदि कोई राय या सुझाव देना हो तो ईसीई टीम को अवश्य दें। आप के सुझाव परिषद् तक अविलम्ब पहुंच जाएँगे।

आंगनवाड़ी कार्यक्रमों को रोचक, आकर्षक व विविधता पूर्ण बनाने के लिए परिषद् आपको शीघ्र ही अन्य रंग-बिरंगी शिक्षण-सामग्री भेंट करने जा रही है। उसका भरपूर उपयोग करें।

एच.जी. ओभराय
संचालक
म.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
भोपाल

शिशु शिक्षा प्रायोजना- एक सार्थक शिक्षा कर्म

दूर-दराज के क्षेत्रों में रहने वाले अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन जाति तथा पिछड़े वर्ग के बच्चों को प्राथमिक शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए यह आवश्यक है कि उनमें शैक्षणिक संस्कार विकसित किए जाएँ। इस हेतु विगत कुछ वर्षों से 3-6 आयु समूह के लिए शिशु शिक्षा व विकास पर बहुत ध्यान दिया जा रहा है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली के मार्गदर्शन तथा यूनिसेफ की सहायता से प्रदेश के मण्डला जिले के दो विकास खण्डों- विछिया व मण्डला में परिषद् द्वारा सन् 1985 में शिशु शिक्षा प्रायोजना एक प्रयोग के रूप में संचालित की गई थी। इसके अंतर्गत उक्त दोनों विकास खण्डों के 56 गांवों में 65 शिशु शिक्षा केन्द्र 65 प्राथमिक स्कूलों से संलग्न कर खोले गए। इस प्रयोग के निष्कर्ष बड़े उत्साहवर्द्धक रहे। 3-6 आयु समूह के शिशुओं के समुचित विकास हेतु शिशु शिक्षा अवधारणा व पद्धति विकसित हुई, जिसका उपयोग करने से शिशुओं में शैक्षणिक संस्कार विकसित हुए। लगभग 10,228 शिशुओं ने केन्द्रों में प्रवेश लिया और नियमित रुप से केन्द्रों में आकर रूचिपूर्वक मनोरंजनात्मक शैक्षणिक खेल क्रियाओं में भाग लिया। किसी भी शिशु ने केन्द्र नहीं छोड़ा। इनमें 49.8% बालिकाएं थीं। शिशु शिक्षा पूर्ण कर सब बच्चों ने पहली कक्षा में प्रवेश लिया और अपनी पढ़ाई जारी रखी। चयनित गांवों के 5,259 परिवारों के शिशु पहली बार शिक्षा से जुड़े।

अतः राज्य शासन की सहमति से महिला बाल विकास विभाग के सचिव व आयुक्त के निर्देशानुसार परिषद को आई सी डी एस में शिशु शिक्षा अवधारणा व पद्धति हस्तांतरित करने का दायित्व सौंपा गया है। तदनुसार परिषद में शिशु शिक्षा विभाग द्वारा उनके लिए अनेक प्रकार के कार्यक्रम जैसे- प्रशिक्षण, उन्मुखीकरण, सेमीनार, कार्यगोष्ठियां व बैठक आदि आयोजित किए जाते हैं। आई सी डी एस के लिए विविध स्तर की शिक्षण सामग्री का निर्माण किया जाता है। विभाग ने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, शिशुओं व पर्यवेक्षिकाओं के लिए संदर्शिका, क्रियाकलाप फोल्डर व सचित्र बाल कथा पुस्तकें तैयार की हैं।

आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए शिशु शिक्षा संदर्शिका विकसित की गई है जिसके अनुसार आंगनवाड़ी केन्द्र को रूचिकर व आनन्ददायी बनाया जा सकता है। उद्देश्य यही है कि आंगनवाड़ी कार्यक्रम गतिविधि मूलक व मनोरंजनपूर्ण बनें। शिशु स्वेच्छा से और प्रतिदिन नियमित रूप से आंगनवाड़ी आएं। खेल ही खेल में उनकी खूबियां और क्षमताएं प्रकाशित हो और उनमें शिक्षा प्राप्त करने की ललक पैदा हो।

संदर्शिका के निर्माण में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, पर्यवेक्षिकाओं, परियोजना अधिकारियों व प्रशासकों का महत्वपूर्ण सहयोग रहा है। परिषद इनके प्रति विशेष आभारी है।

ई.सी.ई./सी.एम.एल. (डिप्सी) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली के निरन्तर शैक्षणिक मार्गदर्शन से पुस्तक के स्वरूप को विकसित होने में सहायता मिली। परिषद उनके तें आभारी है।

यूनिसेफ भोपाल के वित्तीय सहयोग के कारण शिशु शिक्षा कार्यक्रमों के आयोज व क्रियान्वयन में कभी भी कोई रूकावट नहीं आई। इसके लिए यूनिसेफ अधिकारियों, विशेष रु से श्रीमती राजेश्वरी चंद्रशेखर के प्रति हमारा ई.सी.ई. परिवार आभारी है।

प्रो. (श्रीमती) कै. बहल
विभागाध्यक्ष
शिशु शिक्षा विभाग
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद् भोपाल

शारीरिक विकास

शिशु के शारीरिक विकास को दो प्रकार से देखा जा सकता है –

(1) शरीर का वजन लेकर

(2) शरीर की ऊंचाई नाप कर

शिशु के शरीर के सभी अंग एक साथ ठीक ढंग से काम करें। इसलिए शरीर की बड़ी और छोटी मांसपेशियों का समन्वय जरूरी है। मांस-पेशियों के समन्वय का मतलब है, मांस-पेशियों तथा अंगों के संचालन पर शिशु का नियंत्रण।

बड़ी मांस-पेशियों के संचालन में नियंत्रण पाने के लिए कुछ क्रियाएं हैं- जैसे चलना, दौड़ना, कूदना, रेंगना, सरकना, लुढ़कना, उछलना, उतरना व चढ़ना, फेंकना, झूलना, संतुलन करना, ताल पर अंगों को हिलाना, ठोकर मारना आदि।

छोटी मांस-पेशियों के संचालन में शिशु द्वारा नियंत्रण का अर्थ होता है कि वह अपनी अंगुलियों, हथेलियों तथा कोहनियों का ठीक प्रकार से संचालन कर लेता है। नीचे दी गई क्रियाओं द्वारा छोटी मांस-पेशियों का विकास होता है:–

(1) छोटे-बड़े छेदों में धागा पिरोना।

(2) कागज फाड़ना, काटना, चिपकाना आदि।

(3) छापे लगाना (छापना)।

(4) कागज मोड़ना।

(5) छांटना, नमूने बनाना, पानी, अनाज, रेत, कंकड़, मिट्टी आदि को डिब्बे, बाल्टी, बोतल, मग, गिलास में भरना व खाली करना।

(6) चुटकी बजाना, ताली बजाना।

बड़ी मांस-पेशियों का विकास

चलना

न्यूनतम अधिगम स्तर :–

3-4 आयु समूह-

(1) शिशु सरलता से सीधा चल सकता है।

(2) शिशु पीछे की ओर चल सकता है।

(3) शिशु सामने की ओर चल सकता है।

(4) धीमी व तेज गति से सामने की ओर चल सकता है।

4-5 आयु समूह :-

(1) शिशु आगे की ओर सीधी रेखा पर चल सकता है।

(2) शिशु पीछे की ओर सीधी रेखा पर चल सकता है।

(3) पंजे के बल पर चल सकता है।

5-6 आयु समूह :-

(1) तेज गति से चल सकता है।

(2) कदम से कदम मिलाकर चल सकता है।

(3) आड़ी तिरछी रेखाओं पर चल सकता है।

(4) संकेतों के अनुसार रेखा पर दाएं-बाएं चल सकता है।

(5) संगीत या बैंड की लय के साथ अंगों का सन्तुलन रखते हुए चल सकता है।

(6) पंजों के बल चल सकता है।

चित्र-1

क्रियाकलाप :-

3-4 आयु समूह :-

(1) दोनों हाथों का संतुलन रखते हुए एक फीट चौड़े पटियों पर चले।

(2) पेड़ का तना, ईंट, टायर व लकड़ी के चौड़े गुट्टे पर चले।

4-5 आयु समूह :-

(1) आधा फिट चौड़े पटिए, तने, व ईंटों पर बिना हाथ फैलाए चले।

(2) विभिन्न आकार के टायरों पर चले।

(3) फिसल पट्टी के समान पटिया रखकर उस पर ऊपर से नीचे की ओर चले तथा नीचे से ऊपर चढ़े।

(4) लुढ़कती गेंद को चलते हुए पकड़े।

(5) गेंद लुढ़काकर तेज गति से चलकर पकड़े।

(6) पशुओं की चाल की नकल करें।

5-6 आयु समूह :-

(1) रस्सी, रेखा आदि पर संतुलन रख कर चले।

(2) अधिक समय तक दाएँ अथवा बाएँ पैर पर खड़े होकर उछलते हुए चले।

(3) पटियों पर तेज गति से संतुलन रखकर चले।

(4) हल्की वस्तु को सिर पर रखकर चले।

(5) एक-दो किलो वजन उठाकर कुछ दूर तक चले।

चित्र-2

(6) ढोलक या ढपली की आवाज पर कदम मिलाकर चले।

(7) नृत्य की क्रियाओं द्वारा आगे और पीछे की ओर चले।

दौड़ना

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3-4 आयु समूह

(1) एक ही दिशा की ओर दौड़ सकता है।

(2) दौड़ते-दौड़ते यदि रुकने को कहा जाये तो रुक सकता है।

4-5 आयु समूह :-

(1) शरीर को संतुलित रखते हुए दौड़ सकता है।

(2) दौड़ते-दौड़ते यदि रुकने के निर्देश मिलें तो शरीर का संतुलन रखकर सरलता से रुक सकता है।

(3) घुड़ दौड़ का अभिनय (नकल) कर सकता है।

(4) टायर को घुमाते हुए बिना रुके दौड़ सकता है।

5-6 आयु समूह :-

(1) शिशु दौड़ने की अन्य क्रियाओं के साथ उचकना, कूदना व रस्सी कूदना कर सकता है।

(2) दौड़ के खेल-खेल सकता है।

(3) टायर पर पूरा नियंत्रण रखकर टायर के साथ तेज दौड़ सकता है।

(4) गेंद को ठोकर मारते हुए दौड़ सकता है।

(5) दौड़कर जमीन पर पड़ी चीज उठा सकता है।

चित्र-3

क्रियाकलाप :-

3-5 आयु समूह

1. लुढ़कती गेंद को दौड़कर पकड़ना।
2. वजन उठाकर दौड़ते हुए कुछ दूर ले जाना।
3. दौड़कर सीढ़ियां चढ़ना-उतरना।
4. तिरछे रखे हुए लकड़ी के पटिए पर दौड़कर चढ़ना।
5. बाधा दौड़- दो शिशुओं को आमने- सामने पैर फैलाकर पंजे से पंजा ज़ोड़कर बिठाना, पैरों का पुल बनाना व दूसरे शिशुओं को पैरों के पुल के ऊपर से कूदकर दौड़ने का अभ्यास कराना। पकड़ो-पकड़ो खेल खेलना।

5-6 आयु समूह :-

उपर्युक्त क्रियाकलापों के साथ निम्नलिखित प्रतियोगिताएँ आयोजित कराना :-

तेज दौड़, पंजे के बल दौड़ना, गेंद या फुटबाल को ठोकर मारते हुए दौड़ना, रस्सी कूदते हुए दौड़ना। कुर्सी दौड़, हाथ में या सिर पर टोकरी व छोटा गिलास रखकर धीरे-धीरे दौड़न। "कोड़ा लगाम शाही, पीछे देख मार खाई' का खेल खिलाना, शेर और मेमने का खेल खिलाना।

कूदना

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 4 आयु समूह :-

1. शिशु बिना हाथ फैलाए दो या ढाई फीट की ऊंचाई से कूद सकता है।
2. अपने स्थान से कुछ आगे की ओर कूद सकता है।

4 से 5 आयु समूह :-

1. शिशु 4 फीट की ऊंचाई से कूद सकता है।
2. सीधी रेखा पर दौड़ते हुए रस्सी कूद सकता है।
3. लम्बी कूद, कूद सकता है।
4. टायर, रस्सी, डिब्बा जैसी बाधाओं के ऊपर से कूद सकता है।

5 से 6 आयु समूह :-

1. शिशु 5 फीट की ऊंचाई से कूद सकता है।
2 लम्बी कूद 65 से 85 से.मी. तक की ऊंचाई तथा दूरी तक कूद सकता है।
3. दोनों पैर एक साथ मिलाकर जमीन पर कूद सकता है।
4. पेड़ की डाली पर झूलते हुए नीचे कूद सकता है।
5. बाधा कूद कर पार कर सकता है।
6. रस्सी कूद सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 4 आयु समूह :-

1. दो या ढाई फीट की ऊंचाई से कूदने का अभ्यास।
2. अपनी जगह से थोड़ा आगे कूदना।
3. स्टूल के ऊपर से कूदना।
4. गोला बनाकर "अंदर" कूद "बाहर" कूद का खेल खिलाना।
5. नदी-पहाड़ का खेल।
6. गोले में "खरगोश कूदों" का खेल खिलाना।

4 से 6 आयु समूह :-

1. उपर्युक्त समस्त क्रियाओं के अतिरिक्त मेढक-दौड़, बाधा दौड़ व लम्बी-कूद कराना।
2. 65 से 85 से.मी. की ऊंचाई तथा दूरी से कूदना
3. रस्सी कूदना।

रेंगना, खिसकना, लुढ़कना

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 4 आयु समूह :-

1. शिशु 2 फीट ऊंची जगह के नीचे से रेंगकर निकल सकता है।
2. पेट के बल रेंग सकता है।
3. बैठ कर खिसक सकता है।
4. जमीन पर लुढ़क सकता है।

4 से 5 आयु समूह :-

1. शिशु अधिक संकरी जगह में से रेंग सकता है।
2. टायर के बीच में से रेंग कर निकल सकता है।
3. बड़े पाइप के भीतर से रेंगकर निकल सकता है।
4. तेजी से खिसक सकता है।
5. जमीन पर लुढ़क सकता है।
6. ड्रम या गेंद की तरह लुढ़क सकता है।

5 से 6 आयु समूह :-

1. रेंगने, खिसकने और लुढ़कने के खेल-खेल सकता है।
2. रस्सी के नीचे से रेंग कर निकल सकता है।
3. कुर्सी या बेंच के नीचे से रेंगकर निकल सकता है।
4. लगभग 50 कदम की दूरी तक बैठकर खिसक सकता है।
5. सिर के बल लुढ़क सकता है।

क्रियाकलाप

3 से 4 आयु समूह :-

1. पाइप के बीच में से रेंगकर निकलना।
2. पशुओं की चाल की नकल करना।
3. गेंद की तरह लुढ़कना, करवट से लुढ़कना।

चित्र-4

4 से 5 आयु समूह :-

1. बाधा दौड़ (रेंगने की) आयोजित करना।
2. दो शिशु रस्सी पकड़े और तीसरा शिशु उसके नीचे से रेंगकर निकले।
3. खिसकने का खेल, गेंद व ड्रम की तरह लुढ़कने के खेल।

5 से 6 आयु समूह :-

1. लुढ़कते हुए रिले-रेस कराना।
2. हाथों को जोड़कर बनाए पुल के नीचे से रेंग कर निकलना।
3. दोनों हाथों को जोड़कर बनाई गई मेहराब के नीचे से खिसकना।
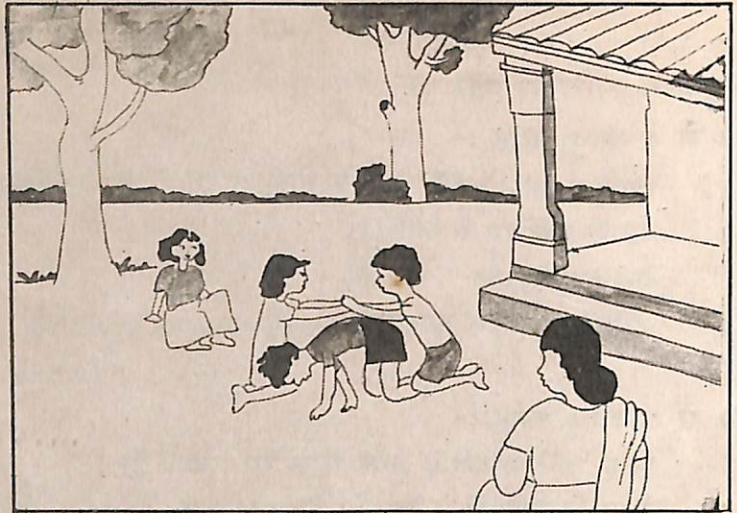
चित्र-5

झूलना

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 4 आयु समूह :-

1. बिना किसी की सहायता से झूला-झूल सकता है।
2. किसी की सहायता से खड़े होकर झूला-झूल सकता है।
3. पेड़ की डाली या पाइप पर लटक सकता है।

4 से 6 आयु समूह :-

1. बिना किसी की सहायता लिए झूले पर खड़े होकर झूल सकता है।
2. टहनी या पाइप को पकड़कर लटक कर झूल सकता है।
3. रस्सी में बंधे टायर में बैठकर झूल सकता है।

क्रियाकलाप

3 से 6 आयु समूह :-

1. झूला झुलना।
2. बैठ-कर या खड़े-होकर झूला झूलना।
3. रस्सी में टायर बांध कर झूला झूलना।
4. पेड़ पर रस्सी बांधकर उसकी गांठ को पकड़कर झूलना।
5. दो दीवारों के सहारे टंगी पाइप पकड़ कर झूलना।

चढ़ना और उतरना

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 4 आयु समूह :-

शिशु ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर चढ़ व उतर सकता है।

4 से 6 आयु समूह :-

1. दौड़कर सीढ़ी चढ़ व उतर सकता है।
2. पेड़ पर चढ़ व उतर सकता है।
3. पेड़ पर बंधी रस्सी की सीढ़ी पकड़कर चढ़ व उतर सकता है।
4. दीवार पर चढ़ सकता है और लटक कर उतर सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 4 आयु समूह :-

1. पत्थर या लकड़ी के छोटे पटियों पर चढ़ने उतरने का अभ्यास कराना।
2. लकड़ी के छोटे और बड़े चौकोर खोकों पर चढ़ने-उतरने का अभ्यास कराना।
3. सीढ़ी पर चढ़ने-उतरने का अभ्यास कराना।

4 से 6 आयु समूह :-

रस्सी की सीढ़ी बनाकर उसे पेड़ की डाल से बांधकर शिशुओं से चढ़ने-उतरने का अभ्यास कराना। तेजी से चढ़ना, उतरना, दौड़ते हुए चढ़ना-उतरना, पहाड़ी पर चढ़ना-उतरना।
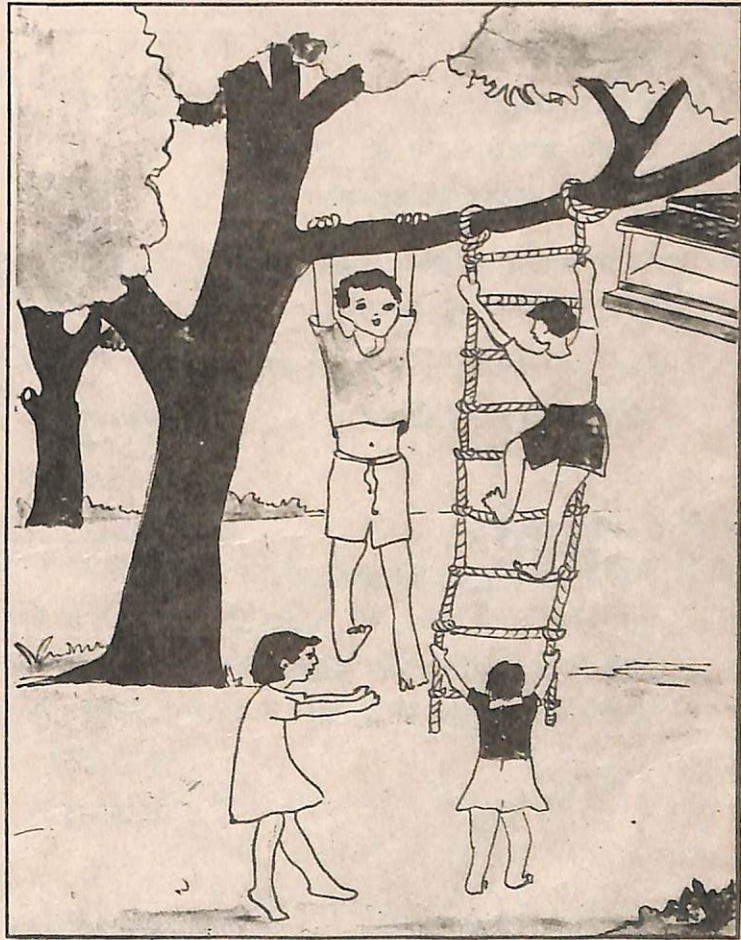
चित्र-6

तालबद्ध अंग संचालन

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 4 आयु समूह :-

1. ताल के साथ ताली बजा सकता है।
2. आवाज (ध्वनि) पैदा करने वाली वस्तुओं पर किसी वस्तु से चोट (प्रहार) करके आवाज उत्पन्न

कर सकता है।

3. ताल की गति के साथ धीरे-धीरे शरीर हिला सकता है।

4 से 5 आयु समूह :-

1. ताल की गति के साथ अंग संचालन कर सकता है।
2. कूदना, ताली बजाना, कदम मिलाना, गोल घूमना आदि क्रियाएं कर सकता है।
3. ताल के साथ थिरक (नाच) सकता है।

5 से 6 आयु समूह :-

1. संगीत के साथ नृत्य की सरल मुद्राएं (अंग संचालन) बारी-बारी से कर सकता है।
2. हाथ पैर का संचालन एक साथ कर सकता है। अन्य अंगों का संचालन कर सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 4 आयु समूह :-

1. ढपली, खंजरी आदि की आवाज पर ताली बजाने का अभ्यास।
2. अभिनय-गीत के अनुसार अभिनय करने का अभ्यास।
3. ऐसा अभिनय कराना जिसमें पूरे अंगों का संचालन हो सके।

चित्र-7

4 से 6 आयु समूह :-

1. लय के साथ नृत्य का अभ्यास।
2. नृत्य करते समय हाथ, पैर, गर्दन और उंगलियों के संचालन का अभ्यास।
3. काल्पनिक स्थितियों को नृत्य की मुद्राओं के द्वारा प्रकट करना जैसे- फूल चुनना, माला गूंथना, आरती उतारना, बाल्टी से जल निकालना, कमीज के बटन बंद करना, चूड़ियाँ पहनना आदि।

फेंकना

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 4 आयु समूह :-

1. किसी भी दिशा में गेंद या रिंग फेंक सकता है।

4 से 5 आयु समूह :-

1. शिशु किसी खास दिशा की ओर गेंद या रिंग फेंक सकता है।
2. दायरे के अंदर गेंद या रिंग फेंक सकता है।

5 से 6 आयु समूह :-

1. शिशु 6 फीट की दूरी तक गैंद फेंक सकता है।
2. रिंग फेंक सकता है व उसे पकड़ सकता है।
3. निश्चित दिशा में निश्चित स्थान पर गेंद फेंक सकता है और पकड़ सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 4 आयु समूहः-

1. गेंद फेंकने के खेल।
2. दोनों हाथों से गेंद फेकने का खेल।
3. आमने-सामने गेंद फेंकना।
4. बड़े गोले के बीच में गेंद फेंकना।

4 से 5 आयु समूह :-

1. गेंद से खेलना।
2. टायर या टोकरी के बीच गेंद फेंकना।
3. सात सितौल्या का खेल (फर्शी) कबेलू या पत्थर के छोटे टुकड़े एक के ऊपर एक जमाकर छः कदम से उन्हें गेंद मारकर गिराना।
4. पेड़ से बांधकर लटकाए हुए टायर के बीच में से गेंद फेंकना।
5. आमने सामने खड़े होकर गेंद फेंकना और पकड़ना।

5 से 6 आयु समूह :-

1. 4 से 5 वर्ष की आयु के शिशुओं से करवाई जाने वाली क्रियाओं को कुछ अधिक दूरी से करवाना।
2. वालीबाल के खेल के समान शिशुओं को गेंद फेंकने का अभ्यास कराना।

पकड़ना

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 4 आयु समूह :-

चार कदम की दूरी से फेंकी गई गेंद शिशु पकड़ सकता है।

4 से 5 आयु समूह :-

1. 6 से 8 कदम की दूरी से फेंकी गई गेंद या रिंग पकड़ सकता है।
2. गेंद को एक से दो टप्पा देकर पकड़ सकता है।

5 से 6 आयु समूह :-

1. आठ कदम से अधिक दूरी से फेंकी गई गेंद को पकड़ सकता है।

2. निश्चित दिशा में गेंद फेंक सकता है।

3. रबर की गेंद उछाल कर झेल सकता है।

4. टप्पा देकर गेंद पकड़ सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 4 आयु समूह :-

1. बड़ी गेंद को पकड़ना।
2. अपनी ओर आती हुई गेंद को दोनों हाथों से रोकना।
3. गेंद को पैरों से लुढ़काना और रोकना।

4 से 6 आयु समूह :-

1. दूर से फेंकी हुई गेंद को पकड़ना।
2. उछालकर गेंद को पकड़ना।
3. गेंद को दोनों हाथों से बिना कोहनी की सहायता से झेलना।
4. टप्पा खिलाकर गेंद को दोनों हाथों से झेलना।
5. दीवार पर टप्पा खाकर वापस आई गेंद को दोनों हाथों से पकड़ना।

ठोकर मारना

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 6 आयु समूह :-

1. शिशु गेंद को पैर से ठोकर मार सकता है।
2. गेंद को ठोकर मार कर उछाल सकता है।
3. हवा में ठोकर मारने का अभिनय कर सकता है।
4. चलते हुए गेंद को ठोकर मार सकता है।
5. निश्चित स्थान पर गेंद को ठोकर मार कर फेंक सकता है।
6. दौड़ कर गेंद को ठोकर मारकर लुढ़का सकता है और उछाल सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 6 आयु समूह :-

1. कपड़े में रूई भरकर बनाई गई या प्लास्टिक की गेंद खेलना।
2. शिशुओं को सभी दिशाओं में गेंद मारने के खेल खिलाना।
3. कुछ दूरी से दीवार व बाद में पेड़ को गेंद से ठोकर मारना।
4. एक छोटे गोल में गेंद को ठोकर मार कर पहुंचाने का अभ्यास करना।
5. गेंद को ठोकर मारकर निश्चित स्थान पर पहुंचाना।
6. फुटबाल खेलना।

छोटी मांस-पेशियों का विकास

न्यूनतम अधिगम स्तर

3 से 4 आयु समूह :-

1. शिशु बड़े छेद वाले मोतियों को धागे में पिरो सकता है।
2. बिन्दुओं को धागा पिरोकर जोड़ सकता है।
3. चाक पकड़कर आड़ी-टेड़ी रेखाएं खींच सकता है।
4. फलियाँ छील सकता है।
5. चुटकी से वस्तुएँ उठा सकता है।
6. बड़े छेद की सुई में धागा पिरो सकता है।

4 से 6 आयु समूह :-

1. छोटे मोतियों में धागा पिरो सकता है।
2. प्लास्टिक के तार में मोती पिरो सकता है।
3. कांच के लम्बे मोती धागे में पिरो सकता है।
4. तस्में (लेस) जूतों में डाल सकता है।
5. चुटकी से रंगोली बना सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 4 आयु समूह :-

1. धागे में मोती पिरोने का अभ्यास कराना।
2. धागे की रील या बोतल के ढक्कन में छेद करके उन्हें धागे में पिरोने का अभ्यास कराना।
3. मिट्टी की गोलियाँ बनाकर उन्हें तार में पिरोना।
4. जूतों में तस्में (लेस) डालना।
5. पत्तियाँ व फूल चुनना।
6. पत्थर चुनना।
7. फलों के छिलके निकालना।
8. कार्ड बोर्ड या पुट्ठे पर बनी आकृति के छेदों में धागा या सुतली पिरोना।

चित्र-8

4 से 5 आयु समूह :-

चित्र-9

1. छोटे-बड़े मोतियों को धागे में पिरोने का अभ्यास।
2. फूल, पत्तियाँ, थर्मोकोल के टुकड़ों को धागे में पिरोना।
3. लाल, पीले, हरे मोतियों को क्रम से पिरोकर माला बनाने का अभ्यास।
4. जूतों के तस्में बांधने और खोलने का अभ्यास।
5. मूंगफली-सिंघाड़ा, मटर के दाने निकालने का अभ्यास।
6. चुटकी से वस्तुओं को उठाना और रखना।
7. फूल, पत्ती, मोती, बीज, रंगीन पत्थर, सीपी आदि चुटकी से उठाकर आकृतियों पर जमाना।
8. छोटे कंकड़ों को चुनकर जमीन पर जमाना।
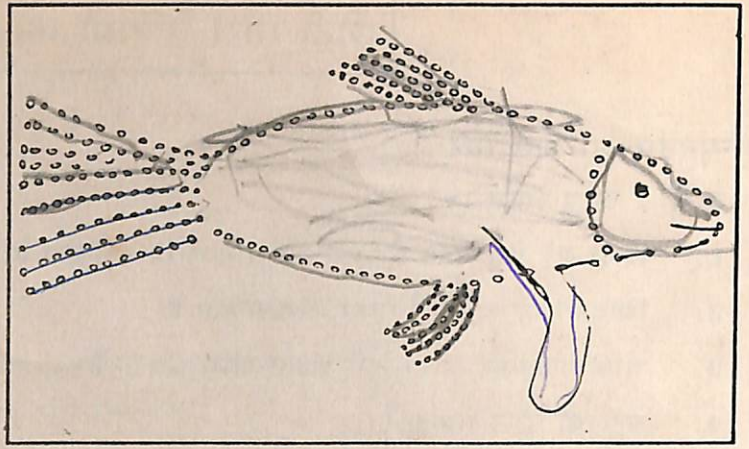
5 से 6 आयु समूह :-

1. धागा व लेई से आकृतियों को पूरा करना।
2. टाट पर सुई से आकृतियों को सीने की क्रिया।
3. चुटकी से रंगोली डालना।
4. जूते के तस्में बांधना व खोलना।
5. सुई-धागा से बारीक मोती पिरोना।

फाड़ना, काटना और चिपकाना

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 4 आयु समूह :-

1. उंगलियों से अखबार के कागज को लम्बाई से फाड़ सकता है।
2. कागज के बड़े टुकड़े कर सकता है।
3. कागज को आड़ा-तिरछा फाड़ सकता है।
4. बड़ी आकृति में छोटी आकृति चिपका सकता है।

4 से 5 आयु समूह :-

1. उपर्युक्त के अतिरिक्त कैंची की सहायता से गोल चौकोर, त्रिकोण तथा फलों की बड़ी आकृतियाँ काट सकता है।
2. बिना कैंची के सरल आकृतियाँ फाड़ सकता है तथा उन्हें चिपका सकता है।
3. छोटे टुकड़े काटकर बड़ी आकृतियों में चिपका सकता है।
4. कागज की झंडियाँ चिपका सकता है।

5 से 6 आयु समूह :-

1. उपर्युक्त के अतिरिक्त कागज के छोटे टुकड़े, आकृतियों में चिपका सकता है।
2. कागज को फाड़कर बारीक टुकड़े कर सकता है।
3. कागज की जंजीर (सांकल) और तोरण बना सकता है।
4. चित्र काट तथा फाड़ सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 4 आयु समूह :-

भिन्न-भिन्न आकृतियों के कागज फाड़ना और फलों तथा जानवरों की आकृतियों पर चिपकाना।

4 से 5 आयु समूह :-

1. गोल, त्रिकोण और चौकोर आकृतियाँ काटकर पुराने अखबार के कागज पर चिपकाना।
2. रंगीन कागज की झंडियाँ और तोरण बनाकर रस्सी पर चिपकाना।
3. बड़ी आकृतियों पर विभिन्न छोटे आकारों को चिपकाना।

5 से 6 आयु समूह :-

1. जानवरों की आकृतियों में सुन्दर तरीके से छोटे-छोटे रंग-बिरंगे कागज चिपकाना।
2. पत्ती, कागज, फूल, कपड़े के टुकड़े तथा धागे से चित्र या दृश्य बनाना।

छापना व अंकित करना

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 4 आयु समूह :-

1. हाथ की पाँचों उंगलियाँ रंग में डुबोकर कागज पर उनके छापे लगा सकता है।
2. भिंडी के डंठल को रंग में डुबोकर कागज पर नमूने छाप सकता है।
3. गीले मैदा में उंगलियाँ डुबोकर कागज पर उनकी छाप बना सकता है।

4 से 5 आयु समूह :-

1. आलू व प्याज के ठप्पे को रंग में डुबोकर आकृतियाँ बना सकता है।
2. रंगों में पत्तियाँ व सिक्के आदि डुबोकर उनकी आकृतियाँ कागज पर क्रम से छाप सकता है।
3. हाथ में रंग लगाकर कागज पर छाप लगा सकता है।

5-6 आयु समूह :-

1. ऊपर दी गई क्रियाओं के अलावा रंगीन पेन्सिलों व रंगों से नमूने बना सकता है।
2. मोमबत्ती से आकृतियाँ बना सकता है।
3. आकृति को कागज पर रख कर ट्रेस कर सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 6 आयु समूह :-

चित्र-10

1. उंगलियों को रंगों में डुबोकर सफेद या रंगीन कागज पर छापे बनाना। उन पर चिड़िया, मोर, बन्दर, हवाई जहाज ट्रेस करना।
2. भिंडी, प्याज, आलू के कटे हुए टुकड़ों को रंग में भिगोकर कागज पर आकृतियाँ बनाना।
3. आकृतियाँ काटकर कार्ड बोर्ड पर चिपकाना।
4. मोटे धागे को रंग में डुबो कर कागज पर इस प्रकार घुमाना कि आकृतियाँ बन जाएँ।
5. आकृति काटकर रंग में डुबोकर कागज पर ठप्पा लगाना।
6. लकड़ी व पत्थर आदि को रंग में डुबोकर कागज पर ठप्पा लगाना।
7. सिक्कों को कागज के नीचे रखकर ऊपर पेंसिल से रगड़ कर सिक्कों की आकृतियाँ बनाना।
8. हाथ और पैर को रंग में डुबोकर कागज पर छापे बनाना।
9. उंगलियों को रंगों में डुबोकर कागज पर विभिन्न नमूने बनाना।
10. गेंद को रंग में डुबोकर ठप्पा लगाना और कागज पर नमूने बनाना।
11. आलू को काटकर उस पर नमूना बनाना और उसे रंग में डुबोकर आकृतियाँ तैयार करना।
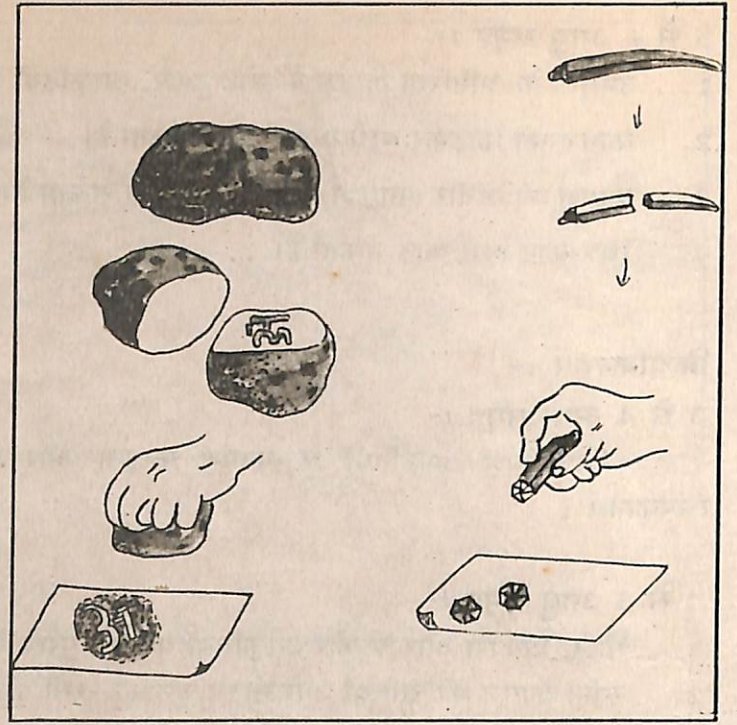
कागज मोड़ना

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 4 आयु समूह :-

1. कागज की दो तह कर सकता है।
2. कागज को चौकोर और त्रिकोण आकृति में मोड़ सकता है।
3. कागज को मोड़कर सरल आकृति का हवाई जहाज बना सकता है।

4 से 5 आयु समूह :-

1. कागज को मोड़कर नाव, झोंपड़ी, टोपी, राकेट और हवाई जहाज आदि बना सकता है।
2. चारों किनारे मिलाकर रुमाल को तह कर सकता है।

5 से 6 आयु समूह :-

1. कागज के चारों कोने बराबर मोड़कर कई तरह की टोपियाँ बना सकता है।
2. कागज मोड़कर दवात, नाव, चिड़िया, झोपड़ी, फिरकनी, हवाई जहाज बना सकता है। कागज की गेंद आदि कई खिलौने बना सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 4 आयु समूह :-

1. रूमाल की एक या दो तह करना।
2. कागज़ पर खिचीं हुई लकीर के अनुसार उसकी तह करने का अभ्यास करना।
3. कागज़ मोड़कर हवाई जहाज बनाना।

4 से 6 आयु समूह :-

1. आंगनवाड़ी की दरी, चादर, टेबल-क्लाथ की तह लगाना।
2. कागज को मोड़कर घर, टोपी, कुर्सी, सूप (सूपड़ा) बनाना।
3. कागज का पंखा बनाना, कई तरह की टोपियाँ बनाना।
4. कागज को मोड़कर फूल, हवाई जहाज, दवात, मेंढक, चिड़िया रात-दिन व गेंद आदि नमूने बनाना।
5. बिना लकीर खींचे कागज को मोड़कर उसे चौकोर, त्रिकोण और आयताकार बनाना।

तैयारी जितनी ही अधूरी होगी, उतनी ही भाव के प्रकट होने में कठिनाई आएगी।

- गिजुभाई

संज्ञानात्मक-विकास

1. ज्ञानेन्द्रियों का विकास-देखना, सुनना, छूना, सूंघना व चखना।
2. मानसिक कुशलताओं का विकास-अवलोकन, याद रखना, वर्गीकरण, क्रमबद्ध विचार, तर्क करना और समस्या सुलझाना।
3. रंग, आकृति, संख्या पूर्व और संख्या अवधारणा।
4. परिवेश की (आस-पास) अवधारणा।

देखना

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 4 आयु समूह :-

1. परिचित पशु-पक्षियों को देखकर पहचान सकता है।
2. चित्र देखकर कुछ पालतू पशुओं के नाम बता सकता है।
3. नई वस्तुओं को देखकर जानने की उत्सुकता बता सकता है।
4. क्या और क्यों प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा प्रकट कर सकता है।

4 से 5 आयु समूह :-

1. वस्तुओं व घटनाओं को देखकर प्रश्न पूछ सकता है।
2. पशु-पक्षियों को उनके अंगों से पहचान सकता है।
3. क्या, क्यों और कैसे प्रश्न पूछकर जिज्ञासा प्रकट कर सकता है।

5 से 6 आयु समूह :-

1. वस्तुओं को देखकर नाम बता सकता है।
2. देखी गई घटनाओं को 5-6 वाक्यों में बता सकता है।
3. परिवेश के दृश्यों जैसे मेला व बाजार-हाट में देखे गए दृश्यों को बता सकता है।

क्रियाकलाप

3 से 6 आयु समूह :-

1. पशुओं के चित्र देखकर उनके नाम पूछना।
2. पक्षियों के चित्र देखकर पहचानना व नाम बताना।
3. पशु-पक्षियों की चाल देखकर उन्हें पहचानना, नाम बताना।
4. उनकी आवाज सुनकर पहचानना व नाम बताना।
5. चित्र देखकर फूल, फल व सब्जियों को पहचानना।
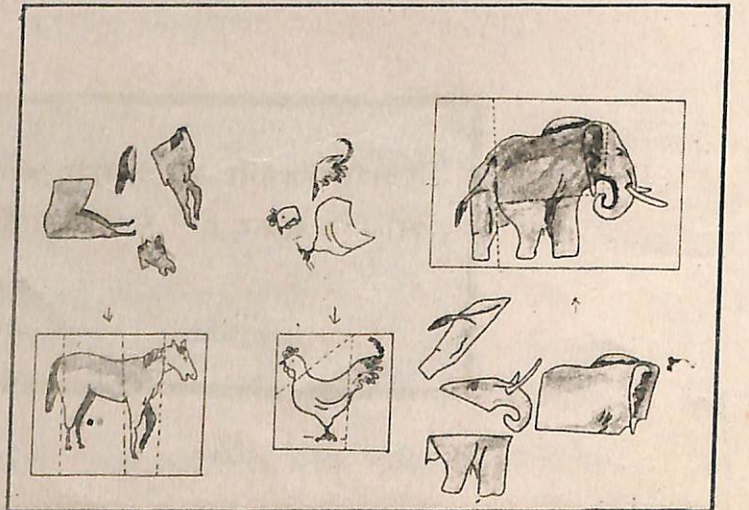
चित्र-11

6. चित्रों के टुकड़े जोड़कर पूरा चित्र बनाना।
7. चित्रों में समानता और भिन्नता देखकर वर्गीकरण करना।
8. एक जैसी प्रतीत होने वाली वस्तुओं के चित्रों को देखकर अन्तर मालूम करना।
9. डामिनोज का खेल-जोड़ियाँ बनाना।
10. मेला, बाजार, बगीचा आदि देखकर वार्तालाप करना।

छूना

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 4 आयु समूह :-

1. शिशु चिकनी और खुरदरी, गीली और सूखी, कड़ी और मुलायम तथा ठण्डी और गरम (कुनकुनी) चीजों को छूकर पहचान सकता है।
2. इन (ऊपर लिखी हुई) में अन्तर बता सकता है।

4 से 5 आयु समूह :-

शिशु खुरदरी और चिकनी, गीली और सूखी, कड़ी व मुलायम, ठंडी व गरम वस्तुओं के नाम बताकर उनमें तुलना कर सकता है जैसे कम चिकना और अधिक चिकना आदि।

5 से 6 आयु समूह :-

शिशु आंख बन्द करके चिकनी और खुरदरी, कड़ी व मुलायम और सूखी व गीली वस्तुओं की पहचान कर नाम बता सकता है। उन्हें क्रम में जमा सकता है और परिवेश में उपलब्ध ऐसी वस्तुओं को खोज कर इकट्ठा कर सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 6 आयु समूह :-

परिवेश (आस-पास) में पाई जाने वाली वस्तुओं को छूकर देखना और उनके गुण-ठंडी व गरम, कड़ी व मुलायम, चिकनी व खुरदरी, सूखी और गीली, के अनुसार वर्गीकरण करना। उनके समूह बनाना। पत्थर, पत्ती, फूल के बीज, तरह-तरह के कपड़े व कागज के टुकड़े, बटन, चूड़ी के टुकड़े, तरह-तरह के ढक्कन, प्लास्टिक व लकड़ी की वस्तुएं आदि इकट्ठा करना, उनकी जोड़ी बनाना।

पानी डालने से सूखी वस्तु गीली हो जाती है तथा हवा व गर्मी से गीली वस्तु सूख जाती है।
ठंडे व गर्म पानी का स्पर्श कराना, रेगमाल स्पर्शफलक बनाकर खुरदरेपन का अनुभव कराना।
डोमीनोज का खेल-खिलाना, कार्ड जमाने का खेल खिलाना, छूकर जानों कार्ड-खेल।

थैले में खोजो-थैली बनाकर उसमें लकड़ी, रूई, बटन, सीप, ब्रश, पत्थर, रेगमाल का टुकड़ा आदि डालना। शिशु बारी-बारी से थैली में हाथ डालकर चीजें निकालेगा और बताएगा कि यह क्या है और कैसी है। चिकना, खुरदरा-स्पर्शफलक बनाना, वस्तुओं को उनके गुण के अनुसार क्रम से लगाना।

कविता

1. आओ देखे क्या है चिकना, पालक का पत्ता है चिकना।
   बेर और तरबूज भी चिकना, गोल-गोल बैंगन है चिकना।

2. काली बिल्ली, झबरे कुत्ते, इनको छूकर देखो,
   रेशम जैसे कोमल बाल, नरम-नरम है इनकी खाल।
   बरफ है ठंडी, चाय गरम, शरबत ठंडा दूध गरम,
   सख्त है पत्थर रूई नरम, सख्त कोयला फूल नरम।

सूंघना

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 4 आयु समूह :-

शिशु खुशबू (सुगंध) और बदबू को पहचान सकता है। वह उन में अंतर समझ सकता है। कुछ खाद्य पदार्थों की गंध के अनुसार अन्तर कर सकता है।

4 से 6 आयु समूह :-

हवा के साथ आती हुई सुगन्ध और दुर्गन्ध में अंतर बता सकता है। खाद्य वस्तुओं को उनकी गंध से पहचान सकता है और उनके नाम बता सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 6 आयु समूह :-

1. शिशुओं को फलों और फूलों को सूंघकर उन्हें पहचानने का अवसर देना।
2. केंद्र में फूल, अगरबत्ती आदि रखकर शिशुओं से आंख मूँदने को कहें और पूछें कि कमरे में किस चीज की खुशबू आ रही है। खुशबूरहित वस्तुओं जैसे- नमक, शक्कर आदि को पहचानने का अवसर देना।
3. लहसुन, प्याज, पोदीना, धनिया के पौधों या पत्तियों को सूंघकर उन के नाम बताना।
4. गंध के आधार पर पेट्रोल, घासलेट और खाद्य तेलों की पहचान करना, अंतर बताना।
5. भ्रमण में विभिन्न चीजों को सूंघाकर सूंघने की क्षमता विकसित करना, खेल खिलाना जैसे सूंघों और जानों। अहा, छीः छीः।

स्वाद

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 6 आयु समूह :-

- शिशु मीठी, नमकीन और खट्टी वस्तुओं को चखकर पहचान सकता है।

- शिशु मीठी, नमकीन, खट्टी, कड़वी और तीखी वस्तुओं में अंतर कर सकता है।
- वस्तुओं के स्वाद को स्मरण कर उनके नाम तथा उनमें अंतर बता सकता है।

चित्र-12

क्रियाकलाप :-

3 से 4 आयु समूह :-

शिशुओं से भोजन का स्वाद पूछना। इमली, आम, नीबू, शक्कर, नमक आदि चखाकर स्वाद बताने को कहना।

4 से 6 आयु समूह :-

शिशुओं से विभिन्न प्रकार के स्वाद वाली वस्तुओं के नाम पूछना। स्वाद बताने की प्रतियोगिता करना जैसे शरबत-मीठा, इमली-खट्टी, मिर्च-तीखी। इसी प्रकार परिवेश में उपलब्ध खाद्य पदार्थों को चखकर स्वाद बताना।

चखो तो जाने

(1) मीठा
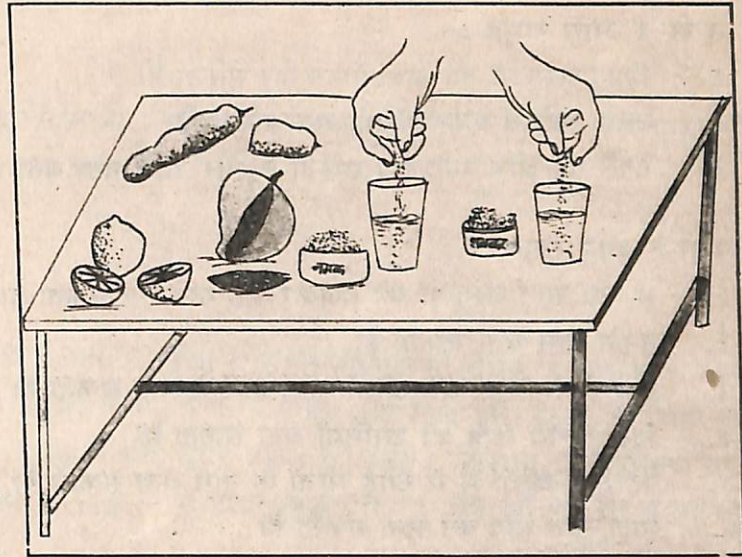
आओ ढूंढ़ें क्या है मीठा? चीनी मीठी, गन्ना मीठा।
बरफी मीठी, लड्डू मीठा नानीजी का पेड़ा मीठा।

(2) कड़वा –चिरपरा

जीभ से चखकर हमने जाना,
कड़वा चिरपरा पहचाना।
करेला कड़वा, नीम है कड़वी,
डॉक्टर जी की दवाई कड़वी।
हरी, लाल मिर्ची है तीखी,
जीभ जले जैसे ही चक्खी।

(3) नमकीन

नमक चखो स्वाद निराला,
फीका इसके बिना मसाला।
दाल में डाला, साग में डाला,
इसका स्वाद है बड़ा निराला।
बच्चे खाते, बूढ़े खाते
मजे से खाते, मोटे लाला।
जीभ से चखो तो जानोगे,
स्वाद तभी पहचानोगे

अवलोकन करना व याद रखना

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 4 आयु समूह :-

1. शिशु वस्तुओं का अवलोकन कर सकता है।
2. उनके बारे में एक-दो बातें बता सकता है।
3. देखी गई चीजें याद रख सकता है और उनके नाम बता सकता है।

4 से 5 आयु समूह :-

1. छः या सात वस्तुओं को देखकर उन्हें याद रख सकता है।
2. उनके नाम बता सकता है।
3. क्रम से रखी हुई वस्तुओं के नाम क्रम से बता सकता है।
4. दिखाए गये चित्र की खामियाँ बता सकता है।
5. पहचानी चीजों में से खोई चीजों के नाम बता सकता है।
6. बाल-गीत याद कर सुना सकता है।

5 से 6 आयु समूह :-

1. लगभग दस परिचित वस्तुओं के नाम क्रम से बता सकता है।
2. अपने दाईं तथा बाईं ओर के दो-दो शिशुओं के नाम बता सकता है।
3. बाल-गीत याद करके सुना सकता है। कहानी सुनकर याद रख सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 4 आयु समूह :-

शिशु को वस्तुएं दिखाना, उनमें से कोई एक वस्तु छिपा कर पूछना कि कौन सी वस्तु नहीं है। परिचित वस्तुओं, पशु-पक्षी के चित्रों का कोई हिस्सा ढांककर उस हिस्से के बारे में पूछना। शिशुओं को सैर के लिए ले जाना और लौटने पर उन वस्तुओं के नाम पूछना, जो उन्होंने मार्ग में देखी हैं।

4 से 6 आयु समूह :-

एक जैसी दिखाई देने वाली, परन्तु वास्तव में भिन्न चीजों के चित्र शिशुओं को दिखाकर, उनके अंतर को बताने के लिए कहना। तरह-तरह के आकारों के टुकड़ों को जोड़कर आकृतियाँ बनाना। 3-4 आयु समूह की क्रियाओं को कुछ कठिन बनाकर कराना।

वर्गीकरण करना

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 4 आयु समूह :-

शिशु रंग और आकार के अनुसार वस्तुओं को अलग-अलग छांट सकता है।

4 से 5 आयु समूह :-

शिशु रंग और आकार के अनुसार वस्तुओं को छांटकर अलग-अलग समूहों में जमा सकता है और उन्हें आकार (छोटा-बड़ा) के क्रम में पहले बड़ा उससे छोटा फिर सबसे छोटा जमा सकता है।

5 से 6 आयु समूह :-

शिशु रंग, आकार और आकृति की बनावट के आधार पर वस्तुओं का वर्गीकरण कर सकता है और इन्हीं के आधार पर उनकी जोड़ियाँ बना सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 4 आयु समूह :-

छलनी से रेत छानना और उसमें से कंकड़, बीज व सीपी निकालना। मोती व अनाज के दानों को रंग और आकार के अनुसार अलग-अलग करना। रंगों के आधार पर फल और फूलों के चित्रों को छांटना। एक जैसी बहुत सी वस्तुओं के समूह में कोई दूसरे प्रकार की वस्तुएं मिलाना, उन्हें छांटना तथा अलग करने की क्रिया कराना जैसे बीजों के समूह में से पत्थर अलग करना। वस्तुओं का रंग व आकार के अनुसार वर्गीकरण करना।

4 से 6 आयु समूह :-

एक वर्ग की वस्तुओं में से किसी एक वस्तु का नाम बोलना तथा शिशुओं को उसी वर्ग की अन्य वस्तुओं के नाम बोलने को कहना- जैसे आंगनवाड़ी कार्यकर्ता कहे- लोटा तब शिशु थाली, गिलास, चम्मच, तबेली, कटोरी आदि नाम लेगें। आकार और रंग के आधार पर वर्गीकरण करना जैसे-

वस्तु का नाम	आकार	रंग
श्यामपट	चौकोर	काला
गिलास	लम्बा	सफेद
सूरज	गोल	पीला
पेड़	ऊँचा	हरा
हाथी	मोटा	काला

वस्तुएं जिस सामग्री से बनी हैं के आधार पर नाम पूछना जैसे- मिट्टी तथा कागज से बनने वाली वस्तुओं के नाम पूछना या उनके चित्र छांटना।

मिट्टी से बनने वाली वस्तुएं :- घड़ा, सुराही, गमला, दीया (दीपक) आदि का रंग, आकार व आकृति के अनुसार वर्गीकरण करना। डोमीनोज के खेल खिलाना, चित्रों का मिलान करना।

क्रमबद्ध विचार

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 6 आयु समूह :-

1. शिशु रंग व आकार के अनुसार वस्तुओं को क्रम से जमा सकता है।
2. कहानी और घटनाओं को सुनकर उन्हें क्रम से दुहरा सकता है।

3. किसी घटना के पूर्व की और बाद की बातों को बता सकता है।
4. वस्तुओं और घटनाओं के संबंधों को समझ सकता है। पुराने अनुभवों को बता सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 4 आयु समूह :-

शिशु की दिनचर्या को बताने वाले चित्रों (फ्लेश कार्ड) को दिखाकर उन्हें दिनचर्या के क्रम में जमाने की क्रिया करवाना। वस्तुओं के आकार के अनुसार उन्हें क्रम में जमवाना जैसे- पहले बड़ा घड़ा, फिर छोटा घड़ा आदि।

4 से 5 आयु समूह :-

कहानी को सुनकर घटनाओं का क्रम बताना। नई कहानी बनाने का अवसर देना। अधूरे चित्र या नमूने को पूरा करने का अभ्यास कराना। दैनिक क्रियाकलापों को बताने वाले चित्रों के कार्ड क्रम से जमवाना आदि।

5 से 6 आयु समूह :-

शिशुओं को कहानी सुनाना और उनसे सही घटना क्रम में कहानी सुनना। नई कहानी बनाना। दैनिक कार्यों के बारे में पूछना कि वे किस क्रम में किए जाते हैं। जैसे- शरीर पर पानी डालना, साबुन लगाना आदि से लेकर कपड़े पहनकर तैयार होने तक। गमले बनाने, पौधा उगने तथा तितली का जीवन क्रम, दिखाना। चित्र बताना।

तर्क करना एवं समस्या निराकरण

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 4 आयु समूह :-

1. शिशु जिज्ञासा कर सकता है।
2. सरल समस्या को हल कर सकता है।

4 से 6 आयु समूह :-

शिशु किसी घटना का वर्णन कर सकता है। उनसे संबंधित समस्या बता सकता है। उसके समाधान का हल बता सकता है तथा स्वयं समस्या हल कर सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 4 आयु समूह :-

पशु, पक्षी, फल, फूल आदि के चित्रों के 2 से 4 टुकड़े काटकर शिशुओं को उन्हें जोड़ने के लिए देना। किसी समस्या को सुलझाने के लिए शिशु से प्रश्न करना :-

1. सूर्य की धूप में कपड़े क्यों सूख जाते हैं?
2. कागज क्यों उड़ते हैं?
3. आलमारी के ऊपर रखे हुए खिलौने तुम नीचे कैसे उतारोगे?
4. पानी बरस रहा है, तुम स्कूल जा रहे हो तब क्या करोगे?

4 से 6 आयु समूह :-

उपर्युक्त के साथ निम्नानुसार क्रियाएं भी करवाएं :-

प्रयोग :-

दो अलग-अलग प्रकार की बोतलों में समान माप के अनुसार पानी भरना। एक बोतल लम्बी है और दूसरी बोतल चौड़ी है। बोतलों की आवृत्ति अलग-अलग होने पर पानी कम-ज्यादा दिखाई देता है। दोनों बोतलों में से पानी निकाल कर उसे माप कर बताना कि दोनों में पानी समान मात्रा में भरा हुआ था। इसी प्रकार की मिलती-जुलती क्रियाएं करें, जिससे शिशु में तर्क करने की क्षमता विकसित हो। वह क्यों, कैसे का उत्तर खोज सके और समस्याओं का हल करना सीख सकें।

रंग की अवधारणा

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 4 आयु समूह :-

1. लाल, नीला व पीला रंगों को पहचान सकता है। उनके नाम बता सकता है।
2. एक से रंग वाली वस्तुओं व चित्रों की जोड़ी बना सकता है।
3. आकृति में रंग भर सकता है।

4 से 5 आयु समूह :-

1. गहरे और हल्के रंग में भेद कर सकता है।
2. दो रंगों को मिलाकर तीसरा रंग बनाना सीख सकता है।
3. वह नमूने को देखकर आकृति में रंग भर सकता है।

5 से 6 आयु समूह :-

1. रंगों के शेड्स के अनुसार वस्तुओं, चित्रों व खिलौनों को क्रम में जमा सकता है। जैसे- गहरा, कम गहरा, फीका, सबसे फीका।
2. विभिन्न प्रकार की आकृतियों में रंग भर सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 4 आयु समूह :-

1. कपड़ों के रंग देखकर पहचान करना और उनका मिलान करना।
2. एक जैसे रंग के कपड़े पहनने वाले बच्चों को एक साथ खड़ा कर रंगों की पहचान करना और नाम बताना।
3. किसी रंग का नाम बताकर पूछना कि यह रंग आस-पास कहाँ-कहाँ है?
4. समान रंग की आकृतियों की जोड़ियाँ बनाना। रंग पहचानो, आओ लाल, नीले व पीले रंग की चीजें खोजें- खेल खिलाना।
5. तीनों रंगों के मोती क्रम से धागे में पिरोना।
6. पशु-पक्षियों जैसे गाय, बिल्ली, कुत्ता, तोता, आदि के रंग बताना।

4 से 6 आयु समूह :-

1. रंगों से संबंधित पहेली बोलकर बालक से रंग का नाम पूछना जैसे-

   मेरा रंग कच्चे आम जैसा
   मेरा रंग पत्ती जैसा
   मेरा रंग करेले जैसा
   बताओ मैं कौन सा रंग हूँ?

2. दो रंगों के मिश्रण से तीसरा नया रंग बनाने का खेल खिलाना। तीन कांच के गिलास लेवे, एक गिलास में लाल रंग डालकर पानी में घोले, दूसरे गिलास में पहले व दूसरे गिलास में घुले लाल और पीले रंग का पानी डालें, नारंगी रंग का पानी बन जावेगा। अब शिशु को समझावें कि लाल और पीला रंग मिलकर नारंगी बन जाता है। सबसे हल्का, उससे गहरा, अधिक गहरा, सबसे अधिक गहरा रंग बनाना और आकृतियों में भरना।
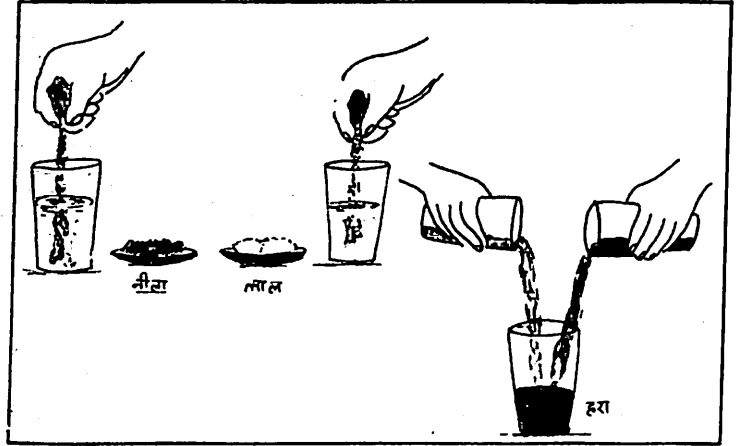
चित्र-13

3. एक रंग के विभिन्न शेड्स की वस्तुओं व चित्रों को क्रम से जमाना।
4. कांच की चूड़ियों के टुकड़े रंग के अनुसार छांटना, रंगीन मोती व छोटे-छोटे रंगीन पत्थर पहले से रेखांकित आकृतियों पर लेई व गोंद लगाकर चिपकाना।
5. पक्षियों के पंख व चित्र इकट्ठे करना।
6. रंगीन व फूल वाले कपड़ों की कतरने, फूल, चूड़ियों के टुकड़े, रंगबिरंगें बटन व बीज इकट्ठे कर रंग के अनुसार छाँटना, समूह बनाना और नमूने बनाना।

आकृति की अवधारणा

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 4 आयु समूह :-

1. गोल, त्रिकोण और चौकोर आकृतियों को पहचान सकता है।
2. उन पर चॉक या रंग-पेन्सिल फेर सकता है।
3. गोल आकृति बना सकता है।
4. गोल, त्रिकोण और चौकोर में अंतर कर सकता है।

4 से 5 आयु समूह :-

1. गोल, त्रिकोण और चौकोर शब्दों का प्रयोग कर सकता है।
2. परिवेश में पायी जाने वाली गोल, त्रिकोण और चौकोर वस्तुओं के नाम आकृति के अनुसार मिलान कर बता सकता है। विभिन्न आकृतियों जैसे- सितारा व आधेगोले को पहचान सकता है।

5 से 6 आयु समूह :-

आकृतियों के नाम बता सकता है और उन्हें बना सकता है। अर्द्धगोला और पंचकोण आकृतियाँ देखकर बना सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 4 आयु समूह :-

1. गीत के द्वारा गोल की अवधारणा देना :-

   सूरज गोल, चन्दा गोल, टन-टन बजता घंटा गोल,
   रोटी गोल, टोपी गोल, चूड़ी गोल, बिन्दी गोल,
   गाड़ी के पहिये हैं गोल, सुनरी गुड़िया गोल मटोल।

2. गोल आकृति दिखाकर कागज पर बनवाना।
3. गोल, त्रिकोण और चौकोर घेरे का खेल खिलाना।
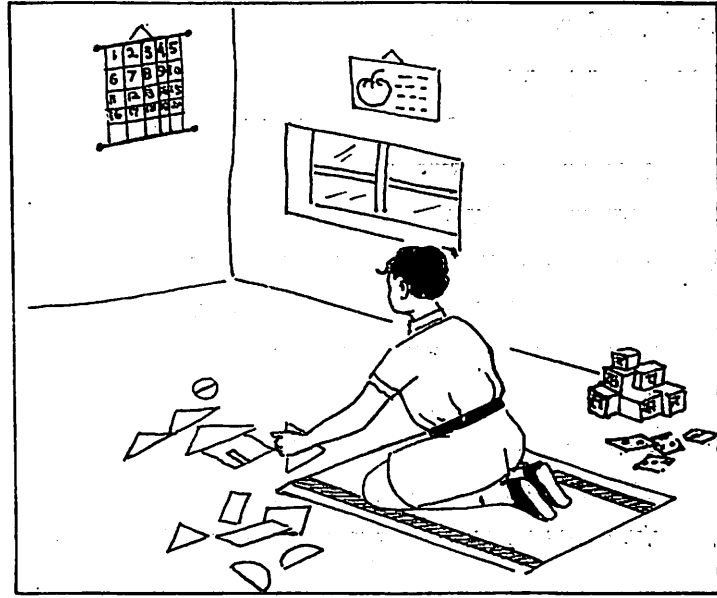
चित्र-14

शिशुओं से अनुपयोगी वस्तुएं जैसे माचिस, गोल-डिब्बे, कंचियां, लकड़ी के चौकोर गुट्टे आदि इकट्ठे कराना। गुड़िया घर तथा उसमें रखे बर्तन, कुर्सी, टेबल व पलंग आदि बार-बार देखना और उनके साथ खेलना। इससे उन्हें आकृतियों की जानकारी मिलेगी।

4 से 6 आयु समूह :-

विभिन्न आकृतियों जैसे गोल, त्रिकोण, चौकोर के कटे हुए टुकड़ों को जोड़कर नई वस्तुएं बनाना जैसे- घर, पहाड़, सूरज, चांद आदि।

लकड़ी के पटिए पर कीले ठोककर धागे की सहायता से विभिन्न आकृतियाँ बनाना। बच्चों द्वारा इन कीलों पर एक सिरे से दूसरे सिरे तक धागा लपेटना इस से कई आकृतियाँ बनेगी।

संख्या पूर्व अवधारणाएं

ये अवधारणाएं निम्नलिखित हैं :-

1. छोटा और बड़ा।
2. कम और ज्यादा।
3. मोटा और पतला।
4. दूर और पास।
5. अन्दर और बाहर।
6. ऊपर और नीचे।

7. चौड़ा और संकरा।
8. लम्बा और नाटा।
9. ऊँचा और नीचा।

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 6 आयु समूह :-

1. शिशु छोटी और बड़ी व कम और ज्यादा वस्तुओं को पहचानता है।
2. उनमें अंतर बता सकता है।
3. वस्तुओं को छोटे से बड़े क्रम में जमा सकता है।
4. आकार के क्रम में तीन से पाँच वस्तुओं को जमा सकता है।
5. समान आकार वाली चीजों को अलग-अलग जमा सकता है।
6. शिशु मोटा और पतला, दूर और पास, लम्बा और छोटा को समझता है और अंतर बता सकता है।
7. अंदर और बाहर रखी चीजों को पहचान सकता है। अवधारणा में अंतर कर सकता है।
8. चौड़े और संकरे में अंतर कर सकता है।
9. ऊँचा और नीचा समझ सकता है तथा उनमें अंतर बता सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 6 आयु समूह :-

1. बड़ा और छोटा गोला बनाने का खेल खिलाना।
2. शिशुओं को पाँच तक बड़े से छोटे क्रम में खड़ा करना।
3. बातचीत, कहानी और कविता द्वारा बड़े और छोटे की जानकारी देना।
4. पेड़-पौधे और जानवरों को दिखाकर अथवा चित्रों के आधार पर बड़े और छोटे की तुलना करना जैसे घोड़ा- बड़ा कुत्ता, छोटा, हाथी बड़ा- चूहा छोटा।

चित्र-15

5. ढपली बजाकर शिशुओं को छोटे व बड़े घेरे में चलाने तथा दौड़ाने का खेल।
6. बालिश्त तथा अंगुलियों से माप कर छोटा और बड़ा बताना।
7. एक जैसे आकार व आकृति की वस्तुएं पास-पास रखकर बराबर की समझाइश देना।
8. परिवेश में पायी जाने वाली वस्तुओं जैसे- फूल, पत्तियाँ, फल, बीज आदि को छोटे-बड़े व बराबर के क्रम में जमाना।
9. वस्तुएं मात्रा में कम हैं, ज्यादा हैं या बराबर हैं क्रिया द्वारा बताना। बीज, पत्थर, मोती, सीपी आदि के ढेर अथवा उनके चित्र में दिखाकर कम या ज्यादा बतलाना।
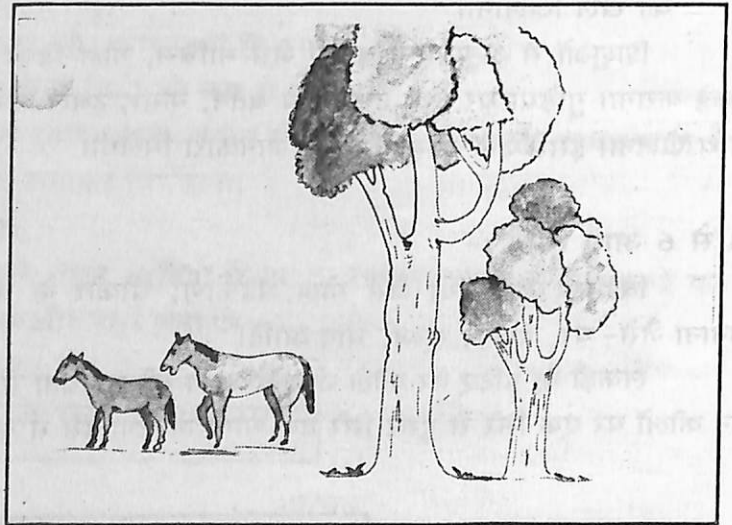
10. पत्थर, चूड़ियों के टुकड़े, सीपी, बोतलों के ढक्कन आदि एकत्र करना, उनकी ढेरियाँ बनाना, मात्रा के अनुसार उनकी कम, ज्यादा और बराबर की ढ़ेरियाँ लगाना।
11. मोटी-पतली वस्तुओं के चार्ट बनाना और शिशुओं से उन पर मोटी और पतली वस्तुएं रखवाना।
12. मोटी और पतली वस्तुओं को छांटना।
13. रस्सी व धागा छूकर मोटा व पतला बताना।
14. कपड़ों व पुस्तकों को तथा उनके चित्र दिखाकर मोटा पतला बताना।
15. भ्रमण पर ले जाकर ऊँचा और नीचा पेड़ तथा घरों की ऊंची और नीची छतें दिखाना और पूछना।
16. सड़क व पगडण्डी दिखाकर चौड़े-सकरे की पहचान करना।
17. पेड़, पहाड़ी, चन्द्रमा, तारे और सूर्य आदि दिखाकर दूर क्या है, पास क्या है बताना और प्रश्न करना।
18. दौड़ो और छुओ, भागकर पत्थर लाओ, आदि खेल खिलाना।
19. पहाड़ी पर चढ़ो, नीचे उतरो, घेरे के अन्दर और बाहर के खेल खिलाना।
20. दूर व पास की चीजों के नाम बताना।
21. अभिव्यक्ति चार्ट देखकर दूर-पास, ऊंचा-नीचा, अन्दर और बाहर, ऊपर-नीचे, सकरा-चौड़ा, लम्बा- छोटा आदि पहचानना और बताना।

संख्या की अवधारणा

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 6 आयु समूह :-

1. शिशु एक से दस तक की संख्याओं को वस्तुओं की सहायता से पहचान सकता है।
2. एक वस्तु पर एक, दो पर दो व तीन पर तीन वस्तुएं रखकर गिनना सीख सकता है।
3. चार से दस चीजों के सामने उतनी ही वस्तुएं लगा सकता है।
4. एक संख्या में एक मिलाने से संख्या बढ़ती है। यह जान सकता है।
5. एक से दस तक संख्याएं क्रम से जमा सकता है।
6. समूह बना सकता है।
7. समूहों में रखी चीजें गिन सकता है।
8. बीस तक की संख्याएं सीख सकता है।
9. 50 तक की गिनती बोल सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 6 आयु समूह :-

1. एक से तीन और चार से दस वस्तुओं की पहचान करना।
2. पत्थर, सीपी, चूड़ियों के टुकड़े, बटन, बीज आदि वस्तुएं एकत्र करवाना, पत्थरों अथवा बीजों आदि को एक से तीन तथा चार से दस संख्या में जमाना, इनके सामने उतनी ही चूड़ियों के टुकड़े, मिट्टी की गोलियाँ व सीपी रखकर संख्याओं का मिलान करना।

3. एक मोती में एक और मोती मिलाकर संख्या ज्ञात करना।

4. दो मोती में एक बीज मिलाकर संख्या बताना।

5. एक से दस की संख्या में बीजों अथवा पत्थरों को क्रम से लगाना।

6. गोल में संख्या के अनुसार छोटे गोल बनाना।

7. तीन से दस काड़ियों (माचिस की) से त्रिकोण व चौकोर आकृतियाँ बनाना और काड़ियाँ गिनना।
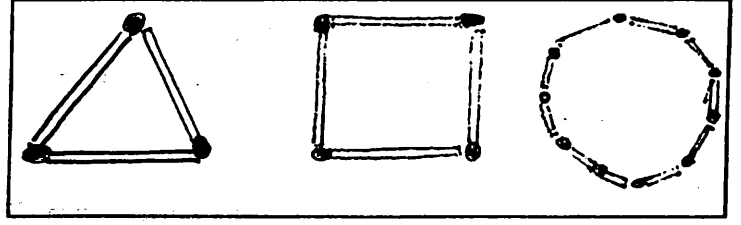
चित्र-16

8. शिशुओं को गिनना।

9. पोशाक और रंग के अनुसार शिशुओं के समूह बनाना और गिनना।

10. सब्जी व फल के चित्रों को देखकर गिनना।

11. चित्र में दी गई वस्तुओं को गिनना।

12. वस्तुओं को क्रम में रखकर एक से बीस तक गिनना। माचिस की काड़ियाँ (तीलियाँ) गिनना।

13. भ्रमण करते समय दिखाई देने वाले पेड़, घर व पशु-पक्षी आदि गिनना।

14. पेड़ की डण्डी व रस्सी की लम्बाई बालिश्तों से गिनना।

15. आंगनवाड़ी कक्ष को कदमों से गिनना।

16. आंगनवाड़ी में रखा सामान गिनना।

17. छोटे-छोटे गोलों व चौकोरों में 1-10, 11-20, 21-30, 31-40 तथा 41-50 तक की संख्या के पत्थर, सीपी, बीज तथा माचिस की काड़ियाँ आदि गिनकर रखना।

18. 10 तक की चीजों- इमली, सीताफल या अन्य बीजों के समूह बनाकर उन्हें गिनना।

19. मध्यान्ह भोजन के समय शिशुओं के सामने गिलास, कटोरी और चम्मच रखकर गिनने के लिए कहना।

20. संख्या बताने वाले बिन्दु-कार्ड तैयार करना और उन कार्डों के एक बिन्दु पर एक बीज, दो बिन्दुओं पर दो मोती आदि रखना।

21. भूल-सुधार के खेल द्वारा संख्याओं की जानकारी देना। एक आयताकार कार्ड को इस प्रकार काटें कि जोड़ने पर पूरा कार्ड फिर से एक दिखाई दे। कार्ड में एक टुकड़े पर संख्या या बिन्दी अंकित हों और दूसरे टुकड़े पर उतनी ही वस्तुओं के चित्र बने हों। इस प्रकार की संख्याओं व चित्रों के 10 आयताकार कार्ड और उनके 20 टुकड़े बनाना। दो या तीन शिशुओं के समूह के टुकड़ों के ढेर रखना। शिशु संख्या के अनुसार पहचान कर तथा गिनकर सही टुकड़े ढूंढ़कर कार्ड पूर्ण करेंगे।

22. कार्यकर्ता- नमूने के अनुसार एक से बीस तक की संख्या के कार्ड बनाकर एक-एक कार्ड प्रत्येक शिशु को दें। शिशुओं को गोल घेरे में खड़ा करें। उन्हें कार्ड देखने दें फिर ताली बजाएं। शिशु ताली की आवाज के साथ घेरे में गोल-गोल घूमेंगे। ताली बजाना बन्द कर कार्यकर्ता संख्या बोलेगी जिसे सुनकर संबंधित शिशु कार्ड के साथ गोल घेरे के बीच आकर खड़ा हो जाएगा। यदि नहीं आएगा तो घेरे से बाहर खड़ा होगा।

23. संख्या डोमीनोज का खेल खिलाना। एक से दस या एक से बीस संख्या के कार्ड बनाना। कार्ड का आकार 3"×6" हो। कार्ड पुट्ठे के होना चाहिए। एक कार्ड को दो बराबर हिस्सों में बांट दें। एक हिस्से पर संख्या और दूसरे पर वस्तुओं के चित्र जैसे सब्जी, फल, आवागमन के साधन, पशु-पक्षी के चित्र चिपकाएं। चित्रों के स्थान पर माचिस की काड़ियाँ, बीज इत्यादि भी चिपकाएं जा सकते हैं। यह ध्यान रहे कि कार्ड के एक हिस्से में यदि एक संख्या अंकित है तो दूसरे हिस्से में दो वस्तुओं के चित्र हों। सब कार्ड बनाकर शिशुओं को मिलाकर जमाने के लिए कहें। नीचे एक नमूना दिया जा रहा है।
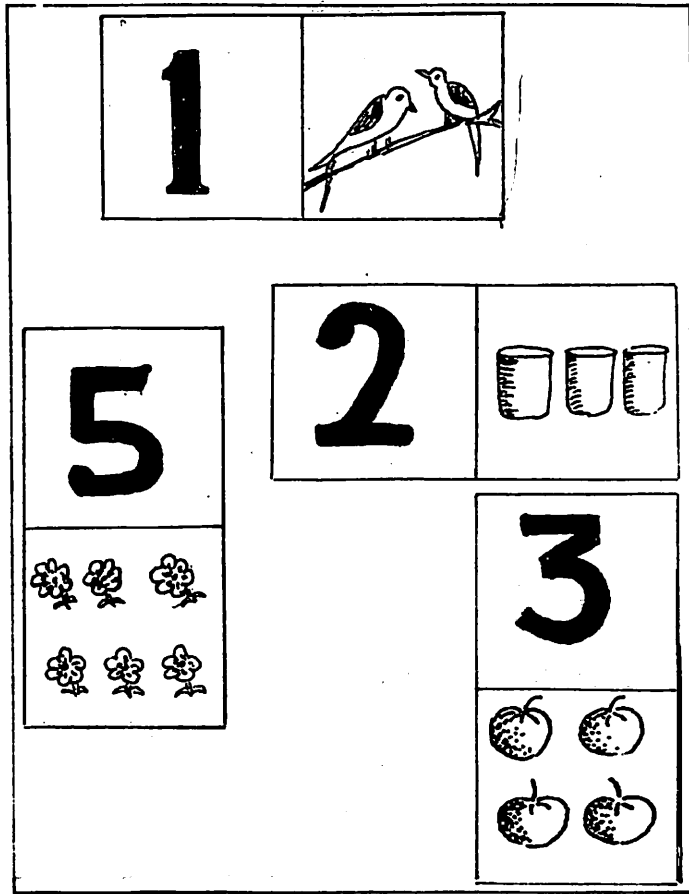
चित्र-17

तापमान

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 6 आयु समूह :-

1. शिशु गरम व ठंडा समझ सकता है।
2. गरम व ठंडे में अंतर कर सकता है।
3. गरम, थोड़ा गरम, बहुत गरम में अंतर कर सकता है।
4. गरम का संबंध सूर्य व आग की गर्मी से जोड़ सकता है।
5. ठण्डा, थोड़ा ठण्डा, बहुत ठण्डा में अंतर कर सकता है।
6. बर्फ से ठण्डे का संबंध जोड़ सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 6 आयु समूह :-

1. शिशुओं से बातचीत करना। धूप में बैठने से गर्मी लगती है और छांव में बैठने से ठण्ड लगती है।
2. दोपहर के समय अधिक गर्मी लगती है और शाम के समय कम गर्मी लगती है।
3. अवलोकन करना कि गरमी पाकर घी, बर्फ आदि पिघलते हैं।
4. गरम और ठण्डे पानी के बर्तन को छूकर गरम और ठण्डे का अनुभव करना।
5. मौसम के अनुसार की जाने वाली क्रियाओं की चर्चा करना। जैसे-

सर्दी में	गर्मी में
1. ऊनी कपड़े पहनते हैं।	1. सूती कपड़े पहनते हैं।
2. धूप सेकते हैं।	2. ठण्डा पानी पीते हैं।
3. आग तपते हैं।	3. पंखे से हवा लेते हैं।

7. बुखार नापने के लिए थर्मामीटर का उपयोग किया जाता है। यह बताने के लिए गुड़ियाघर की गुड़िया का बुखार खिलौना थर्मामीटर से मापने का खेल खेलना।

कविता

शिशु- देखो डॉक्टर भली प्रकार।
मेरी गुड़िया पड़ी बीमार।
डाक्टर- ओ हो! इसको तेज बुखार।
सौ के ऊपर डिग्री चार।

8. शिशुओं को प्रयोग द्वारा बतलाना कि गर्मी पाकर बर्फ पिघलती है। मोमबत्ती जलने से पिघलती है।

9. सरल समस्याओं का समाधान शिशुओं से प्रश्न पूछकर करना जैसे-
   - धूप से बचने के लिए तुम क्या करोगे?
   - तुमको बहुत गर्मी लग रही है, गर्मी से बचने के लिए तुम क्या करोगे?
   - तुमको बहुत ठण्ड लग रही है, ठण्ड से बचने के लिए तुम क्या करोगे? आदि।

परिवेशीय अवधारणा

पशु और पक्षी

न्यूनतम अधिगम स्तरः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. शिशु पालतू जानवरों के नाम बता सकता है।
2. परिचित पक्षियों को पहचान कर उनके नाम बता सकता है।
3. पालतू और जंगली पशुओं में भेद कर सकता है।
4. पशु-पक्षी और कीट-पतंगों के शरीर की बनावट, रंग, बोली, घर, भोजन और आदतों को जान सकता है।
5. पशु-पक्षियों के बच्चों के बारे में जान सकता है। पशु को कैसे साफ रखते हैं व भोजन खिलाते हैं- जान सकता है।
6. पालतू जानवरों की देखभाल के बारे में बता सकता है।
7. पशु-पक्षियों को कष्ट नहीं पहुंचाना चाहिए, उन्हें मारना नहीं चाहिए- यह समझ सकता है।

क्रियाकलापः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. शिशु के आस-पास के जानवर, पक्षी, कीट-पतंगों का अवलोकन कराना।
2. चिड़िया, बया तोता, कठफोड़वा, आदि के घोंसले व मकड़ी के जालों का अवलोकन कराना।

3. पालतू पशु कहां रहते हैं इस पर बातचीत करना। मुर्गे-मुर्गी का दड़बा दिखाना।
4. जानवरों और पक्षियों के चित्र दिखाकर उनकी पहचान कराना।
5. इनके चित्र एकत्र करना और उनमें से पालतू पशुओं व जंगली पशुओं के चित्र छांटना।
6. पशु-पक्षियों के चित्र-कार्ड बनाकर उन्हें 3-4 टुकड़ों में काटना और शिशुओं को उन्हें देकर जोड़ने को कहना।
7. प्रत्येक जानवर की एक विशेषता होती है, जिसके आधार पर वह पहचाना जाता है। इस पहचान के बारे में शिशुओं से पूछना।
8. पशु-पक्षियों की बोलियां बोलना। ''आओ बूझे'' खेल खिलाना। बच्चों को गोल घेरे में खड़ा करना। पशु पक्षियों के चित्र-कार्ड बीच घेरे में रखना। कार्यकर्ता के दाहिनी तरफ खड़े बच्चे से खेल प्रारंभ करना। कार्यकर्त्ता बच्चे का नाम लेकर घेरे के बीच रखे चित्र को उठाने तथा उसकी बोली बोलने के लिए कहेगी। बच्चा चित्र उठाएगा। पशु या पक्षी का नाम बताएगा और उसकी बोली बोलेगा। सही नाम बताने व बोली बोलने पर तालियां बजाना। नहीं बता सकने पर दुबारा कराना। इसी प्रकार सब बच्चों से करवाना। कार्यकर्त्ता स्वयं भी इसी प्रकार के अन्य खेल विकसित कर खेल खिलवा सकती है।
9. पशु-पक्षियों की उपयोगिता के बारे में शिशुओं से वार्तालाप करना जैसे- गाय, कुत्ता, बिल्ली, बकरी, मुर्गा, चिड़िया, कौवा आदि।
10. जीवों और उनके घरों के चित्रों की जोड़ियां जमाना।

फल व सब्जियां

न्यूनतम अधिगम स्तरः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. शिशु उपयोग किए जाने वाले फलों और सब्जियों को पहचानता है व उनके नाम बता सकता है। स्वाद के आधार पर फलों का वर्गीकरण कर सकता है।
2. फलों और सब्जियों को देखकर उनके आकार बता सकता है।
3. सब्जियों व फलों के रंग बता सकता है।
4. मौसम के आधार पर सब्जियों व फलों के नाम बता सकता है।
5. काटकर और छीलकर खाये जाने वाले फलों व सब्जियों के नाम बता सकता है।
6. पानी के किनारे और पानी के अन्दर पैदा होने वाले फलों के नाम बता सकता है।

क्रियाकलापः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. शिशुओं को फल और सब्जियां दिखाकर उनके नाम पूछना।
2. चित्र व खिलौने दिखाकर सब्जियों और फलों में अंतर स्पष्ट करना।
3. फलों और सब्जियों की विशेषताओं को लेकर बनी पहेलियां बूझना जैसेः-

चित्र-18
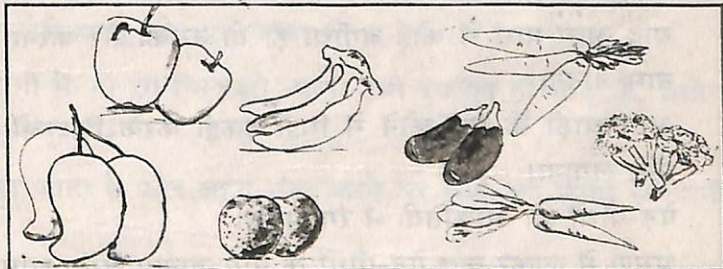
रंग मेरा लाल है, नरम खाल है।
अन्दर मीठा माल है, खट्टा मीठा स्वाद है। *(सेव)*

4. पूरक भोजन के समय सब्जी साफ करने का शिशुओं को अवसर दिया जावें। सब्जियों के गुणों के बारे में चर्चा करना।
5. आंगनवाड़ी में बच्चों से सब्जियों के पौधों को पानी दिलाना। सब्जी व फलों के बीज दिखाना।
6. सब्जियों की कविता जैसेः-

कद्दू काट मृदंग बनावें, नीबू काट मजीरा।
सात तुरैया मंगल गावें, नाचे बालम खीरा।।

7. पत्ते वाली सब्जी, छिलके वाली सब्जी, काटने वाली सब्जी और छीलने वाली सब्जी के चित्र एकत्र करना और जोड़ियां बनाना।
8. स्वांद के अनुसार फलों के चित्रों की जोड़ियां बनाना जैसे अमरूद, आम, पपीता, केला, सेव, अंगूर आदि।

पेड़ पौधों का जीवन

न्यूनतम अधिगम स्तरः-

3 से 6 आयु समूह :-

1. शिशु पेड़-पौधे व घास को पहचानता है।
2. शिशु पेड़-पौधे और घास में अन्तर समझ सकता है।
3. वह अपने परिवेश में पैदा होने वाले पेड़-पौधों के नाम जान सकता है।
4. वह पौधों की देखभाल कर सकता है।
5. वह समझता है कि बीज से पौधा बनता है।
6. पेड़ के अंगों के नाम बता सकता है।
7. खाद और पानी देने से पौधा बढ़ता है। यह समझ सकता है। जड़ और तने में अंतर करना जान सकता है।
8. वह फूलों को पहचान सकता है और उनके नाम बता सकता है।

क्रियाकलापः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. शिशु से पेड़-पौधे के बारे में बातचीत करना।
2. यदि आस-पास में कोई बगीचा हो तो उसकी सैर करना। पेड़- पौधों से परिचित कराना। उनके नाम जानना।
3. आंगनवाड़ी के एक कोने में मिट्टी इकट्ठी करके शिशुओं से बगीचे का माडल बनवाना, उसमें पौधे लगाना।
4. पेड़-पौधों की आकृतियों में रंग भरना।
5. भ्रमण में जाकर कुछ पेड़-पौधों के नाम जानना जैसे- आम, इमली, गेंदा, गुलाब, मिर्ची, टमाटर आदि।
6. पौधों व लताओं की पहचान करना तथा उनमें लगने वाले फलों फूलों के नाम जानना।
7. जमीन में बीज बोने से लेकर बीज अंकुरित होने और उसके पौधा बनने तक की क्रियाओं को जानना।

8. बीज के अंकुरित होने से लेकर पेड़ बनने की क्रिया को प्रकट करने वाले चित्रों को क्रम से जमाना।

9. पौधे में पत्ती, फल व फूल समय-समय पर लगते हैं- यह बच्चों को वार्तालाप, अवलोकन व चित्रों द्वारा समझाना। तना, टहनियां, पत्तियां, फल, फूल के अधूरे चित्र पूरे करना और कागज़ को मोड़ कर पेड़ या पौधा बनाना।

पानी और उसकी आवश्यकता

न्यूनतम अधिगम स्तरः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. पानी की आवश्यकता मनुष्य, पशु, पक्षी, पेड़-पौधे सभी को होती है। इसे शिशु समझ सकता है।
2. जल प्राप्त करने के स्थानों के नाम बता सकता है।
3. गंदे व साफ पानी को पहचान सकता है। उन में अन्तर कर सकता है।
4. पानी छानकर पीना चाहिए। गन्दा पानी नहीं पीना चाहिए। यह समझ सकता है।
5. नदी, तालाब, कुआं व बावड़ी आदि को साफ रखने की आवश्यकता समझ सकता है।
6. पानी के उपयोग के बारे में जान सकता है जैसे-पानी भोजन बनाने, कपड़े धोने, सफाई करने व पीने आदि के काम आता है।
7. पानी के जीवों के लिए पानी का महत्व समझ सकता है।

क्रियाकलापः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. पानी के साधनों के चित्र इकट्ठे करना। कुछ वस्तुएं जैसे नमक, शक्कर आदि पानी में घुल जाते हैं, करके दिखाना।
2. कुछ वस्तुएं पानी में नहीं घुलती है, जैसे-बालू इसे, प्रयोग कर दिखाना।
3. पानी का कोई रंग नहीं होता है। पानी में जो रंग मिलाओ, पानी उसी रंग का हो जाता है, प्रयोग करना।
4. गरम करने पर पानी भाप में बदल जाता है और बहुत ठंडा करने पर बर्फ बन जाता है। पानी उबालना और बर्फ दिखाना।
5. हल्की चीजें पानी पर तैरती है और भारी चीजें पानी में डूब जाती हैं। कागज की नाव और लोहे की कील पानी में डालकर तैरने व डूबने का प्रयोग करना।
6. पानी जिस बर्तन में भरो वह उसी बर्तन का आकार ले लेता है, प्रयोग करना।
7. शुद्ध पानी पारदर्शक (आर-पार दिखाई देना) होता है, की पहचान करना।

8. वर्षा से संबंधित गीत गाना। जैसे-

बादल भाई, बादल भाई,
कहां-कहां की दौड़ लगाई?
रंग तुम्हारा काला काला,
पहन कभी बिजली की माला।
उमड़-उमड़ कर घुमड़-घुमड़कर,
बरसाते हो पानी। बादल भाई.....

तनिक देर को तुम रुक जाओ,
फिर झर-झर की झड़ी लगाओ।
गरज-गरज कर बादल बोले,
हम नीचे आते हैं,
रहो नाचते तुम धरती पर,
हम वर्षा करते हैं।

हवा और उसकी आवश्यकता।

न्यूनतम अधिगम स्तरः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. शिशु हवा का अनुभव करता है। वह यह भी समझता है कि हमारे चारों ओर हवा है।
2. हवा में हल्की वस्तुएं उड़ जाती है। उन हल्की वस्तुओं के नाम बता सकता है, जिन्हें हवा उड़ाकर ले जाती है।
3. सभी प्राणियों व पेड़-पौधों को जीवित रहने के लिए हवा की जरूरत समझ सकता है।
4. नाक से सांस लेते हैं जान सकता है।

क्रियाकलापः-

3 से 6 आयु समुहः-

1. हथेली पर कागज के छोटे टुकड़े रख कर फूंक मारना।
2. तेज हवा किन-किन वस्तुओं को उड़ाकर ले जाती है। हाथ पंखे को जोर से चलाकर कागज, घूल व पत्ती को उड़ती हुई दिखाना।
3. कागज के हवाई जहाज बनाकर हवा में उड़ाना।
4. फिरकनी बनाना और हवा में घुमाना।
5. हवा में उड़ने का अभिनय कराना। नाक और मूंह बारी-बारी से बंद करके सांस लेने का खेल खेलना और सीखना कि सांस नाक से लेना चाहिए।
6. किसी वस्तु को जलाने के लिए हवा की आवश्यकता होती है। मोमबत्ती का खेल- जलती हुई

मोमबत्ती को कांच के गिलास से ढक देवें। कुछ समय बाद मोमबत्ती बुझ जावेगी जबकि बिना ढकी मोमबत्ती जलती रहेगी।

7. हवा-गीत अभिनय के साथ गाना।

8. पतंग या कागज के टुकड़े उड़ाकर हवा के खेल खेलना।
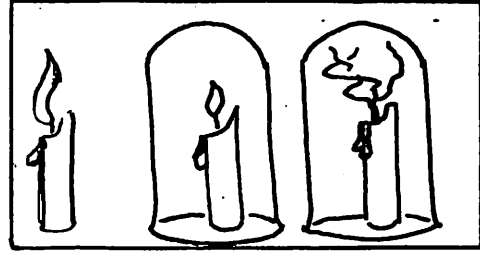
चित्र-19

आकाश और पृथ्वी

न्यूनतम अधिगम स्तरः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. शिशु आकाश पहचान सकता है।
2. आकाश में सूरज चांद और तारे देख सकता है।
3. वह बादल देख सकता है। बिजली चमकती है, इंद्रधनुष दिखाई देता है, आकाश में बादलों से वर्षा होती है बता सकता है।
4. सूरज उदय होता है, अस्त होता है, बता सकता है।
5. चांद और तारे शाम को तथा सूरज दिन में दिखाई देता है, बता सकता है।
6. शिशु जमीन पहचान सकता है।
7. पहाड़ नदी, मैदान बता सकता है।
8. जमीन जो कि पृथ्वी का एक छोटा सा हिस्सा है, वह मिट्टी पत्थर रेत आदि से बनी है, समझ सकता है।

क्रियाकलापः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. शिशुओं को सूर्य, चन्द्रमा, तारों से संबंधित कहानियां, गीत, कविता सुनाना।
2. गीत

   सूरज एक, चन्दा एक,
   तारे वहां अनेक है।

   सूरज दिन में चम-चम चमके,
   रात में चंदा एक है।

   झिलझिल करते तारे देखो,
   उनकी चलती रेल है।
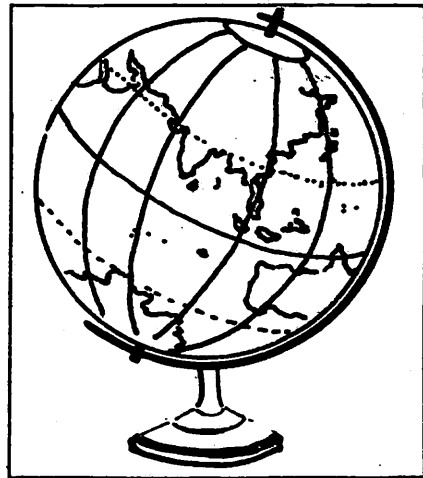
चित्र-20

3. कागज काट कर, सूरज, चन्द्रमा, तारे बनाना और नीले कागज पर इन्हें चिपकाना।
4. शाम के समय आकाश में चांद और तारे देखने के लिए शिशु को कहना और दूसरे दिन वार्तालाप करना। चांद दिन प्रतिदिन घटना और बढ़ता है इसके चित्र दिखाना, अवलोकन कराना।
5. शिशुओं से प्रश्न पूछनाः-

- दिन में तारे क्यों नहीं दिखाई देते हैं?

- दिन में रोशनी किससे मिलती है? आदि।
- शिशु को पृथ्वी की कल्पना नहीं है, क्योंकि वह पूरी पृथ्वी को नही देख सकता है। अतः उसे जमीन पर स्थित पहाड़, मैदान, तालाब, नदी, मिट्टी व पत्थर आदि की जानकारी भ्रमण अथवा चित्रों द्वारा देना। ग्लोब व चित्र दिखाना।

मौसम व ऋतुएं

न्यूनतम अधिगम स्तरः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. शिशु गर्मी, सर्दी और बरसात के मौसम समझ सकता है।
2. बरसात में बादलों से पानी गिरता है। गर्मी में प्यास अधिक लगती है और ठंड में गरम व ऊनी कपड़े पहने जाते हैं समझ सकता है।
3. बरसात में पानी, बादल की गरजन और बिजली की चमक का संबंध जान सकता है। गर्मी में सूरज जल्दी निकलता है और देर से डूबता है तथा कपड़े जल्दी सूख जाते हैं, बता सकता है।
4. गर्मी, सर्दी और बरसात की कुछ विशेषताओं को समझ सकता है। अन्तर बता सकता है।
5. वह अलग-अलग ऋतुओं में पैदा होने वाले फलों के नाम जान सकता है।
6. मौसम के त्यौहारों के नाम बता सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 6 आयु समूहः-

1. मौसम बदलने पर खान-पान, कपड़े व दिनचर्या किस प्रकार बदल जाते हैं पर बातचीत करना।
2. निम्नलिखित चार्ट के अनुसार चित्र-कार्ड बनाकर शिशुओं से जमानाः-

गर्मी	बरसात	सर्दी
सूती कपड़े	छाता	ऊनी कपड़े
पंखा	नाचता मोर	आग तापना
आम	केले	चाय
आइसक्रीम	वर्षा	दीपावली
शरबत	राखी	बेर/अमरूद

कविता

चैत माह में कोयल बोली, बैसाखी की शान निराली।
जेठ माह में खाओ आम, आषाढ़ रखे वर्षा को थाम।
सावन आया पानी लाया, भादों, ककड़ी, भुट्टे लाया।
कुआर माह ने धूम मचाई, कार्तिक में दीवाली आयी।
अगहन ठंडी में ठिठुराएँ, पूस माह पतंग उड़ाएँ।
माघ माह आए शिवरात्रि, फागुन में होली है आती।

घर और पड़ोस

न्यूनतम अधिगम स्तरः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. शिशु अपना नाम, घर के सदस्यों का नाम, व घर का पता बता सकता है।
2. वह अपने पास पड़ोस में रहने वाले लोगों के बारे में बता सकता है।
3. शिशु आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ता का नाम बता सकता है।
4. माता-पिता क्या काम करते हैं, बता सकता है।
5. घर के सदस्यों के काम काज के बारे में बता सकता है।

क्रियाकलापः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. शिशु से उसके घर और पास-पड़ोस के बारे में बातचीत करना।
2. कठपुतली के खेल खिलाना-कामगारों के काम का अभिनय करना।
3. घर-घर का खेल खेलना।
4. रिश्तेदारों के नाम व उनके व्यवसाय, नौकरी तथा कहां रहते हैं, के विषय में वार्तालाप करना।

आवागमन के साधन

न्यूनतम अधिगम स्तरः-

3 से 6 आयु समूह

1. सड़क पर आने-जाने के साधनों को पहचान सकता है।
2. बैलगाड़ी, सायकिल, मोटर सायकिल, बस आदि वाहनों के नाम बता सकता है।
3. पानी पर चलने वाले और हवा में उड़ने वाले साधनों के नाम बता सकता है।
4. गति के आधार पर आने-जाने के साधनों की तुलना कर सकता है।
5. पैट्रोल, डीजल, बिजली व कोयला से चलने वाले साधनों के नाम बता सकता है।
6. बोझा ढोने वाले पशुओं के नाम बता सकता है।
7. बोझा ढोने वाले पशुओं की चाल की नकल कर सकता है।
8. सड़क पर चलने के सामान्य नियमों पर बातचीत कर सकता है।

क्रियाकलापः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. घर में आंगनवाड़ी तक आते समय शिशु ने कौन-कौन से वाहन देखे के बारे में बातचीत करना।
2. जमीन, पानी और हवा के साधनों के चित्र-कार्डों बताना, उनकी जोड़ियाँ बनाना और समूह बनाना।
3. घोड़ा चलने (बटक-बटक) हवाई जहाज उड़ाने (घुर्र-घुर्र) और रेलगाड़ी चलने (छुक-छुक) की आवाज की नकल करना।

4. दूरी के आधार पर वाहनों के चित्र छाँटना। शिशुओं से प्रश्न करना जैसे-घर से नानी के गांव (शिशु से पूछकर) तक जाना हो तो कैसे जाओगे, पैदल, सायकल, मोटर, रेलगाड़ी से आदि।
5. गति के आधार पर आने जाने के साधनों की तुलना करना और उनके चित्र-कार्ड उनकी गति के क्रम से जमाना जैसे हवाई जहाज सबसे आगे, रेलगाड़ी उसके पीछे आदि।
6. वाहन-चालक तथा उनके वाहनों के कार्डों की जोड़ी बनाना। जैसे- बैलगाड़ी- गाड़ीवान, घोड़ा- घुड़सवार, हवाई जहाज-पायलट, बस-ड्राइवर, रेलगाड़ी-चालक आदि।
7. वाहन किस चीज से चलते हैं जैसे-पेट्रोल, डीजल-कोयला व बिजली से आदि पर बातचीत करना और डोमीनोज के खेल खेलना।

चित्र-21

8. शिशुओं को पंक्ति में खड़ाकर रेलगाड़ी का खेल खेलना, गीत गाना, अभिनय करना।

गीत

रेलगाड़ी मेरा नाम, छुक-छुक चलना मेरा काम।
आओ बच्चों जल्दी आओ, गाड़ी चलने वाली है।
अगला स्टेशन आयेगा, इंजिन खाना खायेगा।
हम भी पूड़ी खायेंगे, छुक-छुक करते जायेंगे।
रेलगाड़ी मेरा नाम छुक-छुक करना मेरा काम।

9. बस, हवाई जहाज, तागा चलाने का अभिनय करना।

समुदाय की सहायता करने वाले

न्यूनतम अधिगम स्तरः-

3 से 6 आयु समूहः-

शिशु बता सकता है कि कौन-कौन से लोग हमारे लिए काम करते हैं और उपयोग में आने वाली चीजें बनाते हैं जैसे-धोबी, सुनार, लुहार, दर्जी, कुम्हार, मोची, नाई, जुलाहा, पुलिस, डाक्टर, शिक्षक, नर्स और डाकिया आदि।

क्रियाकलापः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. डाक्टर, नर्स, शिक्षक, विद्यार्थी का खेल खेलना।

2. डाक्टर, नर्स, डाकिया, वकील, पुलिस, दर्जी, धोबी, लुहार, मोची आदि के चित्र दिखाकर उनकी पहचान कराना।
3. डाक्टर, नर्स, डाकिया व शिक्षक के कार्यों का अभिनय कराना।
4. डाकघर, दर्जी की दुकान, अस्पताल, प्राथमिक शाला का भ्रमण कराना और वहां काम आने वाली वस्तुएं दिखाना। उनके नाम बताना।
5. चिट्ठी, कार्ड, अंतर्देशीय पत्र तथा लिफाफा दिखाना और उन्हें इकट्ठा कराना। टिकिट इकट्ठा करना।

चित्र-22

6.

कविता

एक मित्र को पत्र लिखा था,
शायद पता गलत लिखा था।
इसकी खोजबीन कर लेना,
जल्दी उसका उत्तर देना।

7. सिलाई-मशीन, कपड़े, कैंची, सुई, धागा, थर्मामीटर, दवाई, इंजेक्शन, पैन, पुस्तकें आदि के चित्र इकट्ठे करना।
8. काम करने वाले व्यक्तियों तथा उनके द्वारा उपयोग में लाई जाने वाली चीजों के चित्रों की जोड़ियां बनाना।
9. ताश का खेल

त्यौहार

न्यूनतम अधिगम स्तरः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. घर में मनाए जाने वाले त्योहारों के नाम बता सकता है।
2. घरों में त्यौहार किस प्रकार मनाए जाते हैं, बता सकता है।
3. त्यौहार पर खुश होने के कारण बता सकता है।
4. कुछ मिठाईयों के नाम बता सकता है।

क्रियाकलापः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. दीपावली, क्रिसमस और ईद के त्यौहारों पर लोग एक दूसरे को शुभकामनाओं के कार्ड भेजते हैं। शिशुओं से ऐसे कार्ड एकत्र करवाकर उनका एलबम बनवाना।
2. राखी के त्यौहार के लिए बच्चों से राखी बनवाना।
3. रंग-बिरंगी राखी एकत्र करना।
4. दीपावली, दशहरा, ईद, क्रिसमस जैसे त्यौहार आंगनवाड़ी में मनाना।
5. फूल, पत्ती, चित्र, चिपकाकर बधाई कार्ड बनाना और एक दूसरे को देना।
6. त्यौहारों में खायी जाने वाली मिठाइयों के चित्र एकत्र करना।

7. त्यौहारों के गीत गाना, त्यौहार मनाने का अभिनय करना।
8. दीपावली के लिए मिट्टी के दिये एवं खिलौने बनाना।

गीत

आई दिवाली आई, लड्डू, पेड़े, बर्फी लाई।
जगमग जगमग दीपक जलते, अनार, पटाखे फट-फट चलते।
मुन्नी ने फुलझड़ी चलाई, खूब खा रहा, अनिल मिठाई।
मोहन लाया नये खिलौने, सोहन इमरतियों के दोने।
वन से राम इसी दिन आए, इसीलिए ये दीप जलाए।

9. त्यौहारों से संबंधित कहानियां सुनाना।
10. समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और पुराने केलेन्डरों से चित्र काटना और चिपकाना, चित्रों की जोड़ियां बनाना।
11. बच्चों के जन्म दिन मनाना और कार्ड बनाना।
12. 15 अगस्त, 26 जनवरी आदि राष्ट्रीय पर्व व स्थानीय महापुरुषों के जन्म-दिन मनाना।

स्थिति की अवधारणा

न्यूनतम अधिगम स्तरः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. शिशु घर, मुहल्ला तथा गांव के संदर्भ में स्थान का अर्थ समझ सकता है।
2. अन्दर और बाहर समझता है।
3. ऊपर और नीचे समझता है।
4. इसके 'ऊपर' उसके नीचे का अर्थ जान सकता है।
5. शिशु-अन्दर-बाहर, ऊपर-नीचे, आगे-पीछे, दोनों तरफ, और दोनों के बीच में स्थितियों को समझ सकता है।
6. शिशु दाएं-बाएं, इधर-उधर को समझ सकता है।

क्रियाकलापः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. कई स्थितियों की जानकारी देने के लिए कार्यकर्ता शिशुओं से निम्नलिखित गीत गवाएं, गीत के अनुसार शरीर के अंगों को हिलाने के लिए कहें।

दाहिना हाथ अंदर करो, दाहिना हाथ बाहर करो।
थोड़ा-थोड़ा इसे हिलाओ और गोल घूम जाओ।।
बाया हाथ अंदर करो, बायां हाथ बाहर करो।
थोड़ा-थोड़ा इसे हिलाओ और गोल घूम जाओ।।

2. टेबल के नीचे से रेंगने तथा दो स्टूलों के बीच में से निकलने का खेल खेलना।
3. दो या तीन वाक्यों के सरल आदेश देना, जैसे-सब बच्चे अर्ध गोले में बैठ जाओ। गेंद को हथेली के ऊपर रखो, टोकनी को दूरी पर रखो, टेबल के नीचे रखी गेंद उठाओ आदि।
4. शिशुओं के दाएं और बाएं हाथ में झंडिया देकर उन्हें कभी दाएं और कभी बाएं हाथ ऊपर करने को कहना।

5. वस्तुओं को बाएं से दाएं और फिर दाएं से बाएं जमाने को कहना।
6. शिशुओं को दायी और तथा बायीं ओर बैठे हुए शिशुओं का नाम बताने को कहना।
7. चित्र देखकर स्थिति बताना।
8. विभिन्न चीजों को आगे-पीछे जमाना।
9. रेलगाड़ी का खेल खिलाना। आगे इंजन पीछे गार्ड का डिब्बा बीच में डिब्बे।
10. गीतः-

मोहन ग्वाले की गाएं,
रोज सबेरे चरने जाएं।
कोई इधर
कोई उधर
श्याम आगे,
गौरी पीछे
चन्दू देखे दाएं बाएं,
मोहन ग्वाले की गाएं।

समय की अवधारणा

न्यूनतम अधिगम स्तरः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. शिशु दैनिक क्रियाओं से सुबह, दोपहर, शाम, और रात का अनुमान लगा सकता है।
2. सूर्योदय से प्रातःकाल का और सूर्यास्त से संध्या का होना समझ सकता है।
3. चित्र देखकर, सुबह, दोपहर और रात्रि बता सकता है।
4. जल्दी और देर के अर्थ को (समय के संदर्भ में) समझ सकता है।
5. दैनिक क्रियाओं को घंटे के संदर्भ में समझ सकता है।
6. घड़ी देखकर समय मालूम किया जाता है यह जानता है।
7. घड़ी के बारे में बना सकता है।
8. महीनों के नाम बता सकता है।
9. दिनों के नाम बता सकता है।

क्रियाकलापः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. शिशु के दैनिक कार्यों से संबंधित वार्तालाप करना, जैसे- तुम दांत किस समय साफ करते हो?
2. पहले और बाद वाले प्रश्न पूछकर समय के संदर्भ में इनका अर्थ समझाना। जैसे- तुम पाठशाला जाने के पहले क्या करते हो?

3. कहानी कहकर सुबह, दोपहर, शाम और रात होने के क्रम को समझाना।

4. पहले और बाद का प्रयोग करते हुए क्रियाएं करवाना जैसे-पहले कहानी सुन लो बाद में सुनाना। पहले चित्र इकट्ठा कर लो, बाद में जमा लेना।

5. एक व्यक्ति बस में बैठा है। दूसरा व्यक्ति साइकिल पर जा रहा है। इस प्रकार के चित्र शिशुओं को दिखाकर पूछना कि कौन पहले पहुंचेगा और कौन बाद में।

6. दिनचर्या संबंधी चित्र-कार्ड क्रम से जमाना।

7. जल्दी व देर की अवधारणा बताने वाले चित्र-कार्ड बताना जैसे- एक चित्र में नल से पानी की मोटी धार गिर रही है, नीचे बाल्टी लगी है। दूसरे चित्र में बाल्टी में नल से बूंद-बूंद पानी गर रहा है। अब पूछिए कि कौन सी बाल्टी में पानी जल्दी भरेगा और कौन सी में देर से।

8. एक बड़ी और एक छोटी दो जलती हुई मोमबत्तियां शिशुओं को दिखाकर पूछना कि कौन सी मोमबत्ती पूरी तरह पहले जल जावेगी और कौन सी बाद में।

9. समय को पढ़ो खेल खिलाना, एक शिशु घड़ी मिलाएं और दूसरा समय बताए।

कविता

ग्यारह बजकर पांच मिनिट पर आया भालू दफ्तर।

आंख चढ़ाकर नाक फुलाकर, बिगड़े साहब बन्दर।

भालू बोला कभी न होगी एक मिनिट की देरी।

नई घड़ी दिलवा दो साहब, बिगड़ गई है मेरी।।

प्रेम से ही दुनिया को पोषण मिलता है। प्रेम सर्वव्यापी है, प्रेम सहनशील है, प्रेम शुभचिन्तक है, प्रेम एकता का साधक है। बल्कि, प्रेम एक जादू ही है।

— गिजुभाई

भाषायी विकास

शिशु अपने घर पर, अपने परिवार के लोगों तथा संगी साथियों के संपर्क में आने पर बोलना तथा बातचीत करना सीखता है। पहले वह कई तरह की ध्वनियां, फिर शब्द और छोटे वाक्य बोलना सीखता है। जैसे-जैसे उसका संपर्क बढ़ता जाता है, उसकी शाब्दिक क्षमता में वृद्धि होती जाती है। धीरे-धीरे वह अपनी बात पूरे वाक्य में व लगातार बोल कर कहने लगता है। अतः आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ता को चाहिए कि वह बातचीत के द्वारा एक ओर तो शिशु के शब्द भंडार में वृद्धि करें दूसरी ओर उसे पूर्ण वाक्यों के द्वारा अपनी बात कहने के लिए उत्साहित करें। भाषा का विकास सुनने और बोलने से होता है। आंचलिक बोली से खड़ी बोली या मानक हिन्दी शिशुओं को धीरे-धीरे सिखाई जाये। शिशु में अपनी बात कहने और दूसरे की बात सुनने व सुनकर समझने की क्षमता विकसित की जाए। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता शिशु को बोलने का अवसर दे। वह उन्हें सरल, स्पष्ट व शुद्ध भाषा में ऐसी कहानियां व कविताएं सुनाएं तो उनको आनन्द दे सकें। पशु-पक्षियों की कहानियां हाव-भाव के साथ सुनाई जाएं। कहानी के पात्रों का उनसे अभिनय कराएं। ऐसी कविताएं व गीत सिखाएं जाएं जो रूचिकर हो, उन्हें आनंद दे सकें और सुनकर याद कर लें तथा दोहरानें में उन्हें आनन्द आए।

शिशु भाषा कैसे सीखता है:-

शिशु भाषा सुनकर, बोलकर, अनुकरण (नकल) करके और दोहरा कर सीखता है। आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ता की भाषा सरल और उच्चारण साफ और सही होना चाहिए। प्रारंभ में कुछ शिशु तुतला कर बोलते हैं। कार्यकर्त्ता को उनकी बोली की नकल करके उन्हें शर्मिन्दा नहीं करना चाहिए। बल्कि उन्हें सही बोलकर बताएं, बार- बार अभ्यास कराएं और अपनी बात कहने का अवसर दें। सुनी हुई बात को समूह में सुनाने के लिए प्रोत्साहित करें।

भाषायी विकास के द्वारा शिशुओं में निम्नांकित कुशलताएं विकसित होती हैं:-

अ- सुनना

ब- बोलना

स- पढ़ने की पूर्व तैयारी

\- लिखने की पूर्व तैयारी

सुनना

न्यूनतम अधिगम स्तर:-

3 से 6 आयु समूह:-

1. बालक परिवेश (आस-पास) की ध्वनियों को सुनकर पहचान सकता है।
2. कहानी ध्यानपूर्वक सुन सकता है।
3. पशु-पक्षियों की बोलियां सुनकर, नकल उतार सकता है।
4. गीत सुनकर गा सकता है। गाकर सुना सकता है।
5. वाक्य सुन कर दोहरा सकता है।
6. दो या तीन वाक्यों वाले निर्देश सुनकर उनके अनुसार कार्य कर सकता है।
7. ध्वनियां सुनकर ध्वनि उत्पन्न करने वाली वस्तु के नाम बता सकता है।
8. आवाज सुनकर बोलने वाले को पहचान कर उनके नाम बता सकता है।

9. ध्वनि को सुनकर उसके उतार-चढ़ाव की नकल कर सकता है।

10. सुनाई गई कहानी की घटनाओं को दोहरा सकता है।

11. नए शब्द सुन कर अभ्यास से उनका प्रयोग वाक्यों में कर सकता है।

12. सरल शब्द सुनकर उनके पहले अक्षर की ध्वनि पहचान सकता है।

क्रियाकलापः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. परिवेश के पशु-पक्षियों को पात्र बनाकर छोटी-छोटी कहानियां सुनना और सुनाना।
2. पशु-पक्षियों पर चार-छः पंक्तियों की कविताएं सुनाना।
3. पहेलियां सुनना और बूझना।
4. समान ध्वनि वाले शब्दों की कविता सुनाना।

   जैसे- बादल गरजे धम-धम-धम।
   बिजली चमके चम-चम-चम।
   पानी बरसे छम-छम-छम।
   ढोल बजाओ ढम-ढम-ढम।
5. कुत्ते का जन्म-दिन, बंदर की सगाई, हाथी की बारात, जंगली पशुओं की होली, बिल्ली की दिवाली आदि पर कविताएं व गीत सुनाना व सुनना।

पहेली बूझनाः-

अः- भौं-भौं, भौं-भौं करता हूं,
दूध-रोटी-खाता हूं। (कुत्ता)

ब- काला मेरा रंग है,
कांव-कांव करता हूं। (कौवा)

स- आसमान में चमचमाना,
ठंड में गर्मी देना।
दिन भर चलना।
शाम हुई घर जाना।
बूझो बूझो कौन है? (सूरज)

द- काली-काली मां, लाल-लाल बच्चे
जिधर जाती मां उधर जाते बच्चे
छुक-छुक करती सीटी देती
बतलाओ वह कौन है? (रेलगाडी)

चित्र पहेली- जीव जन्तुओं के चित्र शिशुओं को दिखाना उनके आधार पर उसके शरीर की बनावट, रंग, भोजन, बोली व आदतों के बारे में बच्चों से वार्तालाप करना।

अधूरी कहानी पूर्ण करना- पहले सुनाई गई कहानी के तीन-चार वाक्य बोलकर बाकी कहानी शिशुओं से पूरी करना। धीरे-धीरे शिशुओं में नई कहानी बनाने और सुनाने की क्षमता विकसित करना।

समान ध्वनि वाले शब्द

जैसे- कार्यकर्ता बोले-रेल

बच्चे-खेल

कार्यकर्ता-केला

बच्चे-मेला, रेला, चेला, थैला

अलग-अलग प्रकार की ध्वनियां सुनाने को कहना जैसे-सीटी, घंटी, ढोलक, बांसुरी की ध्वनियां।

अन्य भाषायी खेल खिलाना जैसे- रेडियो व टी.वी. पर आने वाले विज्ञापनों की नकल कर सुनना जैसे- गले में खिंच-खिंच विक्स की गोली लो खिंच-खिंच दूर करो आदि।

बोलना

न्यूनतम अधिगम स्तरः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. शिशु सुनी हुई बात को बोल सकता है।
2. सरल छोटे वाक्य दोहरा सकता है।
3. सुनी हुई कहानी के कुछ अंश दोहरा सकता है।
4. बालगीत सुनकर उनकी पंक्तियां लय के साथ गा सकता है।
5. कुछ कठिन शब्दों का उच्चारण कर सकता है।
6. बातचीत में भाग ले सकता है।
7. अपनी आयु के बच्चों के समूह में बातचीत कर सकता है।

क्रियाकलापः-

3 से 6 आयु समूहः-

आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ता शिशुओं को सही बोलना सिखाए। उनसे बातचीत करे और प्रश्न पूछने के अवसर दे। शिशु स्वभाव से जिज्ञासु होता है। वह ढेर सारी बातें एक साथ जानने को बेचैन रहता है। अतः कार्यकर्त्ता बारी-बारी से उसके सभी प्रश्नों के उत्तर देवे और उसकी शंकाओं का समाधान करे। उसे टालें नहीं और न ही उसे प्रश्न पूछने पर डांटे।

शिशु से बातचीत के लिए उसके आसपास से संबंधित वस्तुएं पेड़-पौधे, जीव-जन्तु, चांद, सूरज तारे आदि को आधार बनावें। पहले शिशु अनुकरण से भाषा सीखता है। धीरे-धीरे अनुभवों के आधार पर उसके शब्द भण्डार में वृद्धि होती जाती है। उसका उच्चारण स्पष्ट व शुद्ध होता जाता है और वह नये शब्दों का प्रयोग कर सार्थक वाक्य बनाने लगता है।

अ-शब्द भंडार में वृद्धि

जैसे ही शिशु स्पष्ट बोलने लगता है। वह तेजी से नये-नये शब्दों को सीखने की कोशिश करता है। वह किसी शब्द को पहली बार सीखकर उन्हें बार-बार बोलकर, आनन्द और गर्व का अनुभव करता है। ऐसे समय में आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ता को उसे बातचीत के द्वारा प्रोत्साहित करना चाहिए और नये-नये शब्दों से परिचित कराना चाहिए। एक मोटे अनुमान के अनुसार 5 वर्ष की उम्र पूरी करते-करते शिशु लगभग एक हजार शब्द सीख लेता है। शिशु को घर, आस-पास व स्वयं से संबंधित शब्दों से परिचित

कराना चाहिए। नीचे कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं:-

1. शरीर से संबंधित शब्द:-
   शरीर के प्रमुख अंगों के नाम जैसे- हाथ, पैर, नाक, कान, आंख, पेट और सिर आदि।
2. शरीर के अंगों के छोटे हिस्सों से संबंधित शब्द:-
   जैसे- भौंहे, पलकें, नाखून आदि।
3. पालतू पशु-पक्षियों के नाम वाले शब्द:-
   जैसे- गाय, बैल, बकरी, घोड़ा, चिड़िया, कबूतर, मुर्गा आदि।
4. जंगली पशुओं के नाम वोल शब्द:-
   जैसे- शेर, हिरण, लोमड़ी, भालू, हाथी, खरगोश आदि।
5. आकाश से संबंधित शब्द:-
   जैसे- सूरज, चांद, तारे, बादल आदि।
6. धरातल से संबंधित शब्द:-
   जमीन, पहाड़, मैदान, खेत, सड़क, नदी आदि।
7. पेड़, पौधे, फूल, फलों और सब्जी के नाम वाले शब्द:-
   जैसे- नीबू, आम, अमरूद, आंवला, नीम, पीपल, गुलाब, गेंदा, आलू, पालक, टमाटर, बैगन, मूली, गोभी, मटर आदि।
8. आवागमन के साधन वाले शब्द:-
   जैसे- मोटर, साइकिल, रेलगाड़ी, हवाई जहाज, नाव आदि।
9. अनाज व खाने पीने की चीजों के नाम वाले शब्द:-
   जैसे- गेहूं, चावल, दालें, चना, दूध, दही, शरबत आदि।
10. बर्तनों के नाम वाले शब्द:-
    जैसे- थाली, लोटा, कटोरी, गिलास आदि।
11. संज्ञा और विशेषण बताने वाले शब्द:-
    इसमें व्यक्ति और वस्तुओं के नाम और उनकी विशेषता बताने वाले शब्द आते हैं, जैसे- काली गाय, पीला फूल, भूरा कुत्ता, बड़ा हाथी, चालाक बिल्ली।
12. समुदाय के लिए काम आने वाले तथा उनके काम आने वाली चीजों के नाम-शब्द जैसे- धोबी, लुहार, दर्जी, कुम्हार, मोची, नाई, जुलाहा, पुलिस, डॉक्टर, नर्स, डाकिया, शिक्षक तथा साबुन, कपड़े हथौड़ा, सिलाई मशीन, सुई, कैंची आदि।
13. अन्य शब्द:- विद्यालय, मकान, अस्पताल, डाकघर, दुकान, परिवार के सदस्य और रिश्तेदार, फर्नीचर, बिजली से चलने वाली चीजें, वस्त्र, हमारे लिए काम करने वाले लोग व त्यौहारों से संबंधित शब्द।

न्यूनतम अधिगम स्तर:-

3 से 6 आयु समूह:-

1. शिशु शब्द सुनकर दोहरा सकता है।
2. उनका संबंध किसके साथ है यह पहचान सकता है।
3. शब्दों का प्रयोग करना जान सकता है।

क्रियाकलापः-

3 से 6 आयु समूहः-

परिवार के सदस्यों, भोजन की चीजों, फल, पशु, पक्षी, सूरज, चांद, तारे, आज का मौसम आदि के बारे में शिशुओं से बातचीत करना और उन्हें बोलने का मौका देना।

देखो और बताओः-

1. तरह-तरह के रंगीन चित्र दिखाकर शिशुओं से उनके बारे में पूछना और प्रश्न पूछने का अभ्यास कराना।

चित्र-23

मुक्त खेलः-

रेल गाड़ी, डाक्टर और बीमार गुड़िया, गुडिया घर आदि, खेल खेलना। इन खेलों को खेलते समय शिशु सुने गये नये शब्दों का प्रयोग करते हैं।

भ्रमणः-

शिशुओं को ग्राम के आस-पास की चीजें दिखाने के लिए भ्रमण पर ले जावें। रास्ते में दिखाई देने वाली चीजों के बारे में उन्हें बतावें तथा उन्हें बोलने के लिए प्रोत्साहित करें।

कहानीः-

चित्र, कठपुतली तथा खिलौने दिखाकर कहानी कहना।

अनुकरणः-

पशु-पक्षियों की आवाज की नकल उतारना जैसे- गाय का रंभाना, चूहे की चूं-चूं, घोड़े की हिन-हिन, तोते की टें-टें, मेढ़क की टर्र-टर्र आदि।

बाल कविता व गीतः-

चार पंक्तियों वाले बाल-गीतों और कविताओं से शुरू करते हुए धीरे-धीरे आठ पंक्तियों तक के गीत गाना व कविता कहना। गीतों में लय हो ताकि शिशु उन्हें बोलने व सुनने में आनंद का अनुभव करें।

अभिनयः-

पशुओं की बोली व चाल की नकल करना।

शिशुओं को आप, जी, आइए, बैठिए आदि जैसे आदर-सूचक शब्दों का प्रयोग करना सिखाना। शिशुओं को अभिनय के साथ नीचे लिखी कविता कहना सिखाना।

कहीं फेंक केले का छिलका, रीझे भालू राम।
चाह रहे थे कोई फिसलकर, जल्दी गिरे धड़ाम।
खों-खों करके बंदर आया, भागे ताबड़-तोड़।
गिरे फिसलकर खुद छिलके पर, हाथ लिया अपना ही तोड़।

शिशुओं से गीत अकेले और समूह में गवाना।

वाक्य बनाना और बोलना।

न्यूनतम अधिगम स्तरः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. शिशु वाक्य सुनकर दोहरा सकता है।
2. परिचित शब्दों से नए वाक्य बना सकता है।
3. एक वाक्य को सुनकर उससे मिलता जुलता वाक्य बना सकता है।
4. कुछ कठिन शब्दों के प्रयोग से वाक्य बना सकता है।
5. चित्र को देखकर वाक्य बना सकता है।
6. सुनी हुई कहानी कह सकता है।
7. कल्पना का सहारा लेकर कहानी बना सकता है। अधूरी कहानी पूरी कर सकता है।
8. संज्ञा विशेषण और क्रिया वाले वाक्य बोल सकता है।

क्रियाकलापः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. नये शब्द सीख कर उनका बातचीत में प्रयोग करना।
2. आओ वाक्य बनाएं खेल खेलना।
3. चित्र-कार्ड व वस्तु देखकर वाक्य बोलना।
4. क्रिया प्रधान वाक्य बोलने का खेल, एक शिशु से क्रिया कराना और दूसरा शिशु देखकर वाक्य बोले। क्रियाओं से संबंधित चित्र-कार्ड तैयार करना। दो टीमें बनाना। पहली टीम के प्रत्येक बच्चों को एक एक चित्र-कार्ड देना। प्रत्येक बच्चा कार्ड के अनुसार क्रिया करेगा और दूसरी टीम का जोड़ीदार बच्चा उस क्रिया को वाक्यों में बताएगा। सही वाक्य बनाने पर ताली बजाकर उसे प्रोत्साहित करना।
5. शिशुओं के पूर्व ज्ञान के आधार पर सरल विषयों पर छोटे-छोटे वाक्य बनाना।

पढ़ने की पूर्व तैयारी

न्यूनतम अधिगम स्तरः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. शिशु चित्र को देखकर बतला सकता है कि कौन क्या कर रहा है।
2. चित्र में अंकित दृश्य को पढ़ सकता है।
3. चित्र के पात्रों की विशेषताओं जैसे- वेशभूषा उनके रंग, हाव-भाव, क्रियाकलापों को बता

सकता है। शिशु अन्य लोगों की मुख-मुद्रा को देखकर क्रोध, प्रेम, भय के भाव पढ़ सकता है।

4. चित्र में अंकित दृश्य को देखकर उनका वर्णन कर सकता है।
5. चित्र को देखकर अपनी कल्पना से कहानी सुना सकता है।

क्रियाकलापः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. चित्र देखकर बताना।
2. चित्रों को पढ़ने की प्रतियोगिता कराना।
3. सचित्र-पुस्तकें देखकर कहानी कहना।
4. फलालेन-बोर्ड पर लगे फ्लेश-कार्ड देखकर कहानी सुनाना।

ध्वनि सुनना, पहचानना और उच्चारण करना

न्यूनतम अधिगम स्तरः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. आस-पास के परिवेश में उत्पन्न ध्वनियों को सुनकर पहचान सकता है।
2. सुनी गई ध्वनियों की दिशा बता सकता है।
3. ध्वनि सुनकर यह बता सकता है कि वह किसकी ध्वनि है।
4. ध्वनियों को दोहरा सकता है।
5. स्वर और व्यंजन की ध्वनियां दोहरा सकता है।

क्रियाकलापः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. बच्चों को घंटी, शंख, ढोल, मंजीरा, बांसुरी आदि की ध्वनियां सुनाना और इनकी पहचान कराना।
2. किसी व्यंजन से शुरू होने वाले शब्दों के चित्र दिखाकर, शब्द बोलना और चित्र दिखाना जैसे मछली शब्द बोलकर मछली का चित्र दिखाना। फिर धीरे धीरे 'म' व्यंजन से शुरू होने वाले अन्य परिचित शब्द शिशुओं को बोलने के लिए कहना।
3. अन्त्याक्षरी का खेल।
4. कविता की पहली और दूसरी पंक्तियों के अंतिम शब्दों के अंतिम अक्षरों की समान ध्वनि वाली कविताएं याद करना। जैसेः-

1- पांच वहां खरगोश खड़े
लम्बी मूछें कान बड़े।
आलू रतालू,
भुजिए खाए भालू।
छोटी सी गुडिया,
आफत की पुड़िया।
भालू आया, भालू आया,
एक मदारी उसको लाया।

2. बाजा बोले सा रे गा मा।
तबला बोले धिन्नक-धिन्ना।
करे मंजीरा टिन्नक-टिन्ना।
घुंघरू बोले छुन-छुन-छुन।
रानी बिटिया सुन-सुन-सुन।

चित्र-24

लिखने की पूर्व तैयारी

न्यूनतम अधिगम स्तरः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. शिशु आकृति में रंग भर सकता है।
2. वह खड़ी और आड़ी रेखाएं रेत पर खींच सकता है।
3. शिशु गोला खींच सकता है।
4. बिन्दुओं को जोड़ते हुए रंगोली बना सकता है।
5. अधूरी आकृति को पूरा कर सकता है।
6. कागज पर रंगीन आकृतियां बना सकता है।

क्रियाकलापः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. चित्रों व आकृतियों (गोल, त्रिकोण, चौकोर, षटकोण) में रंग भरना।
2. चौकोर या आयातकार की आकृति पर बिन्दु बनाकर शिशुओं को देना और चॉक व पेंसिल आदि से जोड़ने को कहना।
3. शिशुओं को गोल त्रिकोण, चौकोर आदि आकृतियाँ काटकर देना। इन्हें कागज पर ट्रेस करना।

4. शिशुओं को दो सीधी रेखाएं बराबर दूरी पर खींच कर देना और उनके बीच में आड़ी, तिरछी, खड़ी रेखाएं व गोल बनाने को कहना।

5. पांच वर्ष के शिशुओं से अक्षर व अंक लिखने का अभ्यास कराना। अक्षरों व अंकों पर उंगली व चाक फेरना, धीरें-धीरे लिखने का अभ्यास कराना।

6. फूल-पत्तियों को कागज व स्लेट पर रखकर उनके किनारे-किनारे, पेंसिल व चॉक फेरना।

7. शिशुओं को इस बात का अभ्यास कराना कि वे लिखने की तैयारी का कार्य बायीं ओर से शुरू करके दाहिनी तरफ बढ़े।

8. किताब पकड़ कर पन्ने खोलने का अभ्यास कराना।

प्रेम स्वर्ग की सीढ़ी है। प्रेम जीवन का आराम है।

-गिजुभाई

रचनात्मक क्रियाएं व सौन्दर्यानुभूति का विकास

रचनात्मक विकास की क्रियाएंः-

मनुष्य अपने मन की भावनाओं और विचारों को प्रकट करने के लिए कई विधियां अपनाता है जैसे- गायक अपने संगीत के द्वारा, मूर्तिकार मूर्तियां बनाकर, कवि कविता लिखकर और कहानीकार कहानी लिखकर अपनी भावनाओं तथा विचारों को प्रकट करते हैं। कविता, गायन, वादन (वाद्य बजाना) नृत्य, मूर्तिकला, अभिनय (नाटक) आदि के द्वारा मनुष्य कोई न कोई रचना करता है। ऐसा करने से उसे सुख की अनुभूति होती है। साथ ही उसके व्यक्तित्व का विकास भी होता है। किसी वस्तु का निर्माण करके मनुष्य पूर्णता को प्राप्त होता है। इसलिए कार्यकर्त्ता को शिशुओं में रचनात्मक प्रवृत्ति का विकास करने के लिए कई प्रकार के क्रियाकलाप आयोजित करना चाहिए।

सौन्दर्यानुभूति विकास की क्रियाएंः-

हमारे चारों ओर प्राकृतिक सुन्दरता बिखरी हुई है। आकाश में कतार बद्ध उड़ते हुए पक्षी, सावन के बादलों को देखकर नृत्य करता हुआ मोर, अपने पैरों में अनाज के दाने पकड़ कर उसे कुतर-कुतर कर खा रही गिलहरी, वर्षाऋतु में आकाश में दिखाई देने वाला सतरंगी इंद्रधनुष मनुष्य को प्रसन्न करते है और उनमें जिज्ञासा जगाते है।

सौन्दर्य-बोध मनुष्य का जन्मजात गुण है। सौन्दर्य के प्रति सभी आकर्षित होते हैं। अतः यह आवश्यक है कि शैशवास्था से ही बच्चों में सौन्दर्य-बोध विकसित किया जावे। वे सुरूचि पूर्ण रहन-सहन अपनावें। वे सुन्दरता को पहचाने और उसका आनन्द उठावें। उनकी कल्पना का विकास हो और वे सुन्दर नई रचना करें।

न्यूनतम अधिगम स्तरः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. शिशु सुन्दर वस्तु को देखकर सराहना कर सकता है।
2. अपनी वस्तुओं को व्यवस्थित रख सकता है।
3. सूझ-बूझ से नई रचना बना सकता है।

क्रियाकलापः-

शिशुओं में रचनात्मक प्रवृत्ति और सौन्दर्य की अनुभूति विकसित करने के लिए आंगनवाड़ी में जो क्रियाएं कराई जा सकती हैं, उनमें से कुछ निम्नानुसार हैंः-

3 से 6 आयु समूहः-

1. शिशुओं को वे दृश्य दिखांए, जिनमें प्रकृति की सुन्दरता के दर्शन होते हैं। जैसे-उगता व अस्त होता हुआ सूर्य बादलों के बदलते हुए रूप व इंद्रधनुष आदि।
2. कतारबद्ध उड़ते हुए पक्षी, पानी पर तैरती हुई बतखें, नृत्य करता हुआ मोर आदि का अवलोकन कराना, उनके चित्र दिखाना।
3. शिशुओं को अभिनय-गीत सिखाना और लय के साथ गीत गवाना।

4. गीत के अनुसार नृत्य करना।
5. डफली की ताल पर लय के साथ चलना, चुटकी और ताली बजाना।
6. डफली की ताल पर घुटने थपथपाना।
7. शिशुओं की कल्पना-शक्ति का विकास करने के लिए उनसे कुछ प्रश्न करें। जैसे-
   - क्या होगा यदि तुम्हारे पंख लग जावें और तुम उड़ने लगो।
   - तुम्हें घूमने के लिए तीन पहिओं की एक साइकिल मिल जाए।
   - रंग-बिरंगी तितली तुम्हारी बाँह पर आकर बैठ जाए।
8. शिशुओं को कहानी गढ़ने और कविता रचने का मौका देवें। कहानी की शुरूआत आप करें और वे कहानी को विकसित करें।
9. आंगनवाड़ी को परिवेशीय वस्तुओं से सजाना।
10. रंगोली एवं हाथ के छापे से फर्श सजाना।
11. बांस की पतली खपच्चियों के बीच में रबड़-बांधकर मुंह का बाजा बनाना और बजाना।
12. इमली में अंकुरित बीजों के बीच में कांटा लगाकर फिरकी बनाना।
13. पीपल के पत्तों को लपेट कर पुंगी बनाना व बजाना।
14. फुंकनी से पानी में बुलबुले उत्पन्न करना।
15. बरसात में आम की गुठली को घिसकर बाजा बनाना।
16. कागज़ पर स्याही या रंग छिड़ककर उसकी चार तहें लगाकर उसे खोलना, सुन्दर डिजाइन व आकृतियां बन जावेंगी।
17. केंद्र को व्यवस्थित करने में शिशुओं का सहयोग लेना।

थाली में पानी भरना उसमें तेल की कुछ बूंदे डालना, पानी में घुले हुए रंग में ब्रश को डूबोकर पानी पर छिड़कना और कागज को उसमें डूबो देना। कुछ ही क्षणों में कागज पर तरह-तरह के रंगीन नमूने बन जाएंगे। इस कागज को पानी में से निकालकर धूप या हवा में सुखा लेना चाहिए। अखबार के कागज को काममें नहीं लाना चाहिए। वह गीला होने पर जल्दी फट जाता है। थाली के रंगीन पानी को लकड़ी से हिलाकर दूसरे कागज पर रंग चढ़ाएं और सुखाएं। यह क्रिया समस्त शिशुओं से करवाना। इन कागजों को पुस्तकों पर जिल्द चढ़ाने तथा खेल क्रियाएं बनाने के काम में लाया सकता है।

एक मीटर धागे को रंग में डुबोकर कागज पर दो तहों के बीच रखकर दबाना। थोड़ी देर में तह खोल कर देखें कि डिजाइन बना जाएंगे। शिशु अपने बनाए डिजाइन देखकर उनमें तरह-तरह की आकृतियां खोजते हैं और आनन्द लेते हैं।

एक भिण्डी का ऊपरी सिरा उतार कर उसे बारी-बारी से रंगों में डुबोकर कागज पर छापे बनाना। शुरु में शिशु कागज में किसी भी स्थान पर छापे लगाता है। बाद में रेखांकित आकृति के अन्दर छापे लगाना, फिर क्रम से छापे लगाना। खिलौने बनाना जैसे-पतंग, मिट्टी के खिलौने और डिब्बे के ढक्कन के पहिएदार खिलौने,कागज की फिरकनी, नाव, दवात, हवाई जहाज, रंगीन चश्मा व सरकण्डे की बैलगाड़ी, पिस्तौल, झूला आदि। शिशु को ताल और लय के साथ अकेले अथवा समूह में नृत्य करना सिखाना।

बच्चे देश के भविष्य में निर्माता है।

- श्री राजीव गांधी

सामाजिक और संवेगात्मक विकास

सामाजिक विकास

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर ही उसका विकास होताहै। समाज में रहकर मनुष्य अपने गुणों से दूसरों को प्रभावित करता है। सामाजिक नियमों का पालन करते हुए वह अच्छा संतुलित जीवन जीता है। समाज के विकास के कारण ही राष्ट्र का विकास होता है। अतः बचपन से ही हमें शिशु के सामजिक विकास की ओर ध्यान देना चाहिए।

शिशु के सामाजिक विकस का अर्थ होता है अच्छी आदतें और अच्छा व्यवहार। सही अभिवृत्तियां और मानवीय मूल्यों का विकास। सामजिक विकास के लिए जीवन के शुरु के साल बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। बचपन के अनुभवों का प्रभाव मनुष्य पर जीवन पर्यन्त बना रहता है। बचपन में शिशु अपने आस-पास के परिवेश से अच्छी आदतें, शिष्ट-व्यवहार और नैतिक गुण सीखता है। इन्हीं गुणों की सहायता से आगे चल कर वह समाज के साथ तालमेल बनाकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

आंगनवाड़ी कार्यकर्ता को चाहिए कि वे शिशुओं में अच्छे सामाजिक गुणों का विकास करें। इस हेतु आंगनवाड़ी में त्यौहार, सामाजिक उत्सव व जन्म दिन मनाएं। शिशुओं के द्वारा कार्यक्रम आयोजित कराएं। उन्हें त्यौहारों और सामाजिक उत्सवों में भाग लेने के अधिक से अधिक अवसर दें, जिससे बच्चों में भाई- चारा, प्रेम, सहानुभूति, नेतृत्व, आत्मविश्वास, धैर्य व परिश्रम करने के गुण विकसित हो सकें।

न्यूनतम अधिगम स्तर -

3 से 6 आयु समूह :-

1. शिशु शिष्टता से बोलना सीख सकता है।
2. अपनी बारी की प्रतीक्षा कर सकता है।
3. निर्देशों का पालन कर सकता है।
4. वस्तुओं का उपयोग मिल जुलकर कर सकता है।
5. बड़ों के आदेशों का पालन कर सकता है।
6. संगी-साथियों से हिल-मिलकर रह सकता है।
7. बड़ों का आदर और छोटों से प्यार कर सकता है।
8. सामूहिक कार्यों में भाग ले सकता है।
9. त्यौहारों तथा अन्य समारोहों में खुशी से भाग ले सकता है।
10. पशु-पक्षियों के साथ प्रेम और दया का व्यवहार कर सकता है।
11. पेड़-पौधों की रक्षा कर सकता है।
12. दूसरों की आवश्यकताओं को समझ सकता है।
13. निडर होकर अपनी बात कह सकता है।
14. आत्म विश्वास के साथ कार्य कर सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 6 आयु समूह :-

तीन वर्ष का शिशु :-

तीन वर्ष के शिशु आत्मकेंद्रित (अपने आप में मगन) होते हैं। वे अपने ही बारे में सोचते हैं और अपनी ही आवश्यकताओं को महत्व देते हैं। वे अकेले खेलना पसंद करते हैं। दूसरों के व्यवहार की नकल करने में उनकी बड़ी रुचि रहती है। उनमें जिज्ञासावश सीखने की इच्छा प्रबल होती है। परन्तु सीखने की गति धीमी होती है। एक ही बात को या काम को दोहराना उन्हें अच्छा लगता है। इस उम्र के शिशुओं का अपनी मांस पेशियों पर नियंत्रण अपेक्षाकृत अधिक होता है।

इस आयु के शिशुओं के खेल थोड़े समय के तथा सरल, व मनोरंजक होने चाहिए। खेल के दौरान उनको अपने हाथों और अंगुलियों का प्रयोग करने का अवसर देवें। उनसे अनुकरण वाले खेल खिलाएं जाएं। छोटे-छोटे समूहों में खेले जाने वाले खेल, रेत के खेल, अनुकरण और पहचान के खेल उनसे खिलाएं जाएं।

चार वर्ष का शिशु :-

इस उम्र में शिशु अपने अंगों के संचालन पर कुछ अधिक नियंत्रण पा लेता है। वह अपनी बात कह लेता है। सामूहिक खेलों में भाग लेता है। अब उसमें सहयोग की भावना पैदा हो जाती है। व्यवहार में अनुशासन दिखाई देता है। आदेशों का पालन करता है। उसमें नई बातों को सीखने, नई चीजों को देखने व जानने की इच्छा बढ़ जाती है। अपने आप बिना किसी की मदद से काम करने की इच्छा होने से धीरे-धीरे उसमें आत्मविश्वास पैदा होता है।

शिशुओं के खेल क्रिया-शीलता और गतिशीलता पर आधारित हो। उन्हें लयबद्ध कविता और गीत सिखावें। उन्हें खेल के नियमों का पालन करना सिखावें और सामूहिक खेल खिलाएं। सामाजिक विकास हेतु शिशुओं को शैक्षणिक ताश के खेल, अपना साथी चुनो, बोल मेरी मछली आदि रुचिकर खेल खिलाएं।

पांच-छः वर्ष का शिशु :-

इस उम्र के शिशु अपनी बड़ी और छोटी मांस पेशियों पर पूरी तरह नियंत्रण प्राप्त कर लेते हैं। वे आत्म निर्भर हो जाते हैं। हिलमिलकर खेलने व काम करने में उन्हें मजा आता है। वे अपने भावों को प्रकट कर लेते हैं। नेतृत्व या अगुवा बनने की भावना का उदय होने लगता है। वे नये कार्य करना पसंद करते हैं। हार-जीत के खेलों में अधिक रुचि लेते हैं। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता उन्हें ऐसे खेल-खिलाएं जो मिलकर खेले जा सकते हैं। उन्हें मोजे-जूते स्वयं पहनने देवें। वे जूतों के तस्में खुद बांधे, हार-जीत के खेल खिलाएं और ऐसे शाब्दिक खेल आयोजित करें, जिनमें भाग लेकर वे अपने आपको व्यक्त कर सकें। नेतृत्व करने के खेल खिलाएं।

स्वयं के महत्व की अवधारणा

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 6 आयु समूहः-

1. शिशु अपने महत्व को पहचान सकता है।

2. शिशु जिम्मेदारी से कार्य कर सकता है।
3. शिशु जन्म दिन मना सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 6 आयु समूह :-

शिशु अपने अस्तित्व को पहचान सके इसलिए निम्नलिखित क्रियाकलाप आंगनवाड़ी में कराए जाएं:-

1. प्रत्येक शिशु का जन्म दिन आंगनवाड़ी में मनाया जावे।
2. एक सुन्दर आकर्षक रंग-विरंगा जन्मदिन कैलेंडर तैयार करें।
3. जिस शिशु का जन्म दिन जिस महीने में व जिस तारीख के पड़ता है उसके दो दिन पहले सभी शिशुओं को इसकी जानकारी देवें और निर्देश दे कि उस दिन सभी शिशु आंगनवाड़ी में उपस्थित रहें। जन्म दिन के अवसर पर शिशु को आंगनवाड़ी में बनाया गया गुलदस्ता, बधाई कार्ड व खिलौना आदि भेंट में देवें। ऐसा करने से उसको महसूस होगा कि आंगनवाड़ी में उसका भी कोई महत्व है।
4. आंगनवाड़ी में एक बड़ा आइना रखें ताकि प्रतिदिन शिशु उसमें अपनी छवि देख सकें।
5. शिशुओं द्वारा बनाई गई वस्तुओं पर उसके नाम की चिट लगावें ताकि शिशु को इस बात का गर्व हो सके कि यह वस्तु उसने बनाई है। शिशुओं द्वारा बनाई गई वस्तुओं की प्रदर्शनी देखने के लिए माता- पिता तथा समुदाय को निमंत्रण देकर बुलाएं।
6. शिशु के अच्छे कार्य की प्रशंसा करें और सब शिशु ताली बजाएं।
7. कार्यकर्ता जब भी किसी शिशु को बुलाए, उसका नाम लेकर बुलाए। ऐसा करने से शिशु को अपनापन लगता है। वह गर्व महसूस करता है।
8. शांत और चंचल शिशुओं को एक साथ बिठाएं इससे बहुत सी समस्याएं अपने आप हल हो जाएंगी।
9. यदि शिशु बीमार है, तो उसे देखने उसके घर जाएं। हो सकें तो एक फूल भेंट में दें।

व्यक्तिगत स्वच्छता

न्यूनतम अधिम स्तर :-

3 से 6 आयु समूह :-

स्वस्थ आदतों के विकास में व्यक्तिगत स्वच्छता का बहुत महत्व है, आदत डालने पर : -

1. शिशु रोज स्नान कर सकता है।
2. बड़े हुए नाखून कटवा सकता है।
3. वह साफ कपड़े पहन सकता है।
4. वह नियत स्थान पर टट्टी-पेशाब कर सकता है।
5. टट्टी-पेशाब के बाद अपने हाथ साबुन, राख या मिट्टी से धो सकता है।
6. भोजन करते समय एक ही हाथ का उपयोग कर सकता है।
7. जूठन गिराना छोड़ सकता है।
8. कचरा पेटी में ही कचरा डाल सकता है।
9. निर्धारित स्थान पर थूकना सीख सकता है.

क्रियाकलाप :-

3 से 6 आयु समूह :-

1. सभी शिशुओं से सप्ताह में एक दिन आंगनवाड़ी की सफाई कराना।
2. पन्द्रह दिन में एक बार स्वच्छ बालक का चयन करना। प्रतियोगिता रखना।
3. मध्यान्ह भोजन के बाद जूठे-बर्तन निर्धारित स्थान पर रखना।
4. शिशुओं से अपने जूते-चप्पल एक कतार में पीछे की तरफ रखाना।
5. खेल के साधन जहां से उठाएं खेलने के बाद वहीं रखना।
6. स्वच्छता संबंधी कहानी सुनाना व गीत गवाना। सफाई-कविता हाव-भाव से कहना।

स्वतंत्रता और नेतृत्व (अगुआ बनने) का विकास

स्वतंत्र राष्ट्र के नागरिकों में स्वतंत्र होने की भावना, स्वतंत्र रूप से विचार करने और निडर होकर अपनी बात कहने जैसे गुणों का होना बहुत जरूरी है। इसलिए बचपन से ही शिशुओं में स्वतंत्रता और नेतृत्व करने के गुणों का विकास करें।

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 6 आयु समूह :-

1. आंगनवाड़ी में किसी भी काम को करने की इच्छा कर सकता है।
2. निडर होकर बात कर सकता है।
3. खेल में अपने समूह का लीडर बन सकता है।
4. स्वयं अपने साथियों का समूह बना सकता है।

क्रियाकलाप :-

3 से 6 आयु समूह :-

1. शिशुओं को जिम्मेदारी का काम सौंपना।
2. उन्हें काम करने का अवसर देना।
3. सामूहिक कार्य करने के लिए प्रत्येक शिशु को मौका देना।
4. शिशुओं के छोटे-छोटे समूह बनाना और बारी-बारी से प्रत्येक शिशु को समूह का नेता बनने का मौका देना।
5. शिशुओं को इस प्रकार प्रोत्साहित करना कि वे कार्य करने के लिए स्वयं आगे आंवें। जैसे- आज पौधों को पानी कौन देगा? खेल के लिए गोल घेरा कौन खींचेगा आदि।
6. शिशु उन्हीं कामों को करने में रुचि लेते हैं, जिन्हें करने में आनन्द आता है। अतः काम को खेल बनाकर कराना। जैसे- दौड़कर दरवाजा खोलो, पंजों के बल खड़े होकर पुस्तक उठाओ आदि।

साथियों के साथ व्यवहार

न्यूनतम अधिगम स्तर -

3 से 6 आयु समूह :-

1. शिशु अपने साथियों की बात ध्यान से सुन सकता है।

2. साथियों के साथ बातचीत में भाग ले सकता है।
3. मिलजुलकर खेल सकता है।
4. साथियों की मदद कर सकता है।
5. अपनी बारी आने तक प्रतीक्षा कर सकता है।

क्रियाकलाप

3 से 6 आयु समूह :-

1. शिशु को अपनी बारी तक रुकने का अभ्यास कराने के खेल खिलाना।
2 मिलजुलकर खाने-खेलने और काम करने के अवसर देना। बातचीत करना।
3. कहानी सुनाना, अभिनय कराना आदि।

परिवेशीय जीव-जन्तु तथा पेड़-पौधों की देखभाल

न्यूनतम अधिगम स्तः-

3 से 6 आयु समूह :-

1. शिशु पेड़-पौधों व उनके फूलों और पत्तियों की सुरक्षा करना सीख सकता है।
2. शिशु पौधे रोप सकता है और उनकी देखभाल करना सीख सकता है।
3. पशुओं और अन्य जीव-जन्तुओं से प्यार करना सीख सकता है।

क्रियाकलापः-

3 से 6 आयु समूह :-

1. बगीचे की देखभाल जैसे पेड़-पौधों को पानी देना, पौधे लगाना, उनकी रक्षा करना, मौसम के अनुसार गमलों को धूप में अथवा छांव में रखना। पौधों और फूलों को नाम से पहचानना। मित्र के जन्म दिन पर उसे फूलदार पौधे का गमला भेंट में देना। शिशु में पेड़-पौधों के प्रति लगाव पैदा करना।
2. पेड़ से मिलने वाली छांव, फल, फूल, दवाई लकड़ी, शीतल हवा आदि पर वार्तालाप करना।
3. शिशु परिवेश में पाए जाने वाले पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े जैसे कुत्ता, बिल्ली, गाय, बकरी तथा तितली आदि की उपयोगिता पर बातचीत करना।
4. शिशुओं को ऐसे गीत-कविता या कहानियां सुनाएं, जिनमें पशु-पक्षी प्रेम की स्पष्ट अवधारणा दी गई हो और उनकी रक्षा की बात कही गई हो। जैसे-सिद्धार्थ द्वारा घायल हंस की रक्षा और महाराजा शिवि द्वारा कबूतर की बाज से रक्षा तथा हिरण की शिकारी से रक्षा आदि।

संवेगात्मक विकास

संवेग के जन्म लेते ही शिशु उसे उसी समय प्रकट कर देता है, जबकि बड़े नियंत्रण रखते हैं। बच्चों में संवेग बहुत जल्दी पैदा हो जाते हैं। बच्चा जिस वस्तु को चाहता है उसे तत्काल प्राप्त करना चाहता है। थोड़ी देर होने पर क्रोध से चिल्लाकर आसमान सिर पर उठा लेता है। वह रूठ जाता है। इच्छित वस्तु न मिलने पर रोने लगता है। यदि शिशु के घर का वातावरण संतुलित और मधुर है तो उसका व्यवहार विनम्र और प्रेमपूर्ण बना रहेगा। क्लैशपूर्ण वातावरण में रहने वाला बच्चा जिद्दी और

क्रोधी बन जाता है। कई बच्चों में निराशा स्थायी भाव बन जाती है।

शिशु में कुछ संवेग जन्म से होते हैं जैसे-प्रेम, क्रोध और भय (डर)। आनन्द के वातावरण में खुशी, आशा, प्रेम और उल्लास तथा कष्ट में चिन्ता, ईर्ष्या, भय, क्रोध, बेचैनी और निराशा उत्पन्न होते हैं। इसलिए संवेगों का विकास और नियंत्रण बहुत जरूरी है। कार्यकर्ता के रूप में हमारा कर्तव्य है कि आनंद देने वाले संवेगों का विकास करें और कष्ट देने वाले संवेगों का नियंत्रण करने में शिशु की मदद करें। भय, क्रोध व ईर्ष्या जैसे संवेगों को कार्यकर्ता अपनी देख-रेख में बदल सकती है।

न्यूनतम अधिगम स्तर :-

3 से 6 आयु समूह :-

1. शिशु सामूहिक क्रियाकलापों में रुचि ले सकता है।
2. कार्य को सफलता पूर्वक करने पर आनन्द और गर्व का अनुभव कर सकता है।
3. कार्य को स्वयं स्वतंत्र रूप में कर सकता है।
4. अपने से छोटे शिशुओं से प्रेम कर सकता है।
5. छोटा शिशु बड़े शिशुओं का अनुकरण कर सकता है।

क्रियाकलापः-

1. दैनिक कार्यक्रमों में शिशुओं को सामूहिक व वैयक्तिक रूप से कक्ष तथा बाहर आंगन में लेजाकर क्रियाएं करवाना। उन्हें भ्रमण हेतु ले जाना। उनसे बातचीत करना। उनकी बात ध्यान से सुनना। उसे भी दूसरे शिशुओं की बातें सुनने की आदत डालना।
2. आंगनवाड़ी में शिशुओं का स्वागत मुस्करा कर करना। उन्हें क्रियाकलापों में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित करना।
3. सामूहिक खेल खिलाना जैसेक-नाम जानो परिचय खेल, मेरी पसंद आदि।

समायोजन हेतु ध्यान रखने योग्य कुछ बिन्दु :-

- शिशु के लिए प्रारंभ में आंगनवाड़ी में आने के समय की पाबंदी न रखें।
- पूरे दिन शिशु बैठा रहे ऐसी जबरदस्ती न करें।
- शुरु-शुरु में घर के सदस्यों को शिशु के साथ आने देवें।
- कोई क्रियाकलाप शिशु पर जबरदस्ती न थोपें।
- आंगनवाड़ी की सहायिका से शिशु का परिचय करावें।
- धीरे-धीरे आंगनवाड़ी में आने तथा जाने का समय उसे स्वयं विहित हो जावेगा।

> *शिशु एक सुन्दर गुलाब है जो जीवन को आनन्दमय बनाते हैं।*
>
> *-श्री जवाहरलाल नेहरू*

समस्या मूलक बालक

आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के पास 3 से 6 आयु समूह के शिशुओं का एक बड़ा समूह होता है। शिशुओं की आदतें, रूचियां तथा प्रवृत्तियां भिन्न-भिन्न होती हैं। जिनमें से कुछ शिशु अपनी शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक समस्याओं के कारण वातावरण से समायोजन नहीं कर पाते, जिससे वे समस्यामूलक शिशुओं की श्रेणी में मान लिए जाते हैं। इन समस्याओं का निराकरण उपयुक्त समय पर नहीं किया जाए तो वे आगे चलकर समाज विरोधी बन जाते हैं।

3 से 6 वर्ष की आयु ही ऐसा समय है जब इन समस्याओं को पहचान कर इन्हें बढ़ने से रोका जा सकता है और दूर किया जा सकता है। अतः कार्यकर्ता की जिम्मेदारी हो जाती है कि वह आंगनवाड़ी में आए ऐसे शिशुओं की पहचान करे और असामान्य व्यवहार को स्नेह, सुरक्षा और सहयोग से सामान्य व्यवहार में बदलने का प्रयास करें।

समस्या मूलक बच्चों की पहचान :-

1. **शारीरिक विकलांगता :-**
   - अ- अपंगता (शरीर का कोई अंग हाथ-पांव, अंगुली आदि)
   - ब- कम सुनना, बधिरता (बहरापन)
   - स- गूंगापन
   - द- अंधा, काना, कम दिखाई देना।

2. **मानसिक पिछड़ापन**

3. **संवेगात्मक समस्याएं**
   - क- अंगूठा चूसना
   - ख- शर्मिलापन
   - ग- क्रोध व उद्दण्डता
   - घ- हकलाना, तुतलाना

1. शारीरिक विकलांगता-

अपंग, कम देखने वाले, काने- गूंगे या बधिर शिशु शारीरिक विकलांगता की श्रेणी में आते हैं। यह विकलांगता इनमें जन्मजात या किसी दुर्घटनावश या किसी रोग के कारण हो सकती है। इन शिशुओं में बौद्धिक- योग्यता अन्य शिशुओं से कम नहीं होती। लेकिन शारीरिक कमी के कारण इनमें हीन भावना विकसित हो जाती है, जिससे समुदाय में समायोजन की समस्या होती है।

2. मानसिक पिछड़ापन

कुछ शिशुओं में मानसिक पिछड़ापन भी पाया जाता है। ऐसे शिशु देर में सीखते हैं और अभिव्यक्ति भी देर से करते हैं। यह पिछड़ापन शैशव काल से ही दिखाई देने लगता है। इनकी पहचान निम्नांकित लक्षणों से की जा सकती है। जैसे-देर से दांत निकलना, खड़े होने एवं चलने की शक्ति देर से आना, चीजों को देर से पहचानना, नाम बताना, उठाना और रखना इत्यादि। ये कमियाँ कार्यकर्ता को सर्वेक्षण के दौरान ज्ञात हो सकती हैं।

कार्यकर्ता को चाहिए कि ऐसे शिशुओं के माता-पिता से संपर्क कर उन्हें अवगत करावें। आंगनवाड़ी में ऐसे शिशुओं से इस तरह के क्रियालाप कराएं, जिससे उनके शरीर में गति आए जैसे- कूदना, दौड़ना, उछलना, नाचना, गाना व संतुलन बनाने की क्रियाएँ और वैयक्तिक तथा सामूहिक खेल। मुक्त तथा नियंत्रित खेल।

3. संवेगात्मक समस्या :-

केंद्र में 3 से 6 आयु समूह के कुछ शिशु हकलाकर या तुतलाकर बोलते हैं। कुछ उदण्ड या शर्मीले होते हैं। कोई अंगूठा चूसता है या हर समय दांत से नाखून काटता रहता है। इस प्रकार के शिशुओं को आंगनवाड़ी कर्यकर्ता पहचाने, क्योंकि इन शिशुओं में असुरक्षा की भावना बहुत अधिक होती है। माता-पिता से इन्हें पर्याप्त स्नेह नहीं मिल पाता। समयाभाव के कारण वे शिशुओं की देखभाल के लिए पर्याप्त समय नहीं निकाल पाते। इससे शिशु कुंठित हो जाते हैं और उनके व्यवहार में कई प्रकार की संवेगात्मक समस्याएं विकसित हो जाती हैं।

ये शिशु या तो किसी भी प्रकार के निर्देशों का पालन नहीं करते अथवा दबाव में आकर कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं। इसलिए कार्यकर्ता को चाहिए कि प्रत्येक शिशु की विशेषताओं एवं कमियों को देखते हुए ऐसे कार्यक्रम तैयार करें जो उनकी रूचि एवं आवश्यकता के अनुकूल हो और उन्हें करने में आनन्द आए तथा उन्हें सफलता मिले।

कोई भी ऐसा व्यवहार जो शिशु को ठेस पहुंचाएँ, नहीं करना चाहिए। जितना प्रेम, लगाव, प्रोत्साहन व ध्यान उन्हें मिलेगा समायोजन संबंधी उनकी समस्याएँ दूर हो सकेगी और उनका व्यवहार सामान्य बनेगा।

समस्यामूलक शिशुओं के प्रति कार्यकर्ता के दायित्व :-

1. समस्या मूलक शिशुओं की पहचान करना एवं उन्हें केंद्र में आने के लिए प्रेरित करना।
2. उनके साथ सामान्य व्यवहार करना। इन शिशुओं को इस बात का आभास न होने देना कि वे विकलांग हैं अथवा उसमें कोई कमी है।
3. अन्य शिशुओं के साथ उन्हें बिठाना, केंद्र के समस्त क्रियाकलापों में उन्हें सहभागी बनाना। उन्हें कार्य करने के लिए प्रोत्साहन देना।
4. कार्यकर्ता उनके पालकों से संपर्क बनाये रखें। शिशु के विकास के संबंध में उनसे चर्चा करें। उपचारात्मक उपायों की जानकारी स्वयं रखें एवं पालकों को भी अवगत करावें।
5. समस्यामूलक शिशु के गुणों या अवगुणों की तुलना सामान्य व्यवहार वाले शिशुओं से न करें।
6. समस्यामूलक शिशुओं के व्यवहार को सामान्य बनाने के लिए कार्यकर्ता को धैर्य रखना चाहिए, क्योंकि ऐसे शिशुओं के व्यवहार में परिवर्तन की गति बहुत धीमी होती है।
7. आंगनवाड़ी का कार्यक्रम ऐसे शिशुओं की रूचि, क्षमता व आवश्यकता के अनुसार होना चाहिए।

प्रेम फलोत्पत्ति के भीतर विद्यमान रहने वाला मुख्य प्राण है।

-गिजुभाई

दैनिक कार्यक्रम की योजना

शिशुओं का विकास खेलों के द्वारा होता है। वे खेलों के द्वारा बहुत सी बातें सीखते हैं। इसलिए आंगनवाड़ी में खेलों को बहुत महत्व दिया जाना चाहिए। आंगनवाड़ी का मुख्य उद्देश्य शिशु का सर्वांगीण विकास है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए दैनिक कार्यक्रम में प्रत्येक प्रकार के विकास के लिए और प्रत्येक आयु-समूह के शिशुओं के लिए खेल क्रियाओं का आयोजन होना चाहिए। खेल ऐसे हो जो शिशुओं को अच्छे लगें और उनका मनोरंजन करें। साथ ही वे उनसे कुछ न कुछ सीखे भी। शिशु उन्हें अकेला भी खेल सके तथा समूह में भी अन्य शिशुओं के साथ खेल सकें।

आंगनवाड़ी, प्राथमिक शालाओं के समय पर लगाई जाए। ऐसा करने से बड़े बहन या भाई के साथ शिशु आंगनवाड़ी आ सकेगा और बड़े बच्चे विशेषकर लड़कियां प्राथमिक शाला में अपनी पढ़ाई जारी रख सकेंगी। आंगनवाड़ी का दैनिक कार्यक्रम बनाते समय निम्नांकित बातें ध्यान में रखी जावें :-

1. खेल मुक्त तथा नियंत्रित, सामूहिक तथा व्यक्तिगत, मौन तथा शोरगुल वाले हो।
2. खेल-क्रियाएँ शिशु के सभी प्रकार के विकास पर आधारित हो।
3. आंगनवाड़ी कार्यकर्ता सभी प्रकार के क्रिया-कलापों में संतुलन बनाएं रखें।
4. ऐसे क्रियाकलाप रखे जावे, जिन्हें होशियार, सामान्य तथा पिछड़े स्तर के शिशु अपनी रूचि के अनुसार कर सकें।

दैनिक कार्यक्रम का नमूना

3 से 4 आयु समूह के शिशुओं के लिए दैनिक कार्यक्रम :-

15 मिनिट	आंगनवाड़ी में शिशुओं का आगमन (आना), कार्यकर्ता द्वारा शिशु का प्रेम से स्वागत। शिशु के हाथ, पांव, आंख, दांत, बाल, पोशाक आदि का निरीक्षण, प्रार्थना।
10 मिनट	शिशुओं से उनके अनुभवों के आधार पर बातचीत।
20 मिनट	शिशुओं को खेल खिलाना।
5 मिनट	हाथ पैर की सफाई।
10 मिनट	आराम
40 मिनट	कक्षा के भीतर, शिशुओं को खेल खिलाना, खेलने के लिए खिलौने देना, मिट्टी व कागज के खेल खिलाना।
10 मिनट	आराम
20 मिनट	कहानी सुनाना, सचित्र कहानी, बातचीत, अभिनय, कठपुतली का खेल।
10 मिनट	घर जाने की तैयारी के लिए एक लाइन में शिशुओं को खड़ा करना और घर के लिए रवाना करना।

4 से 6 आयु वर्ग के शिशुओं के लिए दैनिक कार्यक्रम :-

15 मिनट	शिशुओं का आंगनवाड़ी में आगमन, कार्यकर्ता द्वारा उनका प्रेम से स्वागत, हाथ-पैर, दांत, आंख, नाखून, पोशाक का निरीक्षण, प्रार्थना।
10 मिनट	शिशुओं से उनके अनुभवों के आधार पर बातचीत।
20 मिनट	शिशुओं के लिए बाह्य खेल
5 मिनट	हाथ-पैर की सफाई।
10 मिनट	आराम
40 मिनट	आयोजित क्रियाकलाप, कहानी, चित्रकथा, कठपुतली, चित्र-कार्डस पर आधारित क्रियाएं, वार्तालाप, रचनात्मक क्रियाएं, गुड़िया बनाना, मिट्टी व कागज के खिलौने बनाना आदि, व्यक्तिगत व सामूहिक खेल। मुखौटे लगाकर अभिनय करना।
10 मिनट	आराम
20 मिनट	चित्र बनाना, ट्रेस करना, चित्र पूर्ण करना, परिवेशीय सामग्री से खिलौने बनाना।
10 मिनट	समूह गीत, कविता (हाव भाव के साथ)। कतार में शिशुओं को खड़ा करना और घर भेजना।

टीप :-ऊपर दिए गए दैनिक कार्यक्रम केवल सुझाव के रूप में दिए जा रहे हैं, स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार उनमें परिवर्तन किए जा सकते हैं। बीच-बीच में समय निकालकर, शिशुओं को अपने परिवेश का अवलोकन करने के लिए आंगनवाड़ी से बाहर ले जावें।

शिक्षण की क्रिया एक उपयोगी क्रिया है। इसमें अनुभव और विज्ञान दोनों हैं।

–गिजुभाई

आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए मूल्यांकन निर्देश

शिशु शिक्षा के तीन महत्वपूर्ण पक्ष है- (1) योजना बनाना (2) योजना पर कार्य करना और (3) मूल्यांकन करना। इनमें से यदि एक भी पक्ष कमजोर होता है तो कार्यक्रम असफल हो जाता है। अतः कार्य की पूर्व योजना बनाकर उसे संचालित करना जितना महत्वपूर्ण है उतना ही आवश्यक है किए गए कार्यों का मूल्यांकन। किन क्रियाकलापों को कराने में सफलता मिली। यदि किसी क्रियाकलाप में शिशु/ शिशुओं ने रूचि नहीं दिखाई तो उसके क्या कारण हैं? उन कारणों को दूर करने के लिए भविष्य के कार्यक्रमों में क्या परिवर्तन करना होगा- यह मूल्याकंन के द्वारा ही विदित किया जा सकता है। इसलिए आंगनवाड़ी कार्यक्रमों तथा उनसे शिशुओं के शैक्षणिक विकास का मूल्यांकन करना बहुत आवश्यक है।

शिशुओं के लिए निर्धारित अधिगम स्तर की प्राप्ति किस सीमा तक हो पाई है और वांछित क्षमताएं किस सीमा तक विकसित हो पाई है यह मालूम करने का एक मात्र साधन मूल्यांकन है। कार्यकर्ता के कार्य का आकलन (लेखा-जोखा अनुमान) भी मूल्यांकन द्वारा किया जा सकता है ताकि कार्यकर्ता अपनी सफलताओं व असफलताओं के बारे में जान सके। तदनुसार शैक्षणिक कार्यक्रमों में सुधार ला सकें।

आंगनवाड़ी शिशुओं में शैक्षणिक संस्कारों तथा स्वस्थ आदतों का विकास बहुत आवश्यक है। अतः बच्चों में विकास की गति को देख कर उनके शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, संवेगात्मक और भाषाई विकास की जांच की जाती है।

मूल्यांकन के द्वारा यह देखा जाना चाहिए कि शिशुओं में सफाई तथा नियमितता के प्रति रूचि उत्पन्न हुई है या नहीं? वह केंद्र पर प्रतिदिन उपस्थित होता है। वह साफ रहता है। यदि बालक आंगनवाड़ी में आने के बाद भी अपने साथियों से घुलमिल नहीं पाता है, वातावरण की बहुत कम जानकारी प्राप्त कर पाता है या केंद्र के कार्यक्रमों के प्रति उदासीन रहता है और केंद्र में आने से कतराता है तो मूल्यांकन का निष्कर्ष यह निकाला जा सकता है कि कार्यक्रम में कोई त्रुटि रह गई है या फिर सिखाने की पद्धति में दोष है। अतः कार्यक्रम की समीक्षा कर उसमें परिवर्तन किया जाना चाहिए। यह भी हो सकता है कि कार्यक्रम तथा उन्हें कराने की विधि सही है, परन्तु कार्यकर्ता का शिशुओं के साथ व्यवहार आत्मीयतापूर्ण नहीं है।

शिशु के विकास संबंधी प्रत्येक पक्ष का मूल्यांकन करते हुए निम्नांकित बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक है:-

1. शारीरिक विकास में- शरीर की छोटी व बड़ी मांस पेशियों का विकास व संतुलन तथा स्वास्थ्य संबंधी आदतों का विकास।
2. बौद्धिक विकास में- शिशु की जिज्ञासा (जानने की इच्छा), अवधान (ध्यान देकर सुनना) याद रखना, कल्पनाशीलता, क्रियात्मकता, रचनात्मकता एवं समस्या सुलझाने की योग्यता।
3. भाषायी विकास में पुनने, समझने, बोलने में तालमेल, शब्द सीखना और उनका वाक्यों में प्रयोग करना, कहानी सुनना, कहानी सुनाना, कहानी कहने में कल्पना का उपयोग करना, बातचीत करते हुए शुद्ध व साफ उच्चारण प्रश्न पूछना, शिष्टतापूर्वक बोलना।
4. सामाजिक व संवेगात्मक विकास में- सहयोग, भाईचारा, समूह में रहकर काम करना, अपने मित्रों व साथियों की मदद करना, समायोजन, स्वावलम्बन सहिष्णुता, प्रेम, सहानुभूति व त्याग।
5. रचनात्मकता व सौन्दर्यानुभूति में- देखकर वस्तुएं बनाना, नई वस्तुएं कलात्मक अभिरुचि, अच्छी तरह (व्यवस्थित) से वस्तुएं व खेल-खिलौने बनाना व उन्हें रखना आदि।

मूल्यांकन का कार्य सतत चलता रहेगा। कार्यकर्ताओं को एक डायरी रखनी चाहिए और उसमें शिशुओं के असामान्य या प्रशंसापूर्ण व्यवहारों को नोट करना चाहिए। उनके आधार पर क्रियाकलापों में सुधार करके नवीन कार्यक्रम लागू करना चाहिए। और प्रशंसापूर्ण कार्यों का अनुकरण करने लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

लगातार प्रयासों के फलस्वरूप शिशुओं के असामान्य व्यवहारों में कहां तक सुधार आया है, इसका मूल्यांकन निरीक्षण के द्वारा संभव होगा। इस प्रकार सतत मूल्यांकन बच्चों के स्वस्थ विकास में सहायता करेगा। मूल्यांकन केवल मूल्यांकन के लिए नहीं है। मूल्यांकन हमारे प्रयासों की सफलता या असफलता का दर्पण है।

शिशु की प्रगति के मार्ग में आने वाली बाधाओं को पहचान कर उन्हें दूर करने वाली क्रियाओं को संचालित करना आवश्यक है। यदि कोई स्पष्ट उच्चारण नहीं कर पाता। अपने साथियों से हिलमिल कर नहीं रहता, लड़ाई झगड़ा करता है अथवा खेलता नहीं है, शर्माता है, तो उस शिशु की रुचि, आवश्यकता या क्षमता के अनुरूप कार्यक्रम लागू करना चाहिए। आयु समूह 3-6 वर्ष के शिशुओं द्वारा की गई क्रियाओं के क्या परिणाम निकल रहे हैं? शिशु आंगनवाड़ी कार्यक्रमों में सहयोग कर रहा है। उनमें रुचि ले रहा है। यदि नहीं तो कारणों की खोज कर तदनुसार सुधार करना और यदि रुचि ले रहा है तो उसने क्या सीखा? उसके व्यवहार में क्या अंतर आया- यह देखना और जांचना बहुत जरूरी है। इस हेतु कार्यकर्ता को सदैव सजग रहना चाहिए तभी आंगनवाड़ी के उद्देश्यों की पूर्ति हो सकेगी और शिशु का शारीरिक, बौद्धिक, भाषायी व सामाजिक विकास उचित प्रकार से हो सकेगा तथा वह सृजनात्मक कार्यों की ओर उन्मुख हो सकेगा।

6 वर्ष के बच्चों को प्राथमिक शिक्षा से तभी जोड़ा जा सकता है जब एक कार्यकर्ता-5+ तक के शिशुओं में शैक्षणिक संस्कार विकसित करने में सहायता दें। यही अवस्था है जब शिशु आस-पास परिवेश में रुचि लेता है। समायोजन करता है और परिवेश के अनुभवों को अपनी भाषा में प्रकट करता है।

अतः कार्यकर्त्ताओं को सजग, बुद्धिमान, स्नेही, मित्र, परिश्रमी और सहृदय होना चाहिए। उसे अपने कामों का लगातार विश्लेषण करते रहना चाहिए और विश्लेषण के आधार पर आगामी कार्यक्रम निश्चित करना चाहिए।

परिश्रम का अनादर करने की भावना एक दुर्गुण है।

-गिजुभाई

मूल्यांकन-रजिस्टर में रिकार्ड रखना

1. केंद्र का पता
2. शिशु का नाम
3. शिशु के घर का पता
4. शिशु का पंजीयन नम्बर
5. लड़का/लड़की
6. जन्मतिथि
7. शारीरिक विकास :–

ऊंचाई			
जुलाई में	अक्टूबर में	जनवरी में	अप्रैल में

भार			
जुलाई में	अक्टूबर में	जनवरी में	अप्रैल में

8. सामाजिक और संवेगात्मक विकास

साफ-सुथरे कपड़े पहनता है?	हां/नहीं
अन्य बच्चों के साथ खेलना पसंद करता है?	हां/नहीं
बच्चों के साथ मिलजुल कर रहता है?	हां/नहीं
जरा-जरा सी बात पर रोने लगता है?	हां/नहीं
अपरिचितों को देखकर डर जाता है?	हां/नहीं
बातचीत करने से शर्माता है?	हां/नहीं
जरा-सी बात पर लड़ने लगता है?	हां/नहीं
दूसरे बच्चों की सहायता करता है?	हां/नहीं
अपनी बारी की प्रतीक्षा करता है?	हां/नहीं
अपने कार्यकर्ता को पसंद करता है?	हां/नहीं

9. भाषायी विकास–

स्पष्ट उच्चारण करता है?	हां/नहीं
पूरे वाक्य में उत्तर देता है?	
नए शब्दों का बातचीत में प्रयोग करता है?	हां/नहीं
बातचीत में भाग लेता है?	हां/नहीं
अभिवादन करता है?	हां/नहीं
गीत, कविता, कहानी सुनाता है।	हां नहीं

10. **बौद्धिक विकासः-**

चित्रों को देखकर बातचीत करता है?	हां/नहीं
आस-पास पाए जाने वाले जीव-जन्तुओं के नाम बताता है?	हां/नहीं
उन जीव-जन्तुओं के खान-पान व आदतों को बताता है?	हां/नहीं
प्रश्न करता है?	हां/नहीं
खेल क्रियाकलापों में भाग लेता है?	हां/नहीं

11. **रचनात्मक एवं सौन्दर्यानुभूति का विकास :-**

शिशु लय के साथ शरीर के अंगों का संचालन करता है?	हां/नहीं
वह अंगुलियों व हथेली के विभिन्न खेल-खेल सकता है?	हां/नहीं
बालगीत लय के साथ गा सकता है?	हां/नहीं
अभिनय में भाग लेता है?	हां/नहीं
कठपुतली के खेल-खेलता है?	हां/नहीं
चित्रकारी करने में रुचि लेता है?	हां/नहीं
वह कतार में चल सकता है?	हां/नहीं
परिवेश की वस्तुओं व दृश्यों देखना पसंद करता है?	हां/नहीं
सुन्दर वस्तुओं को देखकर प्रशंसा करता है	हां/नहीं
वह भ्रमण में रुचि रखता है?	हां/नहीं
वह काल्पनिक खेल-में रुचि लेता है?	हां/नहीं

12. **आंगनवाड़ी के प्रति रुचि :-**

शिशु आंगनवाड़ी नियमित रूप से आता है?	हां/नहीं
ठीक समय पर आता है?	हां/नहीं
आंगनवाड़ी के कार्यक्रमों में उत्साह से भाग लेता है?	हां/नहीं

दिनांक — **आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ता के हस्ताक्षर**

पर्यवेक्षिका के हस्ताक्षर — **केंद्र क्रमांक**

नोट :-मूल्यांकन निरन्तर किया जावे। शिशुओं की उपलब्धि। समस्याएं डायरी में नोट की जावें। रजिस्टर में मूल्यांकन का रिकार्ड तीन माह में एक बार जैसे जुलाई, अक्टूबर, जनवरी व अप्रैल के महीनों में भरा जावे। उपर्युक्त के अतिरिक्त भी शैक्षणिक बिन्दु जोड़े जा सकते हैं।

कुछ महत्वपूर्ण शब्दों के अर्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अनुकरण	नकल करना	इन्द्रियजन्य	इंद्रियों (नाक, कान, आंख, जीभ, त्वचा) से संबंधित
अवधान	ध्यान, किसी विषय पर ध्यान लगाना	ठप्पे	निशान
आत्मविश्लेषण	अपने कार्यों के बारे में सोचविचार	रचनात्मकता	निर्माण, बनाने की प्रक्रिया
		नियमितता	नियम के अनुसार कार्य करना
आंकलन	ग्रहण, पकड़ना, इकट्ठा करना, तोलना	प्रतिस्पर्धा	प्रतियोगिता
आगामी	आने वाला	टेस्टट्यूब	कांच की नली, जिसमें कोई तरल पदार्थ रखकर उसकी जांच की जाती है।
सहानुभूति	हमदर्दी		
सृजनशीलता	नया बनाने की कुशलता	क्रिया	कार्य करना
समायोजन	सम्मिलित करना/होना	ध्वनि	आवाज
संचालन	चलाया गया, जारी किया गया	आकृतियां	शक्लें
क्रियात्मकता	करने की क्षमता	प्रहार	मार
कल्पना शीलता	नई बात सोचने की शक्ति	प्रारंभ	शुरु
क्रियान्वयन	कार्य रुप देना	पंक्तिबद्ध	लाईन में
स्वावलम्बन	अपना कार्य स्वयं करना	काल्पनिक	सोचा हुआ
स्मरण शक्ति	याद रखने की शक्ति	गामक	मांसपेशियां
उत्तरदायित्व	जिम्मेदारी	अपेक्षा	उम्मीद
उपचार	इलाज	जिज्ञासा	उत्सुकता
निदान	कारण	अर्थ ग्रहण	अर्थ समझना
परिवेश	आस-पास के संबंध में	अवलोकन	देखना
गत्यात्मक	गतिपूर्ण	पिक्चर-कार्ड	चित्र- कार्ड
स्पर्श	छूना	अण्डाकार	अण्डे के आकार का
प्रेरित करना	उकसाना	वर्गाकार	चौकोर (जिसकी चारों भुजा बराबर हो)

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
वर्गीकरण	- बांटना, वस्तुएं आकार गुण व संख्या के अनुसार छांटना	मुद्रा	- रुपये, पैसे
धरातल	- सतह	पारस्परिक	- आपस में
त्रिभुजाकार	-त्रिकोन, तिकोना	अभ्यास	- बार-बार करना
वृत	- गोल	आयताकार	- आमने-सामने की भुजा एक सी हो
प्रदर्शन	- दिखाना		
चिरपरिचित	- पुरानी पहचान	वार्तालाप	- बातचीत
		संग्रह करना	- जमा या इकट्ठा करना
व्यवस्थित	- सही ढंग से जमाना	नवीन	- नया
एक्शन	- अभिनय	प्रस्फुटित	- खिलाना
चित्रांकन	- चित्र बनाना	लयात्मक	- लय के साथ
अभिव्यक्ति	- विचार स्पष्ट करना, बोलना	वाद्य यंत्र	- बाजे
सौन्दर्य	-सुन्दरता	अमूर्त	- जिसका कोई आकार न हो
सराहना	- प्रशंसा या तारीफ	कंटक	- कांटा
श्रोता	- सुनने वाला	अंतर्संबंध	- एक दूसरे के बीच संबंध
अवधारणा	- राय बनाना, समझ	क्षमता	- योग्यता
संपर्क साधना	- व्यक्ति विशेष से जाकर मिलना	पर्यावरण	- वातावरण
		श्रोत	- साधन

यह सम्पूर्ण जगत प्रत्येक जीवात्मा के लिए एक समान आकर्षक नहीं है।

-गिजुभाई

परिशिष्ट

बाल-गीत व कविताएं

शिशु शिक्षा से संबंधित कुछ शिक्षण सामग्री दी जा रही है। कार्यकर्ता आवश्यकतानुसार इनका उपयोग कर सकते हैं। यह केवल मार्गदर्शन-सामग्री है।

गीत :-

हाथी आया

देखो-देखो हाथी आया,
लंबी सूंड हिलाता आया,
दो-दो दांत दिखाता आया,
छोटी पूंछ हिलाता आया,
हाथी हमको भाता है,
बाग की सैर कराता है।

चूहे चाचा

टिक-टिक कर चूहे चाचा,
इक्का लेकर आए,
चाबुक नचा-नचा कर बोले,
एक सवारी लाए।
यह देखकर बिल्ली मौसी,
दौड़ी-दौड़ी आयी।
बोली कितना पैसा लोगे,
स्टेशन का ओ भाई।
चूहे चाचा ने जब देखी,
सूरत मूछों वाली,
बोले मौसी जल्दी में हूँ,
इक्का नहीं है खाली।

गुड़िया रानी

देखो देखो गुड़िया रानी।
झिलमिल तारों का लहंगा और चुनरिया धानी,
देखो-देखो गुड़िया रानी
नन्हें-नन्हें हाथ नचाती, पैरों के घुंघरु बजाती,
ठुमक-ठुमक कर चलती है, जैसे हो महरानी।
देखो-देखो गुड़िया रानी।

नन्हे मुन्ने सैनिक

पी पी पी पी, डम डम डम डम,
नन्हें मुन्ने सैनिक हम।
छोटी सी है फौज हमारी, पर उसमें है ताकत भारी।
बड़ी-बड़ी फौजें झुक जाती, जब ये अपना जोर दिखाती।
पी पी पी पी डम डम डम डम,
नन्हें मुन्ने सैनिक हम।

घोड़े की चाल

चल रे घोड़े चल चल चल।
तेज चाल से बढ़ता चल।
यदि चलेगा नहीं तू घोड़े,
तड़ तड़ चाबुक जड़ दूंगा।
यदि तू तेज चाल से दौड़ा,
चारा आगे धर दूंगा।
लम्बी-ऊंची देह लिये यह,
चलता है सरपट-सरपट।
टप टप की पदचाप सुनाकर,
बढ़ता है झट पट झट पट।

बोल मछली

नीला समन्दर, गोपी चन्दर,
बोल मेरी मछली कितना पानी?
इतना-इतना पानी (पैरों की उंगलियों को छूते हुए।)
नीला समन्दर, गोपी चन्दर।
बोल मेरी मछली कितना पानी?
इतना इतना पानी (पैरों को छूकर)।

हम इंजन हैं

आओ भाई खेल खेल,
दौड़ रही है अपनी रेल।
हम इंजन है फक-फक करते,
हम डिब्बे हैं छुक-छुक करते।
सीटी देकर चली है रैल,
कैसा बढ़िया है यह खेल।

हरा तोता

हरे रंग का है यह तोता,
जाने कब जगता कब सोता?
चोंच लाल है और नुकीली,
आंखे गोल है चमकीली।
भींगे चने चाव से खाता,
मिर्च देखकर मन ललचाता।
पहले यह टें टें करता था,
हमको देख बहुत डरता था।
रामू ने जब से सिलाया,
राम राम कहना तब आया।

लाल टमाटर

सिंहासन पर लाल टमाटर,
पंखा झलते मूली-गाजर।
दरबारी हैं, गोभी-आलू,

बैंगन शलजम, प्याज कचालू।
लौकी, भिण्डी, तोरई टिण्डे,
मटर-लोबिया, मिर्ची परवल,
पहरा देते कद्दू कटहल।

भालू का ब्याह

भालू जी की शादी है, दुल्हन शहजादी है।
छम-छम पायल करती है, राजमहल में रहती है।
कपड़ा मण्डला से मंगवाया, गिरगिट दादा से रंगवाया--
बाराती हो गए तैयार, शेर- भेडिया और सियार।
हिरण सींग में टांगे फूल, घोड़ा गया चौकड़ी भूल। भालू जी---
बैंड बजाते घोड़ा मामा, गीत सुनाती कोयल श्याम।
भालू का ब्याह रचाएंगे, दुल्हन को लेकर आएंगे। भालू जी --

चुन्नू मुन्नू

चुनु मुनु गये बाजार,
लडु लाए है दो चार।
लाते लाते हो गए पट्ट,
बिल्ली कर गई लड्डू चट।

दीदी का बताशा

मेरी दीदी आशा, लाई एक बताशा।
जभी बताशा फोड़ा, उसमें से निकला घोड़ा।
घोड़ा सरपट भागा, मैं भी झटपट जागा।
घोड़े को जा पकड़ा, दोनो हाथों से जकड़ा।
ऊपर कूद लगाई, पी पी बीन बजाई।

गुब्बारे

मैं गुब्बारे लेकर आया,
लो मेरे गुब्बारे।
लाल, बैंगनी, नीले पीले,
हरे, गुलाबी प्यारे।
लो मेरे गुब्बारे लो मेरे गुब्बारे।

कद्दू और दद्दू

एक बाग में था कद्दू, कद्दू पर बैठा था दद्दू।
दद्दू खाता था, लड्डू, कद्दू दद्दू लड्डू।
एक बाग में थी लकड़ी, लकड़ी पर बैठी थी मकड़ी।
मकड़ी खाती थी ककड़ी, मकड़ी लकड़ी ककड़ी।
एक बाग में पड़ी थी बालू बालू पर बैठा था भालू।
भालू खाता था आलू, बालू आलू भालू।

बैलों की गाड़ी

यह बैलों की गाड़ी देखो पहिए सबसे भारी।
भैया हांक रहा है, टिक-टिक जीजी करे सवारी।
इसमें भूसा-चारा लादे, गेहूं भर भर लाए।
भैया कूदे जीजी नाचे, दोनों उधम मचाए।
यह बैलों की सदा सहेली, है किसान को प्यारी।
गांव-गांव में घूम रही है, यह बैलों की गाड़ी

पक्षियों की बोलियां

नानी-नानी कौन बुलाता? मंडप पर कौआ मंडराता।
काला कौआ कां-कां करता, जूठी गंदी चीजें खाता।
नानी-नानी कौन बुलाती? आंगन में गौरेया आती।
गोरी चिड़िया चूं चूं करती, फुर्र-फुर्र कर दाना चुगती।
नाना-नानी कौन बुलाता? बाड़े में मुर्गा चिल्लाता।
कुकडूं-कूं ककी टेर लगाता, रोज सबेरे हमें जगाता।
नानी-नानी कौन बुलाता? अमराई में कोयल गाती।
कोयल कुहूं-कुहूं करती, इसकी बोली मीठी लगती।
नानी-नानी कौन बुलाता? जंगल झाड़ी मोर नचाता।
केयों-केयों कह हमें बुलाता, पंख फैलाकर नाच दिखाता।
खबरों का अम्बार डाकिया लाता चिट्ठी-तार डाकिया।
करता नहीं कभी-कभी नागा, पाता सबका प्यार डाकिया।
कड़ी धूप हो चाहे वर्षा, नहीं मानता हार डाकिया।
दूर-दूर की कुशल क्षेम को लाता है, हर बार डाकिया।

भौरां

भौंर बोला गुन गुन गुन?
कैसी लगती मेरी धुन-धुन?
बोली चिड़िया, सुन सुन सुन?
तू भी मेरा गाना सुन।
भौंरा बोला अरी बहन!
भली नहीं अपनी अनबन,
मेरी धुन पर गाना गा,
मीठे-मीठे गीत सुना।

थीम्स तथा उन पर आधारित कुछ खेल क्रियाएँ

थीम्स (विषय) :-

1. आवागमन के साधन।
2. रंग
3. पानी
4. हवा
5. त्यौहार
6. हमारा शरीर
7. कामगार
8. जीवजन्तु
9. हमारा परिवेश
10. समय
11. पेड़-पौधे
12. धातु
13. हमारा भोजन

1. आवागमन के साधन-

विषय-वस्तु :-

1. साधनों के नाम,
2. जमीन पर, पानी तथा हवा में उड़ने वाले साधन
3. ईधन-पेट्रोल, डीजल, कोयला, बिजली, मनुष्य एवं जानवरों के बल से चलने वाले वाहन
4. वाहनों का वर्गीकरण :- गति व क्षमता
5. वाहन बनाने के काम आने वाली सामग्री
6. साधनों के आकार
7. मौसम साफ हो, तूफान न हो तब हवा तथा पानी का जहाज चलाना संभव होता है की जानकारी।
8. रास्ते चलने के नियम (सड़क के दोनों ओर बनी पटरी)
9. घोड़ा तथा तांगे की सवारी,

आवागमन के साधन पर क्रियाकलाप :-

1. सभी साधनों के चित्र,
2. चित्रों की पहचान,
3. जोड़ी बनाना,
4. क्रमवार जमाना,
5. देखकर चित्र बनाना,
6. चित्र खोजना, काटकर अथवा फाड़कर निकालना एवं चिपकाना,
7. डामिनोज के खेल,
8. फलालेन बोर्ड का उपयोग
9. कहानी, कविता, अभिनय गीत तथा अभिनय,
10. आवागमन के साधन- कागज, गत्ता, बांस, सरकाण्डा खाली डिब्बा आदि की सहायता से बनाना।
11. चित्र देखकर वर्गीरण करना
12. विभिन्न चित्रों के माध्यम से बूझों तो जाने खेल
13. जमीन पर चलने वाले आवागमन के साधनों की विस्तृत जानकारी देने के लिए चित्र व मॉडल दिखाकर अवधारणाएं स्पष्ट करना।

14. चित्र कथा बनाना
15. आकृति खेल
16. विभिन्न आकारों को जोड़ना तद्नुसार मॉडल बनाना।
17. बस स्टेण्ड दिखाना।
18. रेलगाड़ी का खेल
19. बस, घोड़ा, हवाई-जहाज की आवाज व चाल की नकल करना।
20. बस का टिकट बेचने, बिठाने व टिकट चेकर आदि का अभिनय।
21. रेल यात्रा, बस यात्रा में बैठने से लेकर उतरने तक का खेल।
22. एलबम तैयार करना
23. बिन्दु मिलाकर चित्र पूरा करना।
24. चित्र में रंग भरवाना
25. रेखांकित चित्रों पर रंगीन पेंसिल फेरना
26. रंगीन कागज काटकर चिपकाना
27. वाहनों पर बातचीत करना।

2. रंग-

विषय वस्तु-

1. मुख्य रंगों की पहचान
2. प्रकृति में कहां कहां रंग देखने को मिलता है। इन्द्रधनुष, पेड़ पौधे, फल, फूल, सब्जी, पक्षी, व अन्य वस्तुएँ।
3. रंगों का संकेत की तरह उपयोग, तिरंगा झण्डा के रंगों की पहचान।
4. आकाश का रंग, पानी का रंग, बर्फ का रंग
5. रंगों का त्यौहार-होली।

रंग पर क्रियाकलाप-

1. नीला, लाल, हरा, पीला तथा काला रंग के कागज से डिब्बे बनाना विभिन्न प्रकार के फल, फूल, सब्जी के चित्रों को उनके रंग के आधार पर अलग-अलग डिब्बे में डालने का खेल।
2. विभिन्न रंगों के डिब्बे जोड़ कर रेलगाड़ी बनाना।
3. विभिन्न रंगों में लिखे अंकों का चौखाना बनाना।
4. फिरकी जिसमें हर पत्ती अलग रंग की हो
5. रंगों का डामिनोज।
6. एक कागज पर चौकोर खाने बनाना, उन पर विभिन्न रंगों की चीजें रखना।
7. रंग पुस्तक तैयार करना, उसके प्रत्येक पृष्ठ पर एक ही रंग हो जिस पर उसी रंग की कविता तथा फूल फल सब्जी आदि के आकार हों।
8. रंग पर नाटक जिसमें हर पात्र एक रंग हो जो अपना महत्व बताएं।
9. मिट्टी की गोलियाँ विभिन्न रंगों से रंगना।
10. अलग-अलग रंग के पत्थर एकत्रित करना, आकार के अनुसार उन्हें क्रम से रखना। बड़े पत्थरों पर विभिन्न रंगों के कपड़े काट कर नाक, मुँह व आँख बनाना।
11. पानी तथा रंग का खेल।
12. विभिन्न रंगों की आकृतियों को जोड़कर नमूने बनाना।
13. प्रकृति निरीक्षण के द्वारा रंगों की पहचान।
14. रंगों पर पहेली।

15. एलबम तैयार करना।
16. विभिन्न रंगों के मोतियों की माला बनाना।
17. रंग बिरंगी पतंग, गुड़िया व रंग-बिरंगी लूडो का खेल।
18. पत्ती, बीज तथा फूलों के द्वारा रंग बनाना।
19. चित्रों में रंग भरवाना।
20. विभिन्न आकारों पर रंगीन कागज काटकर चिपकाना।
21. रेखांकित चित्रों पर रंगीन पेन्सिल फेरना।
22. रंग पर वार्तालाप

3. पानी

विषय वस्तु-

1. पानी के स्त्रोत,
2. पानी का उपयोग,
3. स्वाद के अनुसार पानी का वर्गीकरण।
4. पानी के रूप-बादल, कोहरा, वाष्प, ओस, बर्फ, पानी। ठंडा होने पर पानी बर्फ हो जाता है।
5. पृथ्वी का तीन हिस्सा पानी है। जमीन के आस-पास पानी है,
6. पानी की सिंचाई के द्वारा ही फल, फूल, सब्जी, खेती, होती है।
7. पानी की स्वच्छता।

   - बहता हुआ पानी साफ रहता है। पानी ढक कर रखना चाहिए। छान कर पीना चाहिए, जहाँ कपड़े धोये जाते हैं आदमी व जानवर नहाते हैं वहाँ का पानी नहीं पीना चाहिए, पानी व्यर्थ नहीं करना चाहिए, पानी जीवन है, इसलिये नल आदि को बंद रखना चाहिए। पानी से बिजली तैयार की जाती है।
8. पानी में विभिन्न चीजों की घुलनशीलता/अघुलनशीलता।
9. पानी के बहाव से तल का ढाल बताना।

पानी पर क्रियाकलाप-

1. निरीक्षण द्वारा नाली का पानी, कुंआ का पानी, तालाब का पानी, वर्षा का पानी।
2. चित्रों के माध्यम से पानी के विभिन्न स्त्रोतों की पहचान।
3. साफ तथा गन्दे पानी के स्त्रोतों की पहचान व अन्तर।
4. नमक तथा शक्कर पानी में घोलकर खारे व मीठे पानी की समझाइश देना।
5. पानी का उपयोग चित्रों के माध्यम से- नहाना, कपड़े धोना, सिंचाई, बिजली पैदा करना, रेलगाड़ी चलाने के लिए (वाष्प द्वारा) सफाई तथा शीतल करने के लिए, बर्फ जमाने के लिए भोजन पकाने में व, पीने के लिए।
6. पानी का जीवन में महत्व।
7. जीवन रक्षक घोल बनाना तथा उसका महत्व।
8. पानी के विभिन्न रूपों को निरीक्षण द्वारा समझाना।
9. पानी द्वारा आयतन के माप की पूर्व अवधारणा देना, नापना, बर्तनों से नापकर बताना।
10. पानी का स्वयं का रंग नहीं होता जो रंग मिलाया जावे वही रंग हो जाता है। -
11. पानी रखने के बर्तनों व चित्र से पहचान, क्रमं व वर्गीकरण।
12. मिट्टी, गत्ता या बाक्स पेपर से पानी के बर्तनं बनाना।
13. पानी में तैरने और डूबने वाली वस्तुओं का खेल तथा उनका वर्गीकरण।
14. एलबम तैयार करना।

15. कुआँ, नदी, तालाब की कहानी बनाना।
16. भाप की कहानी।
17. पानी में कंकड़ फेंक कर तरंग बताना।
18. पानी पर बातचीत करना।

4. हवा

विषय वस्तु :-

1. हवा का आभास, देखी नहीं जा सकती। वह स्पर्श द्वारा अनुभव की जा सकती है।
2. हवा के प्रकार- शुद्ध हवा, खुले स्थान में तथा प्रातःकालीन हवा शुद्ध होती है। प्रदूषित हवा भिन्न कारणों से अशुद्ध हो जाती है, स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है।
3. जीवित रहने के लिए हवा बहुत आवश्यक है। जल के जीव भी हवा लेते हैं।
4. हवा का उपयोग- आवागमन में पाल बांधना, हवाई जहाज व पतंग उड़ाना, पक्षियों का उड़ना, हवा में कपड़े सुखाना, आग जलने के लिए हवा आवश्यक, गरमी के मौसम में हवा की आवश्यकता।
5. हवा, आंधी, अंधड़। अंधड़ व तूफान में अन्तर पहचानना।
6. तेज हवा/आंधी में घर के बाहर नहीं निकलना चाहिए।
7. जीव शुद्ध हवा लेता है और गन्दी हवा बाहर फेंकता है।

हवा पर क्रियाकलाप-

1. हवा न देख सकने, केवल स्पर्श से जानने के प्रयोग।
2. निरीक्षण द्वारा हवा की उपस्थिति देखना।
3. हवा की सहायता से भिन्न चीजों का चलना जैसे, फिरकनी, पतंग, नाव, कागज का जहाज आदि बनाना।
4. निरीक्षण करना।
5. गेंद, फुग्गा, के खेल।
6. पाल बांधकर नाव चलाना।
7. विभिन्न प्रकार के पंखे बनाना।
8. कागज का फड़फड़ाना, कपड़े का फड़फड़ाना देखना।
9. हवा के द्वारा कपड़े सुखाना।
10. कागज के छोटे टुकड़े हवा में उड़ाना।
11. हवा पर वार्तालाप

5. त्यौहार

विषय-वस्तु -

1. जन्म दिन, मेला, सरकस, शादी, ब्याह, पर्व,
2. त्यौहारों की चर्चा एवं महत्व,
3. राष्ट्रीय त्यौहार, क्षेत्रीय त्यौहार,
4. समुदाय के त्यौहार,
5. पारिवारिक समारोह- जन्मदिन, शादी, विवाह,
6. पिकनिक, भ्रमण,
7. हाट-बाजार,
8. बन्दर, भालू के खेल,

त्यौहार पर क्रियाकलाप :-

1. विभिन्न चार्ट, चित्र, 15 अगस्त, 26 जनवरी मनाने संबंधी चित्र एकत्रित करना, उन्हें क्रमवार फलाफेन बोर्ड पर प्रदर्शित करना।
2. केन्द्र में त्यौहार मनाना।
3. रोल-प्ले करना।
4. कविता, गीत, सचित्र कहानी,
5. कक्षा में जन्मदिन मनाना, ग्रीट्गि कार्ड तैयार कराना, जिस शिशु का जन्मदिन मनाया जाना है, उसे, फूल व खिलौने का उपहार देना।
6. हाट-बाजार की सैर, दुकान दिखाना, खरीदना, बेचना, पैसे गिनकर लेना/देना।
7. जन्म दिन पर बन्दर-भालू का खेल, सांप नेवला का खेल खेलना।
8. झूला, बाइस्कोप।
9. त्यौहारों से संबंधित वस्तुएं बनाना।
10. दिए, खिलौने, राखी, झंडियाँ बनाना।
11. फूलों तथा पत्ती की माला बनाना।
12. पत्तों के तौरन बनाना।
13. बन्दर व भालू के मुखौटे बनाना।
14. कठपुतली बनवाना।

6. हमारा शरीर

विषय-वस्तु -

1. अंग, उनकी पहचान,
2. महत्व एवं सफाई,
3. शरीर के लिए आहार, श्रम, विश्राम, निद्रा, प्रतिदिन नहाना, स्वच्छ वस्त्र आदि की आवश्यकता।
4. स्वच्छता।
5. मनुष्य एवं पशुओं की आदतों में अन्तर।
6. भिन्न-भिन्न रोग, कारण एवं निदान।
7. डॉक्टरों की सलाह से भोजन एवं दवा बीमार होने पर लेना।
8. शरीर पर मौसम का प्रभाव।
9. शरीर को स्वस्थ रखने वाले बिन्दु :-नियमितता, खेल, भ्रमण, पौष्टिक आहार।
10. सूती कपड़े पहनने से लाभ तथा नायलोन या टैरेलीन कपड़े पहनने से हानि।

हमारा शरीर पर क्रियाकलाप :-

1. कहानी द्वारा शरीर के अंगों का महत्व बताना।
2. अंगों के मॉडल/चित्र दिखाना।
3. अंगों को जोड़कर पूर्ण शरीर बनाना।
4. पहेली/गीत जिनसे अंगों के कार्य बताए गए हो।
5. शरीर के चित्र में रंग भरना अथवा पेन्सिल फेरना।
6. रोल-प्ले (समूह) खेल।
7. वार्तालाप।
8. चित्र देखना।
9. चित्र में रंग भरना।
10. कठपुतली के खेल द्वारा सुनने, देखने, बोलने और करने के महत्व का खेल।

11. चित्र कथा द्वारा सूती कपड़े पहनने से लाभ, नायलोन/टेरीन पहिनने से हानि बताना।
12. चित्रों की ढेरी में से सन्तुलित आहार के चित्र छाँटकर अलग करना।
13. भिन्न भिन्न प्रकार के अन्न इकट्ठे करना।
14. किस खाद्य पदार्थ से क्या मिलता है- विटामिन, प्रोटिन आदि।
15. सफाई पर तथा स्वास्थ्यवर्धक खाद्य पदार्थ पर साँप सीढ़ी।
16. बैठने लेटने व, खड़े होने का सही पोस्चर (मुद्रा)।
17. विभिन्न प्रकार की चीजों का ज्ञानेन्द्रियों के साथ संबंध की जोड़ी बनाना।

7- कामगार

विषय-वस्तु -

1. किसान, कुम्हार, मोंची, धोबी, लुहार, राजगीर, दर्जी, बढ़ई, डॉक्टर, नर्स, दाई, डाकिया, शिक्षक, बनिया, सुनार, हलवाई, फेरीवाला, नाई।
2. स्कूल, अस्पताल, डाकघर, पंचायत, बस स्टैण्ड, रेल्वे स्टेशन, पुलिस थाना, चौकी बाजार/हाट।

कामगार पर क्रियाकलाप -

1. रोल-प्ले करवाना-
   - दुकानदार, ग्राहक,
   - डाकिया,
   - कार्यकर्ता/ शिक्षक
2. भ्रमण/सैर द्वारा उपरोक्त का अवलोकन करवाना।
3. पोस्टकार्ड अन्तदिशीय, लिफाफा की पहचान.
4. विभिन्न प्रकार के मिट्टी के बर्तन-नहाने के उपयोग में आने वाले, पानी भरने के, रसोई व हलवाई के लिए आदि।
5. चारपाई, कुर्सी, टेबल आदि सरकण्डों के बनवाना।
6. दर्जी द्वारा बनाई जाने वाली पोशाकें तथा सिलाई मशीन, सुई, धागे, कैंची, इंची-टेप, बटन, आदि का अवलोकन व चित्र इकट्ठे करना।
7. चूड़ियों के खेल।
8. प्रदर्शनी-बनी हुई वस्तुओं की।
9. कहानी, गीत, कविता, वार्तालाप।
10. भाषा संबंधी एवं गणित संबंधी ज्ञान देने हेतु क्रियाएँ।
11. कामगार एवं उनके उपयोग में आने वाली वस्तुओं के समूह बनवाना वर्गीकरण करना व क्रमवार जमाना।

8. जीव-जन्तु

विषय-वस्तु -

1. पशु, पालतू व जंगली,
2. पालतु पशु गाय, बैल, घोड़ा, गधा, कुत्ता, बिल्ली, बकरी, सुअर, ऊट, बन्दर, चूहा।
3. जंगली- शेर, लोमड़ी, भेड़िया, हाथी, भालू, हिरण, खरगोश, जिराफ, जेब्रा, गेंडा, कंगारू, वनमानुस आदि।
4. पक्षी घर के आसपास रहने वाले व जंगल में रहने वाले।
5. घर के आसपास- कबूतर, कोयल, मैना, तोता, मुर्गी, कौआ, गौरेया।
6. जंगल में रहने वाले - मोर, नीलकण्ठ, कठफोड़वा, तीतर, बगुला, बाज, हंस, चमगादड।

7. कीड़े-मकोड़े।
8. लाभ पहुचाने वाले (मददगार) व हानि पहुंचाने वाले कीडे- मकोड़े
9. मधुमक्खी तथा चीटी की दिनचर्या।

जीव-जन्तु पर क्रियाकलाप :-

1. पशुओं के चित्र एकत्रित करना एवं समूहों बनाना।
2. पहचानना- पजल का खेल।
3. आकृति के खेल।
4. पक्षियों के चित्र एकत्रित करना एवं समूहों बनाना।
5. चित्रों की आकृतियों में धागा पिरोना।
6. रेखांकित चित्रों पर रंगीन पेंसिल फेरना।
7. चलने वाले खिलौने बनाना-मिट्टी व पुष्टे के।
8. सचित्र पुस्तक तैयार करना।
9. कपड़े/कागज के खिलौने, रस्सी के खिलौने बनाना।
10. जानवर/जीवजन्तु से संबंधित कहानी कहना।
11. रोल-प्ले करना।
12. गीत, कविता, वार्तालाप।
13. डोमिनोज का खेल (चित्र- चित्र और चित्र- शब्द)
14. पक्षियों के पंख एकत्रित करना।
15. पक्षियों/जानवरों के भोजन के नाम जानना।
16. तितली बनाना।
17. पशु-पक्षियों के घर बनाना/घर के चित्र एकत्रित करना।
18. आवाज की नकल करना।
19. जीव-जन्तु जो अण्डे देते हैं, जो बच्चे देते हैं, उनके चित्र एकत्रित करना उनके समूह बनाना, डोमीनोज के खेल।

9. हमारा परिवेश.

विषय-वस्तु -

1. घर, परिवार, गाँव, नाते-रिश्ते,
2. नदी, तालाब, सड़क, पगडण्डी,
3. पालतु पशु-पक्षी,
4. पेड़-पौधे, बगीचा, खेत,
5. सवारी वाले पशु
6. खेल का मैदान, खलिहान,
7. पहाड़,
8. सूर्य, चांद, सितारे,
9. दिशाएँ,
10. बिजली, पानी, प्रकाश, आग (उपयोग),
11. विद्यालय, आंगनवाड़ी केन्द्र पंचायत,

हमारा परिवेश पर क्रियाकलाप -

1. गुड़िया घर बनवाना,

2. परिवेश पर मॉडल बनवाना,
3. सूर्य, चांद, तारों का चित्र,
4. रूई तथा कागज के पहाड़/बादल,
5. कहानी, कविता, नाटक,
6. मुखौटे (सूर्य, चांद, तारे)
7. वार्तालाप, पहेलियाँ,
8. सूर्य की सहायता से दिशाओं का ज्ञान देना खेल व गीत।
9. रेत के खेल।
10. गाँव तथा शहर में अंतर चित्र के द्वारा (मकान की बनावट) आवागमन के साधन, सड़क, खेल/बगीचे आदि बताना।
11. आकृतियों के खेल (मकान, पक्षी, पशु, पेंड़-पौधे, आदि)

10. समय

विषय-वस्तु -

1. घड़ी देखना, दिन, रात, चार– पहर (सूर्य की स्थिति से)
2. दिन में 24 घन्टे,
3. सप्ताह, माह, वर्ष,
4. मौसम (उनकी पहचान)
5. ऋतुओं का ज्ञान,
6. सुबह उठने, रात को सोने, आंगनवाडी जाने, भोजन करने, नहाने व खेलने का समय।
7. दैनिक चर्चा,
8. भोर (प्रातः) तथा संध्या समय की पहचान,
9. दिन, रात की पहचान,
10. चाँद और सूरज में अंतर

समय पर क्रियाकलाप -

1. घड़ी बनवाना (घंटे, मिनट, सेकेण्ड) छोटी-बड़ी सुई आदि।
2. दिन -रात का खेल, कागज का खिलौना
3. दिनचर्या से संबंधित चित्र बनवाना तथा क्रमवार जमाना,
4. जोड़ी मिलाने का खेल,
5. निरीक्षण के द्वारा सूर्य की स्थिति,
6. गीत, कविता, कहानी, वार्तालाप, कहावते, अभिनय।
7. कक्षा के बच्चों के जन्मदिन तथा जन्म माह पर 12 महीनों की जानकारी देना। रेलगाड़ी बनाना जिससे क्रम का भी ज्ञान हो सके।
8. जमीन पर माह के खाने बनाकर उस माह में जन्में बच्चों को खड़ा करना।
9. मौसम के आधार पर फल/सब्जी/फूल एकत्रित करवाना।
10. मौसम के अनुसार चिड़ियों को देखना/उनकी बोली बोलना।
11. मौसमों के खाने बनाकर संबंधित मौसम में जन्में बच्चों को खड़ा करना।
12. मौसम के अनुसार कपड़ों के नाम।
13. कहानी के माध्यम से बताना कि बरसात में कौन से जीव पहिले ही खाना एकत्रित कर लेते हैं,

11. पेड़ पौधे

विषय-वस्तु :-

1. पेड़, पौधे, झाड़ी तथा बेल/लतर की पहचान एवं अन्तर।
2. पेड़ के अंग एवं उनके मुख्य कार्य।
3. पत्तियों से पेड़ की पहचान।
4. फलों से पेड़ की पहचान।
5. फूलों से पेड़ की पहचान।
6. पेड़ों की उपयोगिता (नीम, पीपल, बबूल, महुआ, हर्रा, बहेड़ा, सागौन आदि) केला, पपीता, आम, जामुन, अमरूद, बांस आदि।
7. बेलों की उपयोगिता (अंगूर पान, गिलकी, लौकी, तुरई, टिंडा, करेला, कद्दू आदि।)
8. फूल-गेंदा, गुलाब, मोगरा, सदा सुहागन, तुलसी।
9. सब्जी- बैंगन, टमाटर, भिण्डी, मिर्च, गोभी (फूल, पत्ता गाँठ) पालक, मेंथी, चौलाई।
10. जड़ वाली सब्जी- आलू, गाजर, अदरक, प्याज, शकरकन्द, मूंगफली, अरबी, शलजम, चुकन्दर, आदि।
11. कुछ सब्जियों के गुण।
12. तिलहन एवं अनाज।
13. मौसम के अनुसार आने वाले फल फूल सब्जी एवं फसल की सामान्य जानकारी।
14. बॉस तथा सफेदा का उपयोग (कागज बनाने के काम में भी होता है)

पेड़-पौधे पर क्रियाकलाप :-

1. पेड़-पौधो के चित्र एकत्रित करवाना। रचनात्मक
2. कहानी, कविता, गीत, वार्तालाप। भाषा
3. बीज अंकुरण करके दिखाना। बौद्धिक
4. बीजों का संग्रह/पत्तियों का संग्रह/फूलों का संग्रह करना। रचनात्मक
5. नारियल के जूट के खेल/अखरोट का कछुआ। रचनात्मक
6. बीजों के चित्र बनवाना। रचनात्मक
7. खास आकार की लकड़ियों का संग्रह करना। "
8. लकड़ी का उपयोग/बनने वाली चीजें। बौद्धिक
9. माचिस के डिब्बियों का खेल बनाना/तीलियों का खेल बनाना। रचनात्मक

12. हमारा भोजन

विषय वस्तु :-

1. दाल, चावल, रोटी, सब्जी, घी, दही, छाछ,
2. पौष्टिक आहार,
3. संतुलित आहार (क्या क्या सम्मिलित करने से संतुलित आहार बनता है जैसे प्रोटीन के लिए दाल/दूध, दही/अंडा-मांस खाना आवश्यक है आदि।
4. स्थानीय उपलब्ध खाद्य सामग्री से बना भोजन।
5. फल, अचार, चटनी, पापड़।
6. भोजन खाने का तरीका, भोजन का समय, भोजन के समय बैठने की मुद्रा।

हमारा भोजन पर क्रियाकलाप-

1. भोजन तैयार करने की विधियो के चित्रों को क्रम में जमाना।
2. विटामिन/प्रोटीन आदि का रोल प्ले करवाना।
3. फलों का रोल (प्ले, जिसमें बच्चे उपयोगिता महत्व बताएँ।
4. कविता/गीत, वार्तालाप,
5. कार्डस जिनमें गन्दा भोजन, बीमार बच्चा, साफ/संतुलित भोजन स्वस्थ बच्चा आदि।
6. दलहन, तिलहन, अनाज आदि का वर्गीकरण करना।
7. विटामिन/प्रोटीन आदि के अनुसार सब्जियों का वर्गीकरण।
8. भोजन संबंधी आदतों पर साँप-सीढ़ी का खेल।
9. बाँस, कागज की कठपतुली द्वारा भोजन पर आधारित कहानी पर खेल।
10. रोल-प्ले।
11. पहेलियाँ (ईचक दाना, वीचक दाना.........
    कटोरे पर कटोरा.......

13. धातु :-

विषय वस्तु :-

1. मुख्य-मुख्य धातुओं के नाम, पहचान एवं उपयोगिता।
2. अलमारी, तवा, कड़ाई, चिमटी, वाहन, मेज, कुर्सी, रेल की पटरी, पहिए, खेत खलिहान में काम में आने वाले औजार, चाकू हसिया, कुल्हाड़ी, गेंती, फावड़ा, बैलगाड़ी के पहिए, हल, जानवर को बाँधने के खूँटे, कीलें आदि।
3. लोहे की चीजें बनाने का व्यवसाय करने वाला (लोहार)
4. सोने, चांदी के जेवर बनाने वाला (सुनार) मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर आदि में सोने या पीतल लगा रहता है।
5. चांदी के गहने, बर्तन, धार्मिक स्थानों में चांदी का उपयोग, सिक्के।
6. तांबे के बर्तन, सिक्कों में उपयोग, बिजली के तार।
7. पीतल के खिलौने, फर्नीचर, दरवाजे, कुन्दे आदि में पीतल का उपयोग।
8. एल्युमिनियम के सिक्के, बर्तन बिजली के तार, पाइप आदि।

धातु पर क्रियाकलाप :-

1. धातुओं की पहचान।
2. विभिन्न धातुओं से बनी चीजों के कार्डस।
3. भ्रमण द्वारा सुनार/ लोहार/ कसेरा के यहां शिशुओं को ले जाकर विभिन्न वस्तुओं से परिचित करवाना।
4. धातु पर कविता/गीत/ (जेवर और ब्याह से संबंधित)
5. विभिन्न धातुओं से बनी चीजों के चित्र एकत्रित करना।
6. आकृति के खेल।
7. धातु पर वार्तालाप।
8. ध्वनियों की आवाजें (घन्टी, घुंघरू, थाली, खाली बर्तन, भरा बर्तन, पहचानना)।

शिशुओं के लिए विकासात्मक-क्रियाकलाप

शारीरिक विकास	बौद्धिक विकास	भाषाई विकास	सामाजिक व संवेगात्मक विकास	सृजनात्मकता व सौन्दर्यानुभूति विकास
1	2	3	4	5
चलना	पहचानना	मुक्त बातचीत	सहयोग	
दौड़ना	नाम बताना	चित्र विश्लेषण	भाईचारा	
				पहनना
उछलना	याद रखना	कहानी कहना	मदद करना	खिलौने बनाना
कूदना	मिलान करना	कहानी बनाना	कहना सुनना	रंगों का मिलान करना
छलांग मारना	अन्तर बताना समूह बनाना	बाल कविता	समय पर केन्द्र आना	चित्र बनाना
झूलना	वर्गीकरण करना क्रमबद्ध रखना	गीत, पहेलियाँ		मिट्टी से आकृति बनाना
फेंकना	प्रयोग करना क्रम बद्ध सोच	गुड़िया खेल	मिलजुलकर खेलना	रंगों के खेल
पकड़ना	पूर्व संख्या व	अभिनय करना	अपनी बारी की प्रतीक्षा करना	पानी के बुलबुले बनाना
गतिशील खेल	रंग अवधारणा			
पानी का खेल	आकार व आकृति की अवधारणा			
दूरी वाले खेल				
पोजीशन खेल				
काटना				
चिपकाना				
पिरोना				
फाड़ना				

शिशु शिक्षा प्रकोष्ठ

पुनरीक्षण समिति

श्रीमती मालती, स्वामी व्याख्याता
पूर्व प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्था, जबलपुर

डॉ. (श्रीमती) जयश्री तिवारी, फील्ड आफिसर,
म.प्र. बाल कल्याण परिषद् भोपाल

श्रीमती आशा सक्सेना, बाल विकास परियोजना अधिकारी,

श्री आर. जी. जोशी
(सेवा निवृत) बी ई ओ जानकीनगर, इन्दौर

श्रीमती नजमा खान, पर्यवेक्षिका
जे. पी. नगर परियोजना, आई. सी. डी. एस. ग्रीन पार्क भोपाल

श्री बी. आर. सूर्यवंशी, अन्वेषक,
मध्यप्रदेश राज्य शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, भोपाल

❑❑❑

साभार सहयोग

सुश्री जे. सी. बोस

डॉ. (श्रीमती) पुष्पा यादव

श्री प्रमोद उपाध्याय

श्रीमती नंदिता मित्रा
विशेषज्ञ-ई सी ई/सी. एम. एल., एन. सी. ई. आर. टी. नई दिल्ली

❑❑❑

शिशु शिक्षा प्रकोष्ठ के रचना पुष्प

- **शिक्षक संदर्शिका**
  (ईसीई शिक्षिकाओं के लिए)

- **आओ गीत गाएँ**

- **क्रियाकलाप फोल्डर-**
  (1) आओ-कहानी सुनाएं
  (2) आओ-हवा के खेल खेलें
  (3) आओ-पानी के खेल खेलें
  (4) रंग की पहचान
  (5) मिल-जुलकर आकृतियाँ जोड़ें
  (6) आओ खेलें-खेल
  (7) अन्दर-खेलें, बाहर खेलें
  (8) आओ चले सैर को
  (9) डाकिया-डाक लाया
  (10) पेड़ हमारे-कितने प्यारे
  (11) गिनकर देखें-चीजें कितनी (भाग एक)
  (12) गिनकर देखें-चीजें कितनी (भाग दो)

- **सचित्र बाल कथा पुस्तकें-05**
  (3-8 आयु समूह शिशुओं के लिए)

- **आइए आंगनवाड़ी संवारें**
  (आंगनवाड़ी पर्यवेक्षकों के लिए)

- ***मध्यप्रदेश में शिशु शिक्षा-ज्ञान यज्ञ का एक उपक्रम***

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के शैक्षिक मार्गदर्शन और यूनिसेफ भोपाल की वित्तीय सहायता से राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, भोपाल के लिए राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, 15-सी, सेक्टर-जी, पिपलानी, भोपाल द्वारा मुद्रित।